# चौधरी चरण सिंह

# स्मृति

# और

# मूल्यांकन

संपादक

ज्ञानेन्द्र रावत

# चौधरी चरण सिंह : स्मृति और मूल्यांकन

संपादक

ज्ञानेन्द्र रावत

किसान ट्रस्ट

प्रथम संस्करण : मार्च, 1995

© किसान ट्रस्ट

मूल्य : 40.00 रुपये

प्रकाशक : ए. वी. सेतुमाधवन्
किसान ट्रस्ट, एम-I, मैग्नम हाउस-II
कम्युनिटी सेन्टर, कर्मपुरा, नई दिल्ली-110015

मुद्रक : पवन प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

प्रथम संस्करण : मार्च, 1995

© किसान ट्रस्ट

मूल्य : 40.00 रुपये

प्रकाशक : ए. वी. सेतुमाधवन्
किसान ट्रस्ट, एम-I, मैग्नम हाउस-II
कम्युनिटी सेन्टर, कर्मपुरा, नई दिल्ली-110015

मुद्रक : पवन प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

# प्रकाशक की ओर से

जब कोई देश संकट के दौर से गुजरता है, तब उस देश के महान व्यक्तियों के जीवनवृत्त, उनका दिखाया रास्ता, उस देश के लोगों को संकट से जूझने की प्रेरणा देता है तथा अंधेरे से निकलने का रास्ता सुझाता है। महान व्यक्तियों की महानता इसी में निहित होती है कि उनका दिखाया रास्ता, उनकी नीतियां और सिद्धान्त उनके देश का-समाज का, हर दौर में पथ-प्रदर्शन करते रहें। वर्तमान में भटके हुए इस मुल्क को राह दिखाने हेतु जिस प्रकाशस्तम्भ की जरूरत है, उसका नाम है चौधरी चरण सिंह।

उन्होंने आजीवन देश के दलितों-पिछड़ों, गरीबों और किसानों के उत्थान के लिए संघर्ष किया, उन्हें राजनीति में हिस्सेदारी का एहसास दिलाया। वह सच्चाई, सादगी, नैतिकता के प्रति अटूट पक्षधरता, सिद्धान्तवादिता, निर्भीकता और मूल्यों की स्थापना के लिए आजीवन प्रतिबद्ध रहे। उन्होंने अपने जीवन में जिन सिद्धान्तों और मूल्यों का निर्माण किया, वह आज भी हमारा पथ-प्रदर्शन कर रहे हैं और करते रहेंगे। असलियत में उनकी नीतियों, सिद्धान्तों पर चलकर ही यह देश मौजूदा समस्याओं से छुटकारा पा सकता है। हमारा प्रयास है कि भारतीय राजनीति के ऐसे महापुरुष के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं की लोगों को जानकारी मिले। इसी उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए किसान-ट्रस्ट इस पुस्तक का प्रकाशन कर रहा है।

—ए॰ वी॰ सेतुमाधवन

# प्रस्तावना

गांव की गोधूलि से अपने जीवन पथ की लम्बी यात्रा कर देश के राजनीतिक आकाश के जाज्वल्यमान नक्षत्र बनने वाले तथा अपने जीवन काल में ही व्यक्ति से विचारधारा में बदल जाने वाले अनूठे व्यक्तित्व का नाम है—चौधरी चरण सिंह। राजनीति के ऐसे महापुरुष, पुरोधा का जन्म बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में आगरा और अवध के संयुक्त प्रान्त की मेरठ कमिश्नरी की हापुड़ तहसील में, बाबूगढ़ छावनी के समीप बसे नूरपुर गांव के एक साधारण किसान परिवार में 23 दिसम्बर 1902 को हुआ था। चौधरी साहब भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के एक ऐसे नेता थे, जिन्हें किसान समस्या और ग्राम्य जीवन की दुरूहताओं का विस्तृत ज्ञान था। उन्होंने गांधी के उस "आखिरी आदमी" के दुख, तकलीफ, जिसके चलते वह गरीबी और भुखमरी की बदहाल जिन्दगी जीने को मजबूर था, के शोषण को बहुत नजदीक से देखा, पहचाना। यही वजह थी कि किसानों, मजदूरों, गरीबों और समाज के दबे-थके लोगों के प्रति हमदर्दी और उनके अधिकारों की खातिर संघर्ष की भावना, उनके अन्तर में जीवन पर्यन्त विद्यमान रही। अपने इसी लक्ष्य की प्राप्ति की खातिर वह रुग्णावस्था में आने से पहले तक संघर्षरत रहे।

गांव से प्राथमिक शिक्षा पाकर तथा आगरा से सन् 1925 में एम. ए. और 1926 में वकालत पास युवक चौधरी चरण सिंह को वकालत रास नहीं आई और वह राष्ट्रीय आन्दोलन में कूद पड़े। 1930 में नमक सत्याग्रह में जेल जाने से ही उनकी राजनीतिक यात्रा का दौर शुरू हुआ, जो 29 मई 1987 को जाकर खत्म हुआ। इस दौरान उन्होंने प्रदेश में संसदीय सचिव, कृषि, विधि, न्याय, सूचना, वन, पशु पालन एवं राजस्व मंत्री, मुख्यमंत्री, केन्द्र में गृह व वित्तमंत्री, उपप्रधानमंत्री और प्रधानमंत्री पद का भी दायित्व संभाला। 1937 में वह बागपत गाजियाबाद क्षेत्र से पहली बार तथा 1938 में पुनःउत्तर प्रदेश धारा सभा के लिए चुने गए। चाहे सवाल जमींदारी प्रथा को खत्म करने का हो, भूमि सुधार विधेयक विधान मंडल में पारित करवाने का रहा हो, कृषि संम्बंधी समस्या और सामाजिक सवालों का हो, सामूहिक व सहकारी खेती का हो या जाति व्यवस्था का हो, पर उन्होंने निर्भीकता से अपनी राय व्यक्त की। उनका कृषक लोकतंत्र और विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था में ईमानदारी

से गहरा विश्वास था। उनका मानना था कि सत्ता के बगैर कुछ नहीं किया जा सकता।

चौधरी साहब के व्यक्तित्व का विकास गांधी युग की ही देन है। उनकी दृष्टि में लोकतंत्र में नागरिक अवज्ञा के लिए कोई जगह नहीं है। अन्याय के निदान के लिए सरकार को वोट के जरिये बदलना चाहिए, ऐसी उनकी मान्यता थी। आस्थाओं और कार्यक्रमों से गहरे रूप से जुड़े चौधरी साहब ने उन्हें लागू करने में किसी भी किस्म की बाधाओं की परवाह नहीं की। इसके लिए पदच्युत होने का खतरा भी लेने में वह हिचके नहीं। एक ईमानदार और सशक्त शासक के रूप में उनकी जो ख्याति बनी, वह आजीवन बनी रही।

स्वामी दयानन्द चौधरी साहब के प्रेरणा-स्रोत थे। उन्होंने स्वामी दयानन्द के नारे 'वेदों की ओर चलो' को अपने जीवन का मूलमंत्र माना और जीवन पर्यन्त आर्य संस्कृति के संवाहक बनकर स्वामीजी के कार्यों को पूरा करने के लिए संघर्षरत रहे। शिष्टाचार एक महान गुण है तथा मनुष्यत्व का विशेष परिचायक। इसी गुण के प्रकाश से ही मनुष्य की शिक्षा, रूचि और संस्कृति का परिचय मिलता है। उसका आचार-व्यवहार एक प्रकार से उसकी कुलीनता का पैमाना होता है। चौधरी साहब ने राजनैतिक बंदी के रूप में बरेली सेन्ट्रल जेल से अपने बच्चों को कुछ पत्र लिखे थे। शिष्टाचार की शिक्षा देते हुए उन्होंने अपने पत्रों में कहा था कि "शिष्टाचार का भारतीय संस्कृति में तो महत्व है ही, सामाजिक और घरेलू जीवन में भी कदम-कदम पर इसके महत्व को झुठलाया नहीं जा सकता, क्योंकि यही समाज में हमारे सुशिक्षित, सुसंस्कृत और सभ्य होने का प्रमाण पत्र देता है।" इससे यह जाहिर होता है कि चौधरी साहब शिष्टाचार को कितना महत्व देते थे।

चौधरी साहब ने ग्रामीण परिवेश में ही बचपन से यौवन की दहलीज तक पहुंचने के बीच के समय को गुजारा था। किसानों की समस्याओं के बारे में उनका चिंतन था कि एक ग्रामीण या किसान की समस्याओं को वही अधिकारी व्यक्ति हल कर सकता है, जिसकी सोच वस्तुओं के प्रति किसान जैसी ही हो। इसी विचार के तहत उन्होंने 50 प्रतिशत उच्च प्रशासनिक पद खेतिहर अथवा ग्रामों के निवासियों के लिए आरक्षित करने की बात कही। उनके मन में किसानों के लिए हमदर्दी और उनकी बहबूदी का कितना जज्बा था, यह इसी से जाहिर होता है कि उन्होंने इस बावत 1939 में उत्तर प्रदेश की धारा सभा में एक प्रस्ताव तक पेश कर डाला। इसमें उन्होंने 'किसानों की संतान के लिए आरक्षण क्यों?' के विभिन्न पहलुओं पर तथा उसकी आवश्यकता और महत्व पर भी विस्तार से प्रकाश डाला।

चौधरी साहब देश की गरीबी और गरीब के बारे में हमेशा सोचते रहते थे। गरीबों के लिए उनके मन में बेहद टीस थी जो समय-असमय उनकी आंखों के सहारे आंसुओं की धारा के रूप में फूट पड़ती थी। उनका कहना था

कि "बिना देशवासियों की मौजूदा सामाजिक, आर्थिक अभिवृत्तियों में परिवर्तन लाये देश समृद्धशाली नहीं होगा।" गांव और खेती को उन्होंने देश के विकास का आधार माना। उन्होंने देश की मौजूदा बदहाली के लिए गरीबी, बेरोजगारी और आर्थिक हालात को दोषी ठहराया और एक सुधार सिद्धांत पेश करने का काम किया।

चौधरी साहब ने "हमारी गुलामी के कारण" शीर्षक से लिखे लेख में उन कारणों का खुलासा किया है जिसके कारण अंग्रेज हमारे मुल्क पर सैकड़ों साल तक निर्बाध गति से शासन करते रहे। इसमें कोई दो राय नहीं कि स्वामी दयानन्द के बाद अगर किसी का उनके जीवन पर प्रभाव पड़ा, तो वह थे बापू यानी मोहनदास करमचन्द गांधी, जिनके सिद्धातों के वह जीवन पर्यन्त अनुगामी रहे। लेकिन पटेल उनके आदर्श या यों कहें कि नायक थे। गांधी जी की सी सादगी, ईमानदारी और पटेल की तरह परिणाम की परवाह किये बिना निष्कर्ष लेने की क्षमता, स्पष्टवादिता और निर्भीकता उनके जीवन की अमूल्य निधि थी। सन् 1951 में गांधी जी की तीसरी पुण्य तिथि पर चौधरी साहब का आकाशवाणी, लखनऊ से एक भाषण प्रसारित हुआ था जो उनके गांधीवादी होने तथा गांधीवादी चिंतन का द्योतक है।

अगस्त 1939 में आपने धारा सभा में ऋण निर्मोचन विधेयक पारित कराया जिसके परिणाम स्वरूप प्रदेश के लाखों गरीब किसान ऋण से मुक्त हो सके। इसके अलावा चौधरी साहब ने अपने जीवन में जो महत्वपूर्ण कार्य किया, वह है जमींदारी उन्मूलन। उस समय इसकी भू-सामन्तों, भूस्वामियों और उनके प्रतिनिधियों ने बड़ी आलोचना की थी। चौधरी साहब ने उस समय 'जमींदारी उन्मूलनः आलोचनाओं के जवाब' नामक एक लेख के माध्यम से भू-सामन्तों की आलोचनाओं का दो टूक जवाब दिया। 16 अगस्त 1949 को लखनऊ से प्रकाशित "नेशनल हेराल्ड" में छपे उस लेख में उन्होंने काश्तकारी, पूंजीपति, मुआवजा, भूमिधारी, अधिकार, खेतिहर की उपलब्धियां, बांड, भूमिहीन मजदूर आदि विभिन्न मुद्दों के माध्यम से स्पष्टीकरण दिया, साथ ही यह भी लिखा कि इस कानून से एक ऐसे किसान का उदय होगा, जो एक साथ जमीन का मालिक और रोजी कमाने वाला होगा। इस अवधारणा के तहत उनका भूमिधर जनतंत्र का आधार होगा। दरअसल यह विधेयक "राज्य के कल्याणकारी निर्देशक सिद्धान्त" की परिकल्पना पर आधारित था। इस विधेयक को न्यायालय में चुनौती भी दी गयी लेकिन विद्धान न्यायाधीशों को इस विधेयक में कहीं भी कोई कमी नजर नहीं आयी। नतीजतन इस विधेयक की कोई भी धारा न्यायालय में रद्द नहीं की जा सकी। इसके बाद एक जुलाई 1952 को उत्तर प्रदेश में जमींदारी उन्मूलन विधेयक लागू हो सका। इस विधेयक की अमेरिकी कृषि विशेषज्ञ डब्ल्यू.ए. लैडजिंस्की ने काफी प्रशंसा की और भारत के योजना आयोग को प्रस्तुत रिपोर्ट- "टेन्युरियल कंडीशन्स इन दि पेकेज डिस्ट्रिक्ट्स

1963" में कहा कि–

"वास्तव में केवल उत्तर प्रदेश ही एक ऐसा राज्य है, जहां बहुत सोचा-समझा व व्यापक कानून पास किया गया है और उसे असरदार ढंग से लागू किया गया है। वहां लाखों काश्तकारों को, जो जमीन से बेदखल कर दिये गये थे, उनके अधिकार वापिस दिये गये हैं।"

दरअसल चौधरी साहब यह भली भांति जानते थे कि छोटी-छोटी और बिखरी जोतें, किसान के लिए अनेकों कठिनाइयां पैदा करती थीं, वहीं उनसे अन्न का उत्पादन भी कम होता है। किसान की समस्याओं को किसान की दृष्टि से देखने का ही नतीजा था कि सन् 1953 में जब वह कृषि एवं राजस्व मंत्री थे, उन्होंने किसानों की बहबूदी के लिए "चकबन्दी कानून" पारित करवाया।

अमेरिकी कृषि विशेषज्ञ डब्ल्यू.ए. लैडजिंस्की ने फोर्ड फाउण्डेशन को भेजी अपनी रिपोर्ट में चौधरी साहब की चकबन्दी योजना की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। उस समय उत्तर प्रदेश में कृषि विकास के सलाहकार प्रख्यात कृषि विशेषज्ञ अल्बर्ट मायर ने कहा था कि "चकबन्दी के काम को देखकर मुझे ऐसा लगा है कि यह अत्यंन्त महत्व का काम गांवों के कृषि उत्पादन में क्रांति लाने वाला सिद्ध होगा।"सन् 1954 में चौधरी साहब ने "भूमि संरक्षण कानून" बनाया और उसे विधान सभा में पारित कराया। इस तरह का कानून समूचे देश में अपनी तरह का पहला कानून था। जिला तथा ब्लाक स्तर पर मिट्टी के वैज्ञानिक परीक्षण की योजना के क्रियान्वयन का श्रेय चौधरी साहब को ही है। इसका मुख्य लक्ष्य मिट्टी की प्रकृति के अनुरूप खादों का प्रयोग कराके कृषि उपज को बढ़ाना था।

मण्डी में किसान की किस तरह सरेआम लूट की जाती है और इसको किस तरह रोका जा सकता है, को चौधरी साहब भली भांति जानते थे। उन्होंने इसके लिए जरूरी कानून बनाये जाने पर बल दिया ताकि किसानों को उसके उत्पाद का उचित मूल्य मिल सके और वह बिचौलियों के जाल से भी निकलने में कामयाब हो सके। उन्होंने 31 मार्च और एक अप्रैल 1938 के "हिन्दुस्तान टाइम्स" में कृषि विपणन (एग्रीकल्चरल मार्केटिंग) पर दो लेख लिखे थे। 'मंडी में किसान की लूट' तथा 'नियमन के लिए प्रस्तावित कानून' आदि शीर्षक से लिखे इन दो लेखों में चौधरी साहब ने बाजार में किसान को होने वाली परेशानियों तथा उसके शोषण की स्थितियों को उजागर किया था तथा समस्या के हल के सम्बन्ध में सुझाव भी दिये थे।

इन लेखों को पढ़कर पंजाब के तत्कालीन कृषि मंत्री सर छोटूराम काफी प्रभावित हुए थे। किसान के उत्पादन की बाजार-व्यवस्था के लिए उन्हें चौधरी साहब के सुझाव बेहद उपयोगी लगे और उन्होंने अपने संसदीय सचिव श्री टीकाराम को चौधरी साहब के पास भेजा तथा उनकी सहमति से उनके कृषि विपणन संम्बधी

विचारों को "मंडी समिति एक्ट" के नाम से पंजाब में पारित कराया। इस बिल को चौधरी साहब उत्तर प्रदेश धारा सभा में भी पारित कराना चाहते थे। लेकिन 1938 में धारा सभा भंग हो जाने की वजह से यह सम्भव न हो सका। 11साल बाद सन् 1949 में यह बिल उत्तर प्रदेश विधान सभा में चौधरी साहब पास कराने में कामयाब हो सके।

चौधरी साहब का विचार था कि भारत एक विशाल जनसंख्या वाला देश है। अतः यहां ऐसे उद्योगों को तरजीह नहीं दी जा सकती, जिनमें आदमियों की खपत कम हो और मशीन के जरिये ही सारा काम निपटा लिया जाये। भारत में ऐसे छोटे-छोटे कुटीर उद्योग धंधों की जरूरत है जिनमें उत्पादन में अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी हो। साथ ही इन कुटीर उद्योगों को गांव-कस्बों में ही स्थापित किया जा सके ताकि कृषि उत्पादन को इनमें खपाया जा सके और इन्हें कच्चे माल की कोई समस्या न हो। उनका विचार था कि जब अधिक से अधिक लोगों को रोजगार मिलेगा, तब उनकी क्रय शक्ति बढ़ेगी और साथ ही कृषि भूमि पर बोझ भी कम होगा।

स्वामी दयानन्द का प्रभाव तो उनके कण-कण में मौजूद था। सामाजिक कुरीतियों जैसे– जाति प्रथा के वे घोर विरोधी थे। उन्होंने जाति प्रथा को राजनीतिक गुलामी का प्रमुख कारण माना। उन्होंने स्पष्ट किया कि जाति-व्यवस्था के कोढ़ के चलते देश में एकता का अभाव रहा। नतीजतन विदेशी आक्रान्ता का मुकाबला कर पाने में हम नाकाम रहे। उनके अनुसार यह समस्या आज भी घुन की तरह हमारे समाज को खाये जा रही है। स्वार्थों की राजनीति के चलते आज भी हमारा समाज इस कोढ़ से छुटकारा नहीं पा सका है। जाति की संकीर्णता से शुरू से ही वह ऊपर उठे हुए थे। छात्र जीवन में, वकालत के दौरान और उत्तर प्रदेश के मंत्रित्व काल में उनका खाना एक हरिजन लड़का ही बनाया करता था। वह आजीवन जातिवाद को मिटाने के लिए प्रयासरत रहे। "जो भी प्रत्याशी शैक्षणिक संस्था या लोक सेवा में प्रवेश प्राप्त करे, उससे जाति की बावत कुछ न पूछा जाये, केवल यह मालूम किया जाये कि वह हरिजन है या नहीं" यह प्रस्ताव चौधरी साहब ने 1939 में कांग्रेस विधायक दल की बैठक में रखा था। 1948 में जब वह विधि, न्याय एवं सूचना मंत्री थे, के अथक प्रयास से ही उत्तर प्रदेश सरकार ने राजस्व विभाग के किसी भी पट्टे या रिकार्ड में जाति दर्ज न करने के आदेश जारी किये। 16 फरवरी 1951 को प्रदेश कांग्रेस कमेटी की बैठक में आपने यह प्रस्ताव रखा था कि "कांग्रेस का कोई सदस्य स्वयं को जाति के आधार पर बने किसी संगठन अथवा संस्था से नहीं जोड़ेगा।" यह प्रस्ताव भारी बहुमत से पारित भी हुआ।

चौधरी साहब कभी जाति सम्मेलनों में नहीं गए। 22 मई सन् 1954 को

उन्होंने देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू को एक पत्र लिखा था। उस पत्र में चौधरी साहब ने लिखा कि—"संविधान में संशोधन कर ऐसी व्यवस्था की जाए, जिसके तहत राजपत्रित पदों पर उन्हीं युवक-युवतियों को चुना जाए, जो अपनी जाति से बाहर विवाह करने को तैयार हों।" पंडित जी ने इस सुझाव को स्वीकारा, लेकिन यह भी कहा कि इससे व्यक्तिगत स्वतंत्रता का हनन होता है और इस तरह के कार्य स्वेच्छा से होने चाहिए, दबाव में नहीं।

चौधरी साहब जातिवाद के विरोध में किस सीमा तक जा सकते थे, यह उनके सन् 1967 में मुख्यमंत्रित्व काल के समय जारी आदेश से प्रमाणित होता है। उन्होंने शासकीय आदेश पारित करवाया कि—"जो संस्थाएं किसी जाति विशेष के नाम पर चल रहीं हैं, उनका शासकीय अनुदान बंद कर दिया जायेगा।" नतीजतन इस आदेश के तत्काल बाद ही कालेजों के नाम के आगे से जाति सूचक शब्द हटा दिये गए। दरअसल चौधरी साहब जातिवाद को राष्ट्रीयता के लिए सबसे बड़ा खतरा मानते थे। उनका मानना था कि "यह जातिवाद का ही परिणाम था कि हम भारतियों ने सैकड़ों सालों तक गुलामी का जुआ अपने कंधों पर ढोया। जातिवाद का जहर आज भी समाज को भीतर ही भीतर खोखला कर रहा है। जब तक जातिवाद का अंधेरा नहीं मिटेगा, राष्ट्रीय एकता का सूरज उदय नहीं होगा।"

एक अप्रैल 1967 को बजट प्रस्ताव पर बहस के दौरान उत्तर प्रदेश की चन्द्रभानु गुप्त सरकार के पराजित हो जाने पर 3 अप्रैल 1967 को चौधरी साहब संविद सरकार के नेता के रूप में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। चौधरी साहब ने मुख्यमंत्री बनते ही निचले तबकों और किसानों की हालत में सुधार लाने के अनेकानेक काम किये। कुटीर उद्योग-धंधों तथा कृषि उत्पादन में वृद्धि की योजनाओं को क्रियान्वित करने की दृष्टि से सरकारी एजेंसियों द्वारा ऋण देने के तौर-तरीकों को सुगम बनाया। साढ़े छह एकड़ तक की जोत पर लगान आधा कर दिया। किसानों की उपज, विशेषकर नकदी फसलों के लाभकारी मूल्य दिलाने की दिशा में महत्वपूर्ण निर्णय लिये। भूमि-भवन कर समाप्त कर दिया। सरकारी कामकाज में हिन्दी का शत-प्रतिशत प्रयोग तथा 23 तहसीलों में, जो उर्दू बहुल थीं, सरकारी गजट उर्दू में उपलब्ध कराने की व्यवस्था की गयी। किसानों को जोत वही दिलवाई, जिससे उनके भूमि सम्बंधी रिकार्ड में गड़बड़ न की जा सके। ब्रिटिश शासन के दौर से नहर की पटरियों पर चलने की पाबंदी खत्म कराई।

चौधरी साहब के लिए अल्पसंख्यकों के मन में अपार श्रद्धा और विश्वास था। इसका प्रतिफल यह रहा कि उन दिनों जब मध्य प्रदेश, गुजरात, बिहार और महाराष्ट्र भीषण दंगों की चपेट में सुलग रहे थे, उत्तर प्रदेश में पूर्णतया शांति थी। चौधरी साहब ही थे, जिन्होंने अनुसूचित जाति के एक सदस्य को पहली बार राज्य

लोक सेवा आयोग का सदस्य नियुक्त किया। मंत्रिमंडल में हरिजनों के अलावा पिछड़े वर्गों के चार मंत्री लिये। उन्होंने यह व्यवस्था भी की कि शिक्षण संस्थाओं में छात्र संघों का होना अनिवार्य नहीं होगा। उस वर्ष विडम्बना यह रही कि कालेजों में अन्य वर्षों की अपेक्षा अध्ययन-अध्यापन अधिक हुआ तथा माहौल शांतिपूर्ण रहा।

चौधरी साहब के मुख्य मंत्रित्व काल में अनुशासन अपने स्वाभाविक और सच्चे अर्थों में सरकारी विभागों में देखने को मिला। कर्मचारी समय पर कार्यालयों में आते थे तथा अपनी सीट पर मौजूद रहकर काम करते थे। चौधरी साहब के भेष बदलकर रिश्वत लेते अधिकारियों-कर्मचारियों को पकड़ लेने का नतीजा यह हुआ कि प्रदेश में रिश्वत का बाजार एकदम ठप्प पड़ गया था। गौर तलब है कि सरकार अपने इकबाल से चलती है। जिस सरकार का इकबाल कायम नहीं होता, वह अपनी जनता को स्वच्छ और व्यवस्थित प्रशासन नहीं दे पाती। चौधरी साहब की सरकार का इकबाल कायम था, जो सरकारी विभागों में ईमानदारी और अनुशासन कायम रखने में सहायक हुआ। सरकार के इकबाल का दारोमदार नेता पर होता है। चौधरी साहब ऐसे ही नेता थे, जिनकी ईमानदारी, नैतिकता और प्रशासनिक दृढ़ता की धाक पहले ही से थी। चौधरी साहब की प्रशासनिक कुशलता का ही नतीजा था कि उनके मुख्यमंत्रित्व काल में जहां पुलिस चुस्त और दुरुस्त रही, वहीं राज्य में कानून-व्यवस्था में भी व्यापक सुधार आया। साथ ही गरीब, पिछड़े, किसान-मजदूर और अल्पसंख्यक वर्ग को राहत मिली। लेकिन जनहित के अनगिनत कार्यों और सफल प्रशासनिक क्षमता के बावजूद संविद के दूसरे घटकों के मनमाने तौर-तरीकों, क्रिया-कलापों से क्षुब्ध होकर मात्र दस महीने बाद ही चौधरी साहब ने मुख्यमंत्री पद से त्यागपत्र दे दिया।

10 फरवरी 1970 को श्री चन्द्रभानु गुप्त की कांग्रेस सरकार द्वारा इस्तीफा दिये जाने के कारण 17 फरवरी 1970 को भारतीय क्रांति दल नेता के रूप में चौधरी साहब दूसरी बार प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। मुख्यमंत्री पद की शपथ ग्रहण करते ही उन्होंने अपने दल भारतीय क्रांति दल के 1968 में कानपुर में सम्पन्न अधिवेशन में घोषित नीतियों जैसे-ग्रामोन्मुखी आर्थिक नीति पर चलने, कृषि उपज बढ़ाकर गांवों में कुटीर उद्योग-धंधे लगाकर बेरोजगारी खत्म करने और गांवों से शहरों की ओर हो रहे पलायन को रोकने तथा कृषि भूमि पर बोझ कम करने का संकल्प लिया। कृषि उत्पादन बढ़ाने की नीति को प्रोत्साहन देते हुए उन्होंने उर्वरकों पर से बिक्री-कर उठा लिया। साढ़े तीन एकड़ वाली जोतों का लगान माफ कर दिया, भूमिहीन खेतिहर मजदूरों को कृषि भूमि दिलाने के काम पर जोर दिया। कुल छह महीने की अवधि में ही 628.338 एकड़ भूमि की सीरदारी के पट्टे और 31.188 एकड़ के आसामी पट्टे वितरित किये। सीलिंग से प्राप्त सारी जमीन

भूमिहीन हरिजनों तथा पिछड़े लोगों को दी। भूमि विकास बैंकों की कार्य प्रणाली को और अधिक उपयोगी बनाया।

आपातकाल के दौर में नजरबंद रहने और उससे रिहाई के बाद 1977 में चौधरी साहब केन्द्र में मोरारजी देसाई की जनता पार्टी की सरकार में, जिसके गठन में औरों के मुकाबले चौधरी साहब का महत्वपूर्ण योगदान था, गृह मंत्री बने। उस दौरान उन्होंने अल्पसंख्यकों के हित-संवर्धन की दृष्टि से अल्पसंख्यक आयोग की स्थापना की थी।

वित्त मंत्री की हैसियत से चौधरी साहब ने राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक की स्थापना की, ताकि राष्ट्रीयकृत बैंकों से कृषि विकास के लिए निर्धारित राशि का कृषक समुदाय को पूरा लाभ मिल सके। उर्वरकों, काले डीजल तथा कृषि जिन्सों जैसे-चावल, चीनी, खांड़सारी आदि की अन्तर्राज्यीय आवाजाही पर लगी रोक हटवाई ताकि उनकी मूल्यगत विषमता पर रोक लग सके। विलासिता की वस्तुओं पर भारी कर लगाये। एकाधिकारी घरानों पर लाइसेंस आवंटन के मामलों में पाबंदियां लगाईं तथा पहली बार देश में 120 ऐसी वस्तुओं के बड़े उद्योगों पर पाबंदी लगाई जिनका उत्पादन लघु उद्योगों में सम्भव था। कपड़ा मिलों को हिदायत दी कि वह 20 प्रतिशत कपड़ा गरीब जनता के लिए बनाये और पहली बार बजट में कृषि के लिए आवंटित राशि में बढ़ोतरी की गयी।

24 जुलाई, 1979 को चौधरी साहब देश के प्रधानमंत्री बने। प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने पहली बार देश में ग्रामीण पुनरूत्थान मंत्रालय की स्थापना की, जिसका प्रमुख लक्ष्य यह था कि स्वतंत्र रूप से ग्रामीण विकास की संभावनाओं का आंकलन कर उन्हें क्रियान्वित किया जा सके। चौधरी साहब को प्रधानमंत्री के पद पर काम करने का अधिक समय तो नहीं मिला, किन्तु अल्प समय में उन्होंने जो कुछ किया, उससे इसी तथ्य की पुष्टि होती है कि यदि समय मिलता तो वह इस देश के पिछड़ों और किसानों के लिए अपनी सामर्थ्य भर बहुत कुछ करते।

समस्या कोई भी हो, उसके बारे में उनका चिन्तन सदैव निर्भीक रहा करता था। पंजाब समस्या के बारे में उन्होंने लोकसभा में जो विश्लेषण किया, दरअसल वह उनकी निर्भीकता, स्पष्टवादिता, साहसिकता और दूरदृष्टि का परिचायक है। पंजाब समस्या के सन्दर्भ में उन्होंने स्पष्ट किया था कि "पंजाब का बंटवारा ही सबसे बड़ी गलती थी। इसके नतीजे आगे जाकर गलत निकलेंगे।[5] तानाशाही के वह जबरदस्त विरोधी थे। चुनाव आयोग को निष्पक्ष व प्रभावी बनाये जाने पर वह सदैव बल देते रहे। उनका मानना था कि निष्पक्ष चुनाव लोकतंत्र की आत्मा है। इस दृष्टि से वह भारतीय चुनाव प्रक्रिया में व्याप्त विसंगतियों के प्रति चिंतित रहते थे। उन्होंने भारत के चुनाव आयोग को इस सन्दर्भ में कुछ सुझाव भी भेजे थे। देश के विकास के लिए जनसंख्या पर नियंत्रण आवश्यक मानते थे वह और

उन्होंने देश को दुर्दशा से उबारने में जन्म दर को कम करने पर बल दिया। जनसंख्या नियंत्रण का माध्यम भी वह सरकारी आतंक नहीं बल्कि जन-चेतना को मानते थे। उन्होंने धर्म और राजनीति को अलग करने का सुझाव दिया था। उनका मानना था कि धर्म के आधार पर गठित दलों को राजनीति में प्रवेश की इजाजत नहीं देनी चाहिए।

देश में मिशनरियों की बढ़ती गतिविधियों के बारे में चौधरी साहब ने चेतावनी देते हुए कहा था कि यदि पूर्वी राज्यों में मिशनरियों पर समय रहते रोक नहीं लगायी गयी, तो वह दिन दूर नहीं, जब वहां से भी अलगाववाद की आवाजें उठने लगेंगी। भ्रष्टाचार के संदर्भ में उनका कहना था कि भ्रष्टाचार सदैव ऊपर से नीचे की ओर चलता है। यदि शीर्ष नेतृत्व यानी ऊपर के लोग ईमानदारी का आचरण करें, तो नीचे के लोगों में स्वतः ईमानदारी आ जायेगी।

भाषा के मामले पर उनका स्पष्ट विचार था कि जिस देश की एक भाषा नहीं होगी, वह देश राष्ट्रीयता के तौर पर मजबूत नहीं रह सकता। उनके मन में सभी भाषाओं के लिए सम्मान था, लेकिन वह राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने के लिए हिन्दी को पूर्ण राष्ट्र भाषा का दर्जा दिये जाने के पक्षधर थे। उनका कहना था कि"जब तक सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग अनिवार्य नहीं बनाया जायेगा, तब तक राष्ट्रीय एकता के धागे मजबूत नहीं होंगे।"काले धन में वृद्धि तथा इसे कैसे बाहर निकाला जाए" नामक शीर्षक से उन्होंने 1967 में एक लेख लिखा था जिसे उन्होंने अपने मुख्यमंत्रित्व काल में देश के विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्रियों को भेजा था। इस लेख में उन्होंने जो सुझाव दिये, वह आज भी प्रासंगिक हैं।

उनके आचरण में धर्म का ढोंग नहीं बल्कि उसका यथार्थ दृष्टि गोचर होता था। उनके चरित्र और ईमानदारी पर उनका बड़े से बड़ा विरोधी भी उंगली न उठा सका। मौजूदा राजनैतिक जीवन में जिन गुणों का सर्वथा अकाल दिखाई देता है, चौधरी साहब के पास उन गुणों का अपूर भंडार था। अपनी योग्यता, सूझबूझ और राजनैतिक पकड़ के बलबूते शीर्ष पर पहुंचने वाले चौधरी साहब एक कुशल राजनीतिज्ञ ही रहे हों, ऐसी बात नहीं, बल्कि वह एक समाज सुधारक, चिंतक, यथार्थवादी दृष्टा, अर्थशास्त्री और विचारक होने के साथ-साथ देश के बहुसंख्यक किसानों, गरीबों, शोषित-पीड़ितों, कमजोर वर्गों के मसीहा थे, जो सदैव उनकी मुक्ति तथा समृद्धि के लिए सोचते-लिखते और संघर्ष करते रहे। दरअसल डा. राममनोहर लोहिया के बाद चौधरी साहब देश की राजनीति के अकेले ऐसे नेता रहे जिन्होंने पिछड़ी जातियों में राजनीति में हिस्सेदारी का एहसास जगाया। उन्हें सत्ता के नये शक्ति केन्द्र के रूप में उभारा। इसके परिणामस्वरूप हिन्दी भाषी क्षेत्रों में विपक्ष को सबल आधार मिला और छठे दशक के उत्तरार्द्ध में उत्तर भारत

के कुछ राज्यों में संविद सरकारें अस्तित्व में आईं। वर्तमान में पिछड़ी जातियों की राजनीति में व्यापक हिस्सेदारी और शीर्ष नेतृत्व तक पहुंच इसका ज्वलंत प्रमाण है।

चौधरी साहब को जोड़-तोड़ की राजनीति से सख्त परहेज था। उन्हें जो सही लगा उसे करने और कहने में उन्होंने कभी लाग-लपेट से काम नहीं लिया। दांव-पेंच और स्वार्थ की राजनीति उन्हें कभी रास नहीं आयी। ईमानदारी और निर्भीकता के कारण वह बड़े से बड़े व्यक्ति का विरोध करने से भी नहीं हिचकिचाए। यही वजह रही कि जब-जब चौधरी साहब को सत्ता के करीब आते देखा, अभिजात्य वर्ग ने, जिनका आर्थिक-सामाजिक रूप से आधिपत्य कायम है, उनका लगातार विरोध किया तथा उनके विरुद्ध प्रचार भी किया। इसके साथ ही स्वार्थी और सत्तालोलुप प्रतिगामी ताकतों ने एकजुट होकर उन पर हमला किया। यही नहीं चौधरी साहब पर कभी जातिवादी होने, कभी हरिजन विरोधी, तो कभी मुस्लिम विरोधी और कभी धनी किसानों का पक्षधर होने का आरोप भी लगाया गया। किन्तु वह इससे कभी विचलित न हुए और उन्होंने शोषित-पीड़ित तबकों तथा किसानों की भलाई के लिए संघर्ष जारी रखा। उनके इसी संघर्ष का प्रतिफल है कि आज तकरीब देश के सभी राजनैतिक दल, जो पिछड़ों और किसानों के नाम से परहेज करते थे, किसान और पिछड़ों की बात करने लगे हैं

उन्होंने व्यस्तता के बावजूद देश की सम-सामयिक, ज्वलंत समस्याओं और भिन्न-भिन्न विषयों-मुद्दों पर लेख लिखे और विचार प्रकट किये, वह आज भी प्रासंगिक हैं। उन्होंने पुस्तकें भी लिखीं। इनमें अधिकांश पुस्तकों के हिन्दी संस्करण भी प्रकाशित हो चुके हैं। गौरतलब है कि इन पुस्तकों में इकोनॉमिक नाइटमेयर ऑफ इंडियाः इट्स कॉजेज एण्ड क्योर की तो विदेशी अर्थशास्त्रियों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है और अर्थशास्त्र में इसे मील के पत्थर की संज्ञा दी है। उल्लेखनीय है कि यह पुस्तक अमेरिका के हार्वर्ड विश्व विद्यालय में अर्थशास्त्र के पाठयक्रम में शामिल है। अनेक विषयों पर उनके लिखे लेख समय-समय पर दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित भी हुए। उनके द्वारा लिखी पुस्तकें और लेख जीवन्त प्रमाण हैं कि आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक विषयों-मुद्दों पर उनके विचार कितने गम्भीर और व्यापक थे और वह कोरे राजनेता ही नहीं, एक चिंतक, विचारक और लेखक भी थे।

अध्ययन और लेखन से जीवन के अंतिम सोपान तक जुड़े रहने वाले चौधरी साहब कर्म और चिंतन के धरातल पर समान रूप से सक्रिय राजनेता थे। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विभिन्न पहलुओं के बारे में देश के जन-मानस को जानकारी हासिल हो सके, यही इस पुस्तक का अभीष्ट है। इस पुस्तक में राष्ट्र के महामहिम प्रथम पुरुष, मान्य गणमान्य व्यक्तियों, राजनीतिज्ञों, समाज सेवियों, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं, अर्थशास्त्री, शिक्षाविद, न्यायविद्, संसदविद, पत्रकार, साहित्यकार, पूर्व

प्रशासनिक अधिकारियों, चिकित्सक, चौधरी साहब के परिजनों, उनके अनुयायियों, एवं उनके जीवन काल में, विभिन्न क्षेत्रों में लम्बे समय तक उनसे जुड़े रहे कुछ प्रमुख व्यक्तियों आदि के संस्मरण, वर्तमान तथा पूर्व में किए साक्षात्कार के समय व्यक्त उनके विचार, लेख एवं भाषणों को संकलित किया गया है। मेरा विश्वास है कि यह पुस्तक चौधरी साहब के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का मूल्यांकन करने में उपयोगी सिद्ध होगी।

नई दिल्ली
मार्च 3, 1995

—ज्ञानेन्द्र रावत

# अनुक्रम


| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | जीवंत और ऊर्जावान व्यक्तित्व | डा. शंकर दयाल शर्मा | 1 |
| 2. | खूबियां ही खूबियां थीं उस इंसान में | ज्ञानी जैल सिंह | 6 |
| 3. | एक आदर्श पुरुष थे वह | पी.वी. नरसिम्हा राव | 10 |
| 4. | मूल्य आधारित राजनीति के प्रणेता | विश्वनाथ प्रताप सिंह | 12 |
| 5. | बेबस आदमी के संघर्ष के प्रतीक | चन्द्रशेखर | 14 |
| 6. | हमें मिली उनसे संघर्ष की प्रेरणा | चौधरी देवीलाल | 16 |
| 7. | औरों से अलग थी उनके जीवन की प्रतिमा | शिवराज एन. पाटिल | 19 |
| 8. | वे हरदिल अजीज नेता और अमर सख्शियत थे | डा. नजमा हेपतुल्ला | 21 |
| 9. | एक आडम्बरहीन व्यक्तित्व | जस्टिस हंसराज खन्ना | 23 |
| 10. | कृषक लोकतंत्र के पक्षधर | मधु लिमये | 25 |
| 11. | किसान दिवस की उनकी संकल्पना | मधु दण्डवते | 30 |
| 12. | यथार्थवादी राजनेता थे वह | प्रो. बलराज मधोक | 32 |
| 13. | कथनी और कर्म के समन्वय पुरूष | प्रो. जे. डी. सेठी | 35 |
| 14. | गरीब ने देखी उनमें अपने रहनुमा की तस्वीर | डा. स्वरूप सिंह | 39 |
| 15. | इस युग के भीष्म | मधुकर दिघे | 42 |
| 16. | युग-पुरुष चौधरी चरण सिंह | देवीदास आर्य | 47 |
| 17. | उनके ख्वाबों का भारत | मोहम्मद यूनुस सलीम | 50 |
| 18. | गांधी के सच्चे वारिस | सत्य प्रकाश मालवीय | 53 |
| 19. | एक सार्थक बहस के जन्म दाता | लालकृष्ण आडवाणी | 56 |
| 20. | किसानों के सच्चे रहनुमा थे चौधरी साहब | हरिकिशन सिंह सुरजीत | 58 |
| 21. | वह फिरकापरस्ती के खिलाफ लड़े | एम. फारूखी | 60 |
| 22. | ग्राम देवता थे चौधरी चरण सिंह | चौ. कुम्भाराम आर्य | 62 |
| 23. | हमदर्द और नेकदिल इंसान | धनिक लाल मंडल | 65 |
| 24. | गांधीवादी अर्थनीति के प्रतिपादक | मुलायम सिंह यादव | 68 |
| 25. | उनका सपना था किसान-एकता | रामचन्द्र विकल | 71 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 26. | एक सादगी पसंद प्रधानमंत्री | इन्द्रकुमार गुजराल | 74 |
| 27. | महान किसान नेता थे चौधरी चरण सिंह | कुंवर नटवर सिंह | 77 |
| 28. | उन्होंने की थी समता के विचार को जनाधार देने की पहल | सुरेन्द्र मोहन | 80 |
| 29. | उन्होंने देश के दर्द की आवाज पर जी जिन्दगी | हेमवती नन्दन बहुगुणा | 85 |
| 30. | समतावादी समाज बनाने की थी उनकी परिकल्पना | राजनारायण | 90 |
| 31. | आज भी प्रासंगिक हैं चौधरी चरण सिंह | बी. सत्यनारायण रेड्डी | 93 |
| 32. | प्रेस की आजादी के पक्षधर | कुलदीप नैय्यर | 97 |
| 33. | चौधरी चरण सिंह : एक अद्वितीय व्यक्तित्व | चन्द्रजीत यादव | 99 |
| 34. | अक्षुण्ण जिजीविषा के धनी | भगवती चरण वर्मा | 103 |
| 35. | वह ग्रामीण जनता के हितों के जागरूक प्रहरी थे | वीरेन्द्र वर्मा | 109 |
| 36. | राजनीतिज्ञ, समाज सुधारक व अर्थशास्त्री का समन्वित स्वरूप | नाथूराम मिर्धा | 111 |
| 37. | किसानों का भगीरथ | युधिष्ठर दास | 116 |
| 38. | हिमालय सा अडिग और गंगा की तरह पवित्र | डा. जे.पी. सिंह | 118 |
| 39. | असहमत होने पर भी उनकी कदर करते थे | सी. राजेश्वर राव | 123 |
| 40. | चौधरी चरण सिंह : एक जन-हित साधक विभूति | डा. रामदास | 125 |
| 41. | संघर्ष ही उनकी जीवन-शक्ति था | डा. नत्थन सिंह | 129 |
| 42. | सर्वहारा के प्रति प्रतिबद्ध थे चौधरी चरण सिंह | परिमल दास | 134 |
| 43. | अल्पसंख्यकों के सच्चे हमदर्द | रशीद मसूद | 137 |
| 44. | सामाजिक परिवर्तन के प्रवर्तक | रामविलास पासवान | 140 |
| 45. | उनके सपनों से जुड़ा भावी जय-पराजय का सवाल | शरद यादव | 142 |
| 46. | सामाजिक क्रांति के जनक | अजय सिंह | 145 |
| 47. | एक दृष्टि संपन्न जन नेता | उदयन शर्मा | 149 |
| 48. | एक विरोधी की नजर में चौधरी चरण सिंह | प्रताप कुमार टण्डन | 157 |
| 49. | उनका सपना था गांव, कृषि और किसान की बहबूदी | राम कृष्ण हेगड़े | 163 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 50. | रहमदिल इंसान थे वह | करतार सिंह | 165 |
| 51. | वह माननीय से आगे मननीय भी थे | जैनेन्द्र कुमार | 168 |
| 52. | जातिवाद के प्रबल विरोधी | रघु ठाकुर | 171 |
| 53. | जमींदारी उन्मूलन के जनक | ठाकुर अम्बिका प्रसाद सिंह | 173 |
| 54. | वह वतन के वास्ते जिए | रमेश वर्मा | 176 |
| 55. | जीवन दर्शन की सहज कविता | सुरेन्द्र तिवारी | 179 |
| 56. | अभिजात्यों के लिए वह उपेक्षित ही रहे | डा. प्रेम सिंह | 183 |
| 57. | सामाजिक उत्थान के लिए समर्पित व्यक्तित्व | राम नरेश यादव | 189 |
| 58. | रोजगार-परक व्यवस्था के पक्षधर | कैलाश नाथ सिंह | 193 |
| 59. | एक महान व्यक्तित्वः एक आदर्श पिता | वेदवती | 198 |
| 60. | उन्होंने कमजोर तबकों को निजाम में हिस्सेदारी का एहसास कराया | मुफ्ती मोहम्मद सईद | 201 |
| 61. | वह आजीवन किसान ही रहे | रघुवर दयाल वर्मा | 203 |
| 62. | एक दृष्टा थे चौधरी चरण सिंह | डा. सुब्रह्मण्यम् स्वामी | 205 |
| 63. | सात्विक और दृढ़ व्यक्तित्व का राजनेता | शिव कुमार गोयल | 207 |
| 64. | ग्रामीण उत्थान के प्रतीक : चौधरी चरण सिंह | देवेन्द्र प्रसाद यादव | 211 |
| 65. | ग्रामीण राजनीति के युग पुरुष | राकेश कपूर | 213 |
| 66. | जैसा मैंने उन्हें जाना | ए. नीललोहितदास नाडार | 216 |
| 67. | भ्रष्टाचार के खात्मे के सबसे बड़े हिमायती | हरि सिंह नलवा | 220 |
| 68. | वह मेरे जीवन के आदर्श पुरुष थे | मनोहर लाल | 222 |
| 69. | नैतिक मूल्यों की स्थापना के पक्षधर | बलवंत सिंह रामूवालिया | 226 |
| 70. | दलितों के हितैषी : चौधरी चरण सिंह | डा. राजसिंह राणा | 231 |
| | समाचार -पत्रों की राय में चौधरी चरण सिंह | | 235 |
| | गणमान्य व्यक्तियों एवं राजनैतिक दलों के नेताओं की नजर में चौधरी चरण सिंह | | 239 |

# चौधरी चरण सिंह
# स्मृति और मूल्यांकन

1

# जीवंत और ऊर्जावान व्यक्तित्व

डा. शंकर दयाल शर्मा*

चौधरी चरण सिंह उन भारतीय विभूतियों में से थे जिन्होंने अपनी कर्मठता, लगन और आम लोगों के विकास के प्रति समर्पण के कारण समाज में अपना एक अलग स्थान बनाया। लोकप्रियता की ऊंचाइयों पर पहुंच कर भी वे खेत की माटी और भूमि की गन्ध को नहीं भूले। जीवन भर एक संघर्षशील नेता के रूप में वे भारतीय ग्रामीण जीवन के उत्थान और गांवों की प्रगति के लिए जूझते रहे।

चौधरी चरण सिंह का जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ था जिसने सदैव ही भारतीय अस्मिता के लिए संघर्ष किया। उनके पितामह श्री बादाम सिंह 1857 में अंग्रेजों के खिलाफ राजा नाहर सिंह के सहयोगी रहे और बाद में जब राजा नाहर सिंह के राज्य को अंग्रेजों ने अपने साम्राज्य में शामिल कर लिया तो उन्हें यमुनापार बुलन्दशहर जिले के भटौना गांव में शरण लेनी पड़ी। बाद में वे नूरपुर पहुंचे। यहां श्री चरणसिंह के परिवार को गांव वालों ने खेती के लिए कुछ जमीन प्रदान की। चौधरी चरण सिंह ने अपने लेखन में कई स्थानों पर उस स्थिति का जिक्र किया है, जब वे पांच साल के थे और अपने पिता के साथ अपने खेतों में काम करते थे। बचपन से ही इस अनुभव का उन पर उत्कट प्रभाव पड़ा। 25 दिसम्बर,1977 को महाराजा सूरजमल के शहीदी दिवस पर एक भाषण में उन्होंने कहा था–

"मेरे संस्कार उस गरीब किसान परिवार के संस्कार हैं जो धूल और कीचड़ के बीच एक छप्परनुमा झोपड़ी में रहता है। मैंने अपना बचपन उन किसानों के बीच बिताया है जो खेतों में नंगे बदन अपना पसीना बहाते हैं।"

अपने प्रारम्भिक जीवन में ही चौधरी साहब ने देश के उत्थान में गांवों के किसान के निर्णायक महत्व को पूरी तरह समझ लिया था। स्वयं को इस ध्येय के प्रति समर्पित करके उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त करने का संकल्प लिया। लखनऊ

---

* भारत के राष्ट्रपति

विश्वविद्यालय से कानून की डिग्री लेकर उन्होंने गाजियाबाद में 1928 में प्रैक्टिस शुरू की। यही वह समय था जब पूरा देश महात्मा गांधी के नेतृत्व में विदेशी दासता से मुक्ति पाने का प्रयास कर रहा था। महात्मा गांधी के आह्वान पर चौधरी चरण सिंह भी इस लड़ाई में कूद पड़े। फलस्वरूप, नमक सत्याग्रह में वे जेल गए,1940 में व्यक्तिगत सत्याग्रही के रूप में गिरफ्तार हुए और 1942 के "भारत छोड़ो आन्दोलन" में भी वे कैद किये गए। इस दौरान वे कांग्रेस पार्टी के संगठन कार्यों से भी जुड़े रहे। कठोर संघर्ष और कष्टमय राजनीतिक अनुभवों के पश्चात् भी उनके मन में किसी तरह का कोई दुराव-छुपाव नहीं था। उनकी निर्भीकता और साफगोई हमारे यहां के आम किसानों के चरित्र का प्रतिनिधित्व करती है। उनके ये शब्द विशेष उल्लेखनीय हैं–

"खेती एक ऐसा व्यवसाय है जहां प्रकृति के साथ संघर्ष में एक किसान को धैर्य एवं अध्यवसाय के पाठ रोजाना पढ़ने पड़ते हैं। फलतः उसमें दृढ़ता और सहनशीलता उत्पन्न हो जाती है। इससे एक ऐसे चरित्र का निर्माण होता है जो अन्य किसी व्यवसाय में नहीं हो सकता।"

भारतीय किसानों के लिए चौधरी साहब ने जो कुछ भी किया है, वह ऐतिहासिक महत्व का है। 1937 में वे पहली बार बागपत-गाजियाबाद क्षेत्र से तत्कालीन संयुक्त प्रांत की धारा सभा के लिए चुने गए। उस समय उनकी आयु 35 वर्ष की थी। 31मार्च और 1 अप्रैल,1938 के "हिन्दुस्तान टाइम्स" में "कृषि विपणन" शीर्षक से उनका एक लेख दो किश्तों में प्रकाशित हुआ। इस लेख में गांव और कृषि की समस्याओं के प्रति उनकी गहरी समझ स्पष्ट रूप से उजागर होती है। इस लेख के प्रकाशन के बाद पंजाब में तत्कालीन कृषि मंत्री सर छोटूराम ने मण्डी समिति ऐक्ट पास करवाया था। संयुक्त प्रांत में भी चौधरी साहब इस तरह का बिल रखना चाहते थे परन्तु तभी धारा सभा भंग कर दी गई लेकिन उन्होंने 1939 में धारा सभा में ऋण निर्मोचन विधेयक पास करा लिया। इस विधेयक के पारित होते ही उत्तर प्रदेश के लाखों गरीब किसानों को ऋण से मुक्ति मिल गई थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उत्तर प्रदेश सरकार ने 1952 में जो जमींदारी उन्मूलन एवं भूमि सुधार विधेयक पारित किया था, उसे तैयार करने का दायित्व भी मुख्यमंत्री गोविन्द बल्लभ पन्त ने चौधरी साहब को ही सौंपा था। इसी प्रकार चौधरी साहब ने 1953 में "चकबंदी कानून" तथा 1954 में "भूमि संरक्षण कानून"बनवाया। इससे कृषि को वैज्ञानिक स्वरूप प्राप्त करने में सहायता मिली।

चौधरी साहब वर्ग भेद और जात-पात के विरोधी थे और वे सभी वर्गों को समानता का दर्जा दिए जाने और सर्वधर्मसमभाव के पक्षधर थे। सविनय अवज्ञा आन्दोलन में गिरफ्तारी से रिहा होने के बाद जब सन् 1933-34 में महात्मा गांधी ने सामाजिक न्याय का अपना कार्यक्रम चलाया, तो गाजियाबाद अंचल में इसे संचालित

करने की बागडोर चौधरी चरण सिंह ने ही संभाली। उन्होंने अपनी पुस्तक "इकोनोमिक नाइटमेयर ऑफ इंडियाःइट्स कॉजेज एंड क्योर" में जाति-प्रथा की बुराई का जिक्र करते हुए लिखा है कि–

"···जाति प्रथा के कारण ही भारत के विभिन्न धार्मिक समूह सामाजिक और राजनैतिक रूप से एक दूसरे के समीप नहीं आ सके तथा एक सुदृढ़ समाज का निर्माण नहीं हो सका।"

चौधरी चरण सिंह ने राजनीति के साथ-साथ एक स्वतंत्र विचारक और मौलिक लेखक के रूप में भी अपनी प्रतिभा दिखाई। आर्थिक और राजनैतिक मामलों में वे महात्मा गांधी को अपना गुरू मानते थे। इसीलिए उनका आर्थिक चिंतन गांधीजी के अधिक करीब दिखाई पड़ता है। उनकी आर्थिक नीति ग्रामोन्मुखी थी । चौधरी साहब ग्राम्य विकास के लिए कुटीर एवं लघु उद्योगों को अत्यंत महत्वपूर्ण मानते थे और अर्थव्यवस्था के विकेंद्रीकरण की बात कहते थे। सन् 1982 में लिखे अपने एक लेख में उन्होने स्पष्ट रूप से लिखा था कि–

"गरीबी से बचकर समृद्धि की ओर बढ़ने का एक मात्र मार्ग गांव तथा खेतों से होकर गुजरता है।"

इस बारे में दो राय हो ही नहीं सकती कि देश के किसानों में नई जागृति पैदा करने,उनमें आत्म-सम्मान और आत्म-गौरव की भावना जगाने तथा उन्हें सामाजिक दृष्टि से महत्व प्रदान करने हेतु चरण सिंह जी ने अथक एवं सफल प्रयास किया। उनके नेतृत्व और संगठनात्मक प्रयासों के कारण किसान और पिछड़े वर्ग के लोग संगठित होकर देश की मुख्य धारा में आ गये।

चौधरी साहब की सबसे बड़ी चिंता यही थी कि लोगों में व्याप्त गरीबी को किस प्रकार दूर किया जाए। जीवन पर्यन्त वे इन्हीं प्रयासों में लगे रहे। देश के राजनेताओं को भी वे इस बारे में निरंतर सचेत करते रहे। जुलाई,1979 में प्रधानमंत्री का पद ग्रहण करने के बाद चौधरी साहब ने कहा थाः

"इस देश के राजनेताओं को याद रखना चाहिए कि····· ( उनके लिए) इससे अधिक देशभक्तिपूर्ण उद्देश्य और कुछ नहीं हो सकता कि वे यह सुनिश्चित करें कि कोई भी बच्चा भूखे पेट नहीं सोयेगा,किसी भी परिवार को अपनी अगले दिन की रोटी की चिन्ता नहीं होगी तथा कुपोषण के कारण किसी भी भारतीय के भविष्य और उसकी क्षमताओं के विकास को अवरूद्ध नहीं होने दिया जाएगा।"

स्वतंत्रता सेनानी, प्रशासक, प्रसिद्ध संसदविद,केन्द्र और राज्य में मंत्री के रूप में तथा अन्ततः भारत के प्रधानमंत्री के गौरव पूर्ण पद पर कार्य करते हुए चौधरी चरण सिंह ने हम सबके मानस पटल पर अमिट छाप छोड़ी है।

चौधरी चरण सिंह जी की जो बात मुझे सबसे अधिक प्रभावित करती थी, वह यह कि वे हमारे देश की जमीन से जुड़े हुए थे। उन्हें इस देश की अस्मिता की गहरी

पहचान थी तथा यह उनके व्यवहार और चिंतन में लगातार व्यक्त भी होती रही। सरल वेशभूषा, सादगीपूर्ण जीवन तथा सहज व्यवहार अंत तक उनके जीवन का अभिन्न अंग रहा, भले ही वे देश के कितने भी महत्वपूर्ण पद पर क्यों न रहे हों। उनसे मिलकर बातचीत करने में एक आत्मीयता का एहसास होता था। वे अत्यंत खुले चरित्र के व्यक्तियों में से थे। वे मन में किसी भी तरह का दुराव-छिपाव नहीं पालते थे। वे जो कुछ भी सोचते थे, वही कहते थे और जो कुछ कहते थे, वही करते भी थे। चौधरी साहब एक निर्भीक चरित्र वाले साहसी व्यक्ति थे। अपनी बात को कहने में न तो वे लाग-लपेट का सहारा लेते थे और न ही हिचकते थे। वे बहुत ही स्पष्ट बात कहते थे। उनकी यह निर्भीकता और साफगोई हमारे यहां के आम किसान के चरित्र का प्रतिनिधित्व करती थी। इसलिए मैं उन्हें देश की जड़ों से जुड़ा हुआ राजनेता मानता हूँ।

चौधरी चरण सिंह एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थे। हमारी आजादी की लड़ाई के दौरान जितने भी प्रमुख आंदोलन हुए, उन सभी में उन्होंने बढ़-चढ़कर भाग लिया था। आजादी की लड़ाई के एक सच्चे सिपाही की तरह वे राष्ट्र की सेवा के लिए कुछ भी त्याग करने को हमेशा तत्पर रहते थे। वे सही अर्थों में गरीब किसानों के महान शुभचिंतक थे। उनमें गांव तथा कृषि की समस्याओं की गहरी समझ थी। इसलिए उनके आर्थिक चिंतन में किसानों की व्यावहारिक समस्यायें तथा उनकी स्थितियों के प्रति चिंता साफ-साफ झलकती है। जब भी चौधरी साहब को अवसर मिला, वे किसानों के हित में कदम उठाने में कभी नहीं चूके।

उत्तर प्रदेश में सन् 1952 में पारित जमींदारी उन्मूलन एवं भूमि सुधार विधेयक की मुख्यमंत्री गोविन्द बल्लभ पंत जी तथा अन्य लोगों ने काफी प्रशंसा की थी। अमरीकी अर्थशास्त्री वुल्फ ए. लैडजिंस्की ने भारत के योजना आयोग को प्रस्तुत एक रिपोर्ट में इस विधेयक की जो प्रशंसा की थी, उसे मैं चौधरी साहब की प्रशंसा ही मानता हूं। लैडजिंस्की ने कहा था, "वास्तव में·····उत्तर प्रदेश····· एक ऐसा राज्य है,जहां बहुत सोचा-समझा व व्यापक कानून पारित किया गया है और इसे असरदार ढंग से लागू किया गया है। वहां लाखों काश्तकारों को, जो जमीन से बेदखल कर दिए गए थे,उनके अधिकार वापस दिए गए हैं"। इस क्रांतिकारी विधेयक ने पूरे देश के लिए प्रेरणा का काम किया। सही मायने में भारतीय किसानों को ऐसे नेतृत्व की जरूरत थी, जिसके संकेत पर किसान कृषि के क्षेत्र में विज्ञान और तकनीक को अपना सकें। चौधरी चरण सिंह के रूप में उन्हें ऐसा ही नेतृत्व मिला।

केवल इतना ही नहीं, बल्कि चौधरी साहब ने भारतीय किसानों तथा पिछड़ी जातियों में राजनैतिक चेतना जागृत करने का अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य किया। चौधरी साहब दलित लोगों के हिमायती थे। उन्होंने अपने मुख्यमंत्रित्व काल में इस वर्ग को पर्याप्त प्रतिनिधित्व दिया और उन्हें राजनीति में आगे लाए।

उन्होंने देश की आर्थिक स्थितियों पर कई पुस्तकें तथा अनेक लेख लिखे हैं, जिनमें उन्होंने स्वतंत्र रूप से अपनी बातें कहीं हैं। उन्होंने सन् 1982 में लिखे अपने लेख "भारत का बिगड़ता स्वरूप" में स्पष्ट रूप से लिखा था कि हमें ग्रामीण क्षेत्रों को प्राथमिकता तथा कृषि को केंद्र बनाकर कुटीर उद्योग तथा कृषि की ओर वापस लौटना होगा"। आजादी के पहले अंग्रेजी शासन ने भारत की अर्थव्यवस्था के आधार कृषि और कुटीर उद्योग-दोनों को तोड़ कर देश को कमजोर किया था। चौधरी साहब इसी दुर्बलता को समाप्त करके भारतीय अर्थव्यवस्था को पुनः सुदृढ और प्रगतिशील बनाना चाहते थे। चौधरी साहब चाहते थे कि किसानों का शोषण जनतांत्रिक तरीके से समाप्त किया जाए तथा गांधीवादी तरीके से देश का विकास किया जाए।

आर्थिक विषय के साथ-साथ उन्होंने देश की सामाजिक और राजनैतिक समस्याओं पर भी अपने विचार व्यक्त किए हैं। चौधरी साहब जाति प्रथा को एक सामाजिक बुराई मानते थे। पंडित नेहरू को 26मई, 1954 को लिखे एक पत्र में चौधरी साहब ने कहा था कि "इसने(जाति प्रथा ने) न केबल हमारे सार्वजनिक जीवन की उच्चतम पहुंच तक ही प्रहार किया है, बल्कि सेवाओं को भी प्रभावित किया है। इससे विभेद और अन्याय बढ़ता है। इससे विकृतियां बढ़ती हैं, आदमी के दिल और दिमाग में संकीर्णता आ जाती है तथा दोषारोपण और प्रतिदोषारोपण का दुष्चक्र पैदा हो जाता है और समाज में अविश्वास तथा संदेह की भावना भर जाती है"। चौधरी साहब की इस चेतावनी को याद रखने की जरूरत है।

चौधरी चरण सिंह जी की एक और बात जो मुझे अपील करती है, वह यह है कि वे अपने उसूलों पर अडिग और अटल रहते थे। उनकी ईमानदारी और कर्त्तव्यनिष्ठा जगजाहिर थी। इसी कारण उनके व्यक्तित्व में एक प्रकार की विलक्षण दृढ़ता थी। नैतिक मूल्यों से वे हमेशा जुड़े रहे और इसलिए वे इतने अच्छे प्रशासक भी सिद्ध हो सके। आरम्भ से ही उनकी छवि एक कर्मठ, कुशल और सत्यवादी नेता के रूप में बन गई थी। वे जिस-जिस पद पर रहे, वहां-वहां उन्होंने अपने व्यक्तित्व की छाप छोड़ी । वे इतने गतिशील ऊर्जा के धनी थे कि उनकी उपस्थिति से ही संबद्ध विभाग को उचित दिशा मिल जाती थी।

मैं ऐसे महान देशभक्त के जीवंत और ऊर्जावान व्यक्तित्व के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

2

# खूबियां-ही-खूबियां थीं उस इंसान में

ज्ञानी जैल सिंह*

चौधरी चरण सिंह एक स्वतंत्रता सेनानी और महान देशभक्त थे। वह इतिहास पुरुष थे। शेख फरीद ने कहा है–

जैसी लागी पेड़ पै, जो तैसी निबहै ओर।
हीरा किसका बापरा,पुजे न रतन करोर॥

अर्थात् जिन लोगों की जिन्दगी में कुछ आर्दश बन जाते हैं और वह जड़ से लेकर आखिरी पत्ती-पत्ती तक खत्म नहीं हो जाते, उनको निभा देते हैं, तो उनके मुकाबले में हीरा तो क्या, करोड़ों रतन भी नहीं पहुंचते।

चौधरी चरण सिंह जी का जीवन,उनका देशभक्ति का जज्बा, उनकी ईमानदारी एक मिसाल है। वह हमेशा गरीब लोगों के कल्याण के लिए चिंतित रहते थे। आज चौधरी साहब हमारे बीच नहीं हैं। हमें उनकी खूबियों से प्रेरणा लेनी है। भारतवर्ष के चेहरे पर रौनक नहीं आ सकती, जब तक भारत के किसान के चेहरे पर रौनक नहीं आती। वह रौनक कैसे आयेगी, उसकी मायूसी कब मिटेगी, इसके लिए हमें सोचना होगा।

किसान ट्रस्ट जिसके चौधरी साहब संस्थापक अध्यक्ष थे, उनका जन्म-दिन मनाता है। लेकिन मेरा मानना है कि चौधरी साहब का जन्म दिवस देश की हर ग्राम पंचायत को मनाना चाहिए। वह पंचायतें चाहे किसी भी पार्टी की क्यों न हों, मैं समझता हूं कि वह चौधरी साहब को उस दिन जरूर याद करेंगी।

यहां एक वाकया बताना चाहता हूं। चौधरी साहब के जन्म-दिन पर आने के लिए मुझे संसद सदस्य श्री सत्यप्रकाश मालवीय जी से निमंत्रण मिला। उन्होंने आकर मुझसे कहा, तो मैंने तत्काल निमंत्रण स्वीकार कर लिया। उन्होंने अखबार में भी मेरा नाम दे दिया,वह छप भी गया। अखबार पढ़ने के बाद कुछ दोस्त मेरे पास आये और

* भारत के दिवंगत भूतपूर्व राष्ट्रपति

बोले, "आप इस जन्म-दिवस समारोह में जा रहे हो",मैंने कहा, "हां जा रहा हूं। उन्होंने कहा, "चौधरी साहब के जन्म-दिन पर क्यों जा रहे हो।" मैंने कहा कि "मैं जा रहा हूं।" तब वे बोले कि "आप तो किसी पॉलिटिकल पार्टी के फंक्शन में जाते नहीं हो।" तब मैंने कहा, "इसका आयोजन एक संस्था कर रही है, जिसका नाम 'किसान ट्रस्ट' है। उसमें सभी लोग जायेंगे। मेरा ख्याल है उसमें मुझे भी जाना चाहिए। जो लोग चौधरी साहब के निकट सम्पर्क में रहे हैं,जानकार हैं, या उनके साथ काम किया है,उन सभी को उसमें जाना चाहिए। इसमें बुराई क्या है।" इस पर मेरे एक नजदीकी मित्र, जो हर बात से परिचित हैं, ने कहा, "आपको मालूम है कि आपके खिलाफ जो मुकदमे रजिस्टर हुए थे, वह सब चौधरी साहब ने ही करवाये थे।" मैंने कहा, "मुझे याद है, चौधरी साहब उस समय गृहमंत्री थे,उनके पास अर्जी गयी, उन्होंने आदेश कर दिये।"अन्ततः मैंने अपने मित्र से कहा कि मैं तो उस जन्म-दिन वाले कार्यक्रम में जरूर जाऊंगा।

मुझे याद आया कि उस समय (आपातकाल के बाद) पंजाब में मेरे खिलाफ 4-5 मुकदमे दर्ज हो गए थे। चौधरी साहब के हुक्म से ही मेरी बजारत टूट गयी थी, क्योंकि हम आपातकाल के समर्थक थे ,अतःबजारत टूटनी ही थी। मैंने तब एक पत्र प्राइम मिनिस्टर मोरारजी भाई को लिखा। मैं जाकर उनसे मिला। पत्र में मैंने लिखा था, "मोरारजी भाई, मैं आपसे यह कहना चाहता हूं कि जब देश आजाद हुआ,तब से लेकर अब तक जो लोग डिप्टी मिनिस्टर,मिनिस्टर रहे, उनकी जायदाद की जांच करवा लीजिए। अगर पांच गुना-दस गुना हो गयी हो, तो माफ कर दीजिए। मेरी भी जायदाद की जांच करवा लीजिए, यदि दुगुनी भी हो गई हो, तो सजा दे दीजिए।" तब उन्होंने कहा, आप चौधरी चरण सिंह से मिल लीजिए। मैंने कहा कि वह तो आपके गृहमंत्री हैं। तब मोरारजी भाई ने कहा कि यदि आपको कोई परेशानी हो, तो आपको मैं मिलवा दूंगा। इस पर मैंने कहा कि मैं उनसे खुद जाकर मिल लूंगा, क्योंकि वह भी गांव के हैं, मैं भी गांव का हूं, कोई परेशानी नहीं होगी।

अगले दिन में उनसे मिलने गया। वह ब्रेकफास्ट कर रहे थे। मुझसे भी कहा लेकिन मैंने कहा मैं तो ब्रेकफास्ट करके आया हूं। हम आकर आफिस में बैठ गए। मैंने उन्हें अपनी अर्जी दी। उन्होंने पढ़ी और बोले कि अब आपको कुछ तकलीफ हो रही है। आप लोगों ने हमारे साथ क्या किया था।मैंने कहा कि चौधरी साहब मैंने तो आपके साथ कुछ नहीं किया। वे बोले, "आप लोगों ने 19 महीने हम लोगों को जेल में रखा।" तब मैंने कहा कि मैंने तो केवल चन्द्रशेखर जी को ही जेल के अन्दर रखा था। आप उनसे पूछ लीजिए, यदि वह कहें तो मुकदमा दर्ज करवा दीजिए। चौधरी साहब बोले कि इमर्जेंसी इंदिरा जी ने लगायी थी, आप थे न उनके साथ? मैंने कहा, 'हां' तो बोले—आपका भी इरादा था। मैंने कहा—हां मैं समझता था कि आप लोग बदअमनी फैला रहे हैं, आपको पकड़ना चाहिए, तो वे बोले कि ठीक है।

मैंने कहा कि चौधरी साहब यह ठीक नहीं हुआ। हमने आपके खिलाफ मुकदमा तो दर्ज नहीं किया था। हमने तो आपको एन.एस.ए. के तहत अंदर किया था,तो बोले-ऐसे ही कर दें। मैंने कहा कि चौधरी साहब आप हमको 24 महीने रखिए। आप तो उन्नीस महीने ही रहे। बोले इसका क्या नतीजा होगा? मैंने कहा कि- चौधरी साहब, नतीजा तो सामने है। हमने आपको 19 महीने अन्दर रखा था। आप गृहमंत्री बन गए। आप हमें 24 महीने अंदर रख लीजिए। जहां आप बैठे हैं वहां हम लोग और जहां मैं बैठा हूँ, वहां आप बैठे होंगे लेकिन चौधरी साहब ने मेरी बात का बुरा नहीं माना और बोले– भई, मैं पंजाब गवर्नमेंट से बात करूंगा कि वह कोई झूठा मुकदमा न बनाये। इसके बाद हम लोग दूसरी बातें करने लगे। अनाज के भाव के बारे में मेरी व चौधरी साहब की एक राय हुआ करती थी।

एक बात और बताना चाहता हूं, चौधरी साहब ने गृहमंत्री के नाते राज्यों की विधान सभाएं भंग कर दी थीं। बाद में जब वह प्रधानमंत्री बने,तब हम लोग उनकी मीटिंगों में जाया करते थे। उम्मीद थी कि समर्थन बना रहेगा। लेकिन उस स्पष्ट आदमी को क्या कहूं कि वह समर्थन लेने को तैयार नहीं। वह कहते थे कि हमें तुम्हारा समर्थन नहीं चाहिए, जबकि समर्थन की उन्हें जरूरत थी लेकिन वह अपने उसूलों पर डटे थे। कुल मिलाकर मैं कहना चाहता हूं कि वह राजनीतिज्ञ ही नहीं बल्कि एक बहुत बड़े इंसान भी थे।

इत्तेफाक की बात कि चुनावों के बाद मैं गृहमंत्री बन गया। जो उनका सरकारी पी. ए. था, वह मेरा भी पी. ए. था। मेरे आदमियों ने मुझसे कहा कि यह तो जनता सरकार का पिट्ठू है। इसको हटाओ, लेकिन मैंने यह समझकर कि अच्छा आदमी है, ईमानदार है, उसे रहने दिया। जब विधान सभाओं को भंग करने का सवाल आया तो मैंने उससे कहा कि सरकार ने नौ विधान सभाएं भंग करने का फैसला किया है, आर्डीनेंस तैयार कीजिए। तब उसने कहा कि अभी लाया। मैं समझता था कि कान्स्टीट्शन आदि के हवाले से देखने के बाद आर्डीनेंस बनाने में समय लगेगा, लेकिन वह तो तुरंत एक उसी आर्डीनेंस की कॉपी ले आया जो चौधरी साहब ने अपने समय में विधान सभाओं को भंग करने के लिए तैयार करवाया था। जब मैंने उसको देखा तो वह बहुत बढ़िया इबारत में तैयार किया हुआ था। बस उसमें राज्यों के नाम बदलने थे। बाकी उसमें कहीं भी कोई कमी नहीं थी, क्योंकि वह चौधरी साहब ने बनवाया था।

जब यह बात संसद की कार्यवाही में आ गई और मैं लोकसभा जा रहा था, तो चौधरी साहब मुझे बीच में मिल गए। बोले वाह! हमने भी नौ ही तोड़ी थीं और आप भी नौ ही तोड़ रहे हो। तब मैंने कहा, चौधरी साहब, मैं इसका जवाब लोकसभा में ही दूंगा। जब लोकसभा में मैंने अध्यादेश पेश किया, तो कहा कि हम जनता सरकार की हर बात रद्द नहीं करेंगे। उन्होंने कुछ ऐसी रवायत पैदा की हैं, जिन

पर हम भी अमल करेंगे। मैं यह जानता हूं कि वह मजाक को मजाक समझते थे, असलीयत को असलियत। इतनी खूबियां थीं उस इंसान में। वह किसी बात पर वक्त निकालने के लिए डिप्लोमेसी नहीं करते थे। वह बहुत साफ दिल थे। उनकी जिन्दगी हमारे लिए एक मिसाल है।

मुझे नागपुर अधिवेशन में चौधरी साहब का प्रेरणादायक भाषण सुनने का मौका मिला था। उस समय मैं भी सांसद था व कांग्रेस कार्य-समिति का सदस्य भी। अधिवेशन में पंडित जी ने प्रस्ताव जो सहकारी खेती पर था, पेश किया। चौधरी साहब ने उसका जोरदार विरोध किया। विरोध के पक्ष में तर्क और तथ्य के साथ देश की स्थिति का भी उन्होंने हवाला दिया। चौधरी साहब के एक घंटा के धारा प्रवाह भाषण को पंडित जी ने बड़े ध्यानपूर्वक सुना और वे मुस्कराये। मैं तो चौधरी साहब के भाषण को सुन कर मंत्रमुग्ध हो गया। पंडित जी के प्रस्ताव पेश करते समय अधिवेशन के पंडाल में जो धड़ाधड़ तालियां बज रहीं थीं, चौधरी साहब के भाषण के बाद ऐसा लगता था कि पासा ही पलट गया है। पंडित जी ने भोजनावकाश के बाद चौधरी साहब की बात का उत्तर दिया। हम लोगों को तो पंडित जी का उनकी बात से सहमत न होते हुए भी समर्थन करना पड़ा, क्योंकि पंडित जी की पर्सनैलिटी का असर ही ऐसा था। हां, इतना मैं जरूर कहूंगा कि यदि पंडित जी की जगह मैं होता, तो चौधरी साहब के सामने अपना बचाव नहीं कर पाता।

मेरा कहना है कि किसी भी पार्टी में रहो,कभी यह नहीं भूलना चाहिए कि हम देश के लिए हैं, देश हमारे लिए नहीं। पार्टी देश के लिए, देश पार्टी के लिए नहीं। जब देश के लिए पार्टी कुरबान होने को तैयार नहीं तो पार्टी के लिए देश को कुरबान क्यों किया जाय? हमें गर्व है कि ऐसे महापुरुष ने इस जमीन पर जन्म लिया। ऐसे महापुरुष के बताए रास्ते पर चलने का संकल्प लें, यही उनके प्रति हमारी श्रद्धांजलि होगी।

3

# एक आदर्श पुरूष थे वह

पी.वी. नरसिम्हा राव*

भारत के महान पुत्र चौधरी चरण सिंह जी को लोग "चौधरी साहब" के नाम से स्नेह एवं सम्मान देते थे। 23 दिसम्बर के ही दिन सन् 1902 में चौधरी चरण सिंह जी का जन्म मेरठ जिले के एक छोटे से गांव में हुआ था।

चौधरी साहब गांधी जी के सिद्धातों के कड़े अनुपालक रहे। उनके जीवन का उद्देश्य गांधीवादी दर्शन के अनुरूप अनेकानेक ग्रामीण भारतीयों को कुटीर उद्योग एवं कृषि के द्वारा आगे बढ़ाना था। उत्तर प्रदेश में जमींदारी उन्मूलन में उनका सर्वाधिक योगदान रहा और इसी के चलते देश में जमींदारी उन्मूलन तथा भूमि सुधार कार्यक्रमों को एक नई दिशा मिली। चौधरी साहब महसूस करते थे कि खेती पर काश्तकारी की व्यवस्था रहने से उसका विकास नहीं हो सकता बल्कि खेती पर मालिकाना हक मिलने मात्र से ही भारतीय किसान एंव खेतिहर मजदूर देश के आर्थिक विकास में उत्साही भागीदार की भूमिका निभा सकते हैं। इस दिशा में जमींदारी उन्मूलन एवं भूमि सुधार के नये तरीकों से ही गरीब खेतिहरों को सामाजिक न्याय मिल सकता है।

चौधरी साहब ने अनेक पुस्तकें लिखीं, जिनमें ग्रामीण औद्योगीकरण एवं ग्रामोन्मुखी स्वायत्तशासी व्यवस्था के सिद्धांत पर बल दिया। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु उन्होंने तकनीकी सुधारों पर भी बल दिया। वह एक महान देशभक्त थे,जो गरीबी हटाने, भुखमरी एवं बीमारी को समाप्त कर भारतीय अवाम के हितों के लिए अथक प्रयत्न करते रहे।

चौधरी साहब आदर्श पुरूष थे। उन्होंने सिद्धांतों के लिए किसी से समझौता नहीं किया। ऐसे अनेक लोग थे जिनसे आपका कभी तालमेल नहीं हो सका, किन्तु लोकतांत्रिक व्यवस्था में मतभेद रखना उसका मूल तत्व है। जो लोग चौधरी साहब

---

* भारत के प्रधानमंत्री

से मतभेद भी रखते थे, वह भी उनके उद्देश्य के प्रति समर्पण एवं ईमानदारी का लोहा मानते थे।

भारत के इस महान सपूत का उज्जवल चरित्र ही सभी पवित्र कार्यों का आधार था। उनके चरित्र एवं जीवन की मूल अवधारणा ही ग्रामीण अर्थनीति एवं ग्रामोन्मुखी विकास के रास्ते को आगे बढ़ाने की थी। उनकी देशभक्ति में पवित्रता हमें अनवरत् प्रेरणा देती रहेगी।

4

# मूल्य-आधारित राजनीति के प्रणेता

विश्वनाथ प्रताप सिंह*

चौधरी चरण सिंह से सम्पर्क का मौका तो मुझे एक ही बार मिला, लेकिन मैं समझता हूं कि उसका प्रभाव मेरे ऊपर जीवनपर्यन्त रहेगा। वह मौका भी मुझे उनकी बीमारी के दौरान मिला। वह इलाज के लिए अमरीका गए थे। इसे संयोग कहिए या मेरी खुशकिस्मती कि मुझे वहां उनके दर्शन का मौका मिला। उन दिनों मैं सरकारी काम से अमरीका गया हुआ था, इसलिए मैं अस्पताल में उनसे मिलने गया। उस समय वह अधिक समय तक बात नहीं कर पाते थे, बहुत थोड़ी बात कर पाते थे। डाक्टरों ने भी ज्यादा बात करने की मनाही की थी। काफी देर के बाद मुझसे केवल यही कह सके थे कि- इस देश का क्या होगा! इसके बाद उनकी आंखों से आंसुओं की धारा फूट पड़ी। उनके इस एक ही वाक्य में पीढ़ी की पूरी वेदना, पूरा दर्द छिपा हुआ था।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान आजादी के दीवानों ने, उस पीढ़ी ने जो सपने संजोये थे, उनके बिखरने का दर्द चौधरी साहब के दिल में उस समय भी था, जब वह इलाज के लिए विदेश में गए हुए थे और अस्पताल में भर्ती थे। उस समय उनके मन में आने वाली पीढ़ी से यह उम्मीद थी कि वह आजादी की लड़ाई में अपना सब कुछ कुर्बान कर देने वालों के सपनों को बिखरने से रोकने का हरसंभव प्रयास करेगी। मैंने उनकी आंखों में गांव के खेत, खलिहान और उनकी आशाओं को धुंधलाते हुए देखा था। इसलिए मेरा कहना है कि देश, देश के गरीब,मेहनतकश किसान-मजदूर के लिए जो टीस चौधरी साहब के मन में थी, यदि उसे हमने सही मायनों में नहीं पहचाना, तो उनकी आशाएं पूरी नहीं होंगी।

आज यदि हम चौधरी साहब के जीवन के कुछ पक्षों पर गौर करें तो जन-जीवन और देश की आर्थिक-सामाजिक व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में, मैं समझता हूं कि वे सबसे मूल्यवान चीजें होंगी। जनजीवन में उन्होंने जो मूल्यों की मर्यादा रखी, यह हमारे लिए

---

* भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री

महत्वपूर्ण ही नही, अमूल्य भी है। आज यदि हमारी जनतांत्रिक संस्थाओं का ह्रास होना है, तो इसका कारण मूल्यों की राजनीति का ह्वास होना है। इसे रोकने के लिए हमें सबसे पहले मूल्यों की स्थापना करनी होगी। इस पुनीत कार्य में हमें चौधरी साहब के जीवन से प्रेरणा मिल सकती है, ज्योति मिल सकती है और रास्ता मिल सकता है।

'जमींदारी उन्मूलन' उनकी सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। जमींदारी उन्मूलन जैसा बड़ा काम उन्होंने इस दृष्टि के तहत किया, कि जो देश की उत्पादक शक्तियां हैं, उन्हें उनके फल के साथ जोड़ा जाय। यदि इन उत्पादक शक्तियों को उनके श्रम के, फल के साथ नहीं जोड़ा जाता, तब तक समाज में शोषण खत्म नहीं किया जा सकता। देश के मेहनतकश किसान को व्यवस्था के शोषण से बचाने के लिए चौधरी साहब ने जो काम किया, वह एक आर्थिक-सामाजिक क्रांति का सबूत है। यदि इस काम को हमें आगे बढ़ाना है, तो यह तभी संभव है जबकि हम मेहनतकश किसान-उत्पादक वर्ग को उनके श्रम का उचित फल दिलायें और लूटखोरों के शोषण से बचाकर न्याय दिला सकें।

उन्होंने देश की नब्ज पहचानी। उनका मानना था कि भारत गांवों में बसता है। गांव, जो देश की रीढ़ हैं, वहां रहने-बसने वाला किसान जो उत्पादन करता है, यदि उसके उत्पाद के मूल्य में एक प्रतिशत वृद्धि होती है, तो वह जो सामान बाजार से खरीदता है, उसके मूल्य में उसके उत्पाद के मुकाबले कई गुणा वृद्धि हो जाती है। मूल्य वृद्धि का आंकलन किया जाय और किसान की स्थिति का जायजा लिया जाय, तो पता चलता है कि किसान की हालत में कोई बदलाव नहीं आया है। यह हालत आज भी है। इस बात को चौधरी साहब ने जाना। तभी उन्होंने कहा था कि जब तक गांव खुशहाल नहीं होंगे, किसान की हालत नहीं सुधरेगी, तब तक देश खुशहाल नहीं होगा। उन्होंने राष्ट्रीय पूंजी यानी बजट का पचास फीसदी हिस्सा खेती पर लगाने पर बल दिया था।

चौधरी साहब ने लोकतंत्र की सबलता के लिए जनशक्ति के सबल होने पर बल दिया। वह मानते थे कि जनशक्ति अगर मजबूत है, तो सरकार गलत काम नहीं कर सकती और करेगी, तो वह टिकाऊ नहीं रह पायेगी, उखड़ जायेगी। मेरा भी यही मत है कि सत्तापक्ष और विपक्ष दोनों के लिए यह जरूरी है कि जनपक्ष मजबूत हो और यदि जनपक्ष मजबूत होगा तो सत्तापक्ष तो क्या, विपक्ष भी गलत काम या देशहित के विरूद्ध कोई कदम उठाने का साहस नहीं कर पायेगा। यह कमी रही है, इसमें कोई दो राय नहीं है कि जब जनपक्ष कमजोर रहता है तो पक्ष और विपक्ष दोनों पर कोई अंकुश नहीं रहता और वह बागी हो जाते हैं। इस तरह की चेतना जगाने का श्रेय चौधरी साहब को ही जाता है।

चौधरी साहब आज हमारे बीच नहीं हैं लेकिन मुझे यह आशा है और विश्वास भी, कि उन्होंने जो रास्ता हमें दिखाया है, उस पर चलकर हम उनके सपनों का नया भारत बनाएंगे।

5

# बेबस आदमी के संघर्ष के प्रतीक

चंद्रशेखर*

चौधरी चरण सिंह की जब हम बात करते हैं, तो हम उस मंत्र को याद करते हैं जो गांधी जी ने दिया था और जिसे चौधरी साहब ने अपने जीवन में उतारा था। भारत के विकास का पथ भारत के गांवों, खेत और खलिहानों से होकर गुजरता है। अगर देश को विकसित करना है, तो खेत-खलिहानों को सरसब्ज बनाना होगा, किसानों के दिल में एक नया आत्म-विश्वास पैदा करना होगा। गुलामी के दिनों में देश की आजादी के लिए चौधरी साहब ने संघर्ष किया था, बाद में आजादी को गरीब की झोपड़ी तक पहुंचाने के लिए उन्होंने संघर्ष किया।

उस कल्पना को साकार करने के लिए हमारे शहीदों ने एक नए भारत की कल्पना की थी, ऐसा भारत जिसमें कोई बेबस न हो, लाचार न हो, जिसमें बेबसी और वैभव का विभेद न हो, अन्तर न हो, जहां गांव की गलियों में अंधियारा न हो, शहरों की चकाचौंध से लोगों की आंखे चौंधिया न जायें-इस समता को लाने के लिए चौधरी साहब ने अपना जीवन उस किसान की जिन्दगी से जोड़ा था जो आज भी बेबस है। जब चौधरी साहब किसान की बात करते थे, तो किसान एक प्रतीक था। वह प्रतीक था बेबसी का, शोषण का, वह प्रतीक था उस दमन का, जिस दमन के सहारे आज का समाज चल रहा है। एक नया समाज बनाने का सवाल केवल नारे का सवाल नहीं है, एक नया जीवन-दर्शन है, एक नयी जिन्दगी जीने का तरीका है जिस जिन्दगी में मेहनत करने वाला अपनी मेहनत का प्रतिफल पायेगा।

उत्तर प्रदेश में चौधरी साहब ने ज़मींदारी उन्मूलन जैसा महत्वपूर्ण काम तब किया,जब वह वहां के माल मंत्री थे। जमीन से किसान का क्या रिश्ता हो, इसकी शुरूआत, मैं कहूं कि सारे भारत में विकास के लिए, सुधार के लिए चौधरी चरण सिंह ने की, तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। मुझे याद है कि जनता सरकार

---

* भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री

के समय जब वह पहली बार गृहमंत्री और वित्तमंत्री बने, तब यह निर्णय लिया गया कि दिल्ली के खजाने में जो पैसा है, उसका चालीस फीसदी गांव के विकास पर खर्च होगा, किसान की झोपड़ी में जायेगा। यह बड़ा महत्वपूर्ण नीति-विषयक सवाल था,यह एक आर्थिक दर्शन था जिसको चौधरी चरण सिंह ने समझा था। अपनी पुस्तक "इकोनॉमिक नाइटमेअर ऑफ इंडियाःइट्स कॉजेज एण्ड क्योर" में उन्होंने भारत की दुर्दशा का वर्णन करते हुए लिखा है कि किस तरह दौलत पैदा करने वाला अपने को बेबस समझता है और उसकी मेहनत पर किस तरह थोड़े से लोग धन का संचय करके बड़े लोग बन जाते हैं। उनका कहना था कि जो मेहनत करे, वह अपनी मेहनत की कमाई पाये। मान लीजिये कि उसकी जिन्दगी में वह सुनहरा प्रभात न आये, तो कम से कम उसे यह विश्वास तो आए कि उसका बच्चा, जो आज मासूम है, आज से दस-बीस वर्ष बाद जब जीवन के कर्मक्षेत्र में पैर रखेगा, अपना पहला चरण रखेगा, तो समता के समाज का दर्शन कर सकेगा।

बड़े दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि जो शहीदों की, बलिदानियों की इस भावना को समझता है, जो खेत-खलिहानों से उठती हुई आह को सुनता है, जिसे चौधरी चरण सिंह ने अपनी जिन्दगी में देखा और परखा था,उसके मन में एक बेबसी का आभास होगा,उसके मन में एक पीड़ा होगी कि आज आजादी के चार दशक बाद भी वे सपने, सपने ही रह गए। जिन लोगों ने इन सपनों को लेकर आजादी की लड़ाई लड़ी और जिन लोगों ने समाज को बदलने के लिए संघर्ष किया, उन लोगों में अगली कतार में चौधरी चरण सिंह जी थे। इसीलिए मैं चौधरी चरण सिंह जैसे व्यक्तित्व के चरणों में नत-मस्तक होकर प्रणाम करता हूं और मैं आशा करता हूं कि न केवल हम उनकी जिन्दगी के सुनहरे हिस्सों को देखेंगे, न केवल यह याद करेंगे कि वह प्रधानमंत्री थे, न केवल यह याद करेंगे कि वह कभी मुख्यमंत्री और भारत सरकार के गृह व वित्त मंत्री भी बने थे, बल्कि यह याद करेंगे कि यह वो व्यक्ति था जो एक गरीब, गांव की गलियों से, किसान की झोपड़ी से निकल कर आजादी की लड़ाई के दौर से निरंतर संघर्ष करता रहा। आजादी की लड़ाई के बाद जब वह सत्ता में आया, तब भी उसको राहत नहीं थी, संतोष नहीं था, उसके दिल में वही आग जल रही थी, जो समतापूर्ण समाज से प्रतिबद्ध थी। मुझे दुखः है कि चौधरी चरण सिंह अपनी जिन्दगी में अपने सपनों का भारत नहीं देख सके। हम इस दिशा में दो कदम बढ़ा सकें, यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजली होगी।

6

# हमें मिली उनसे संघर्ष की प्रेरणा

चौधरी देवीलाल*

आज से लगभग पचपन-साठ वर्ष पूर्व की बात है। मैंने अपना बचपन समाप्त कर युवावस्था में प्रवेश किया ही था, तभी मेरा ध्यान देहात में कार्य करने वाले मजदूर किसानों की बेबसी और असहनीय दरिद्रता की ओर गया। जब कभी उन्हें फटे कपड़ों में तन को समेटे, पेट पीठ से चिपका हुआ, बुझे हुए मन से, कड़कती सर्दी, गर्मी व बरसात में काम करते देखता तो बस मन में ही कोलाहल मच जाता।

उस समय तो मेरी यह धारणा थी कि जितने भी अत्याचार हो रहे हैं, उन सबका कारण विदेशी साम्राज्य है। सात समुद्र पार से आये अंग्रेज हमारे देश का खून चूस रहे हैं। धीरे-धीरे समय की आवश्यकतानुसार मैं आन्दोलन में कूद पड़ा। हथकड़ी जेवर बन गयी और जेलखाना घर।

देश में अनेक प्रकार के आन्दोलन हुए,जिनसे मैं प्रभावित हुआ, किन्तु मेरा कार्य-क्षेत्र सदैव ग्रामीण क्षेत्र व किसान ही रहे। कभी भूमि की बेदखली, तो कभी पुलिस के अत्याचारों के विरोध में, किन्तु मैं देहात के लिए लड़ता रहा।

गांधी जी के स्वराज्य का अर्थ ग्रामीण जनता की गरीबी दूर करना था। किन्तु हुआ इसके विपरीत। जब भी देखा, देश का नेतृत्व शहरी सफेदपोशों के हाथ में रहा। इसी कारण मेरा मन उस पथ को खोजने में लगा, जिससे देहाती जनता एवं किसानों को भी स्वराज्य का वास्तविक लाभ मिल सके।

इसी समय उत्तर प्रदेश से एक कृषक क्रांति की आवाज आयी कि किसानों के जीवन में परिवर्तन आना चाहिए । वह आवाज चौधरी चरण सिंह की थी, जो देश भर की देहाती जनता एवं किसानों की उन्नति के लिए जूझ रहे थे, कृषि-अर्थनीति को वैज्ञानिक दृष्टिकोण देने की दिशा में बढ़ रहे थे। मैं चौधरी साहब के विचारों से

* भारत के भूतपूर्व उप प्रधानमंत्री

बहुत प्रभावित हुआ और यहीं से मेरे जीवन को नया मोड़ मिला।

जिस दर्शन के लिए मेरा मन भटक रहा था, वह इस दार्शनिक ने प्रस्तुत कर दिया एवं मेरे लिए एक नई दिशा निर्धारित कर दी।

चौधरी चरण सिंह जी किसानों की समस्याओं को उजागर करने के लिए किसी भी लड़ाई एवं त्याग से नहीं झिझके। आवश्यकतानुसार सरकार में बैठकर आवाज बुलंद की,यदि समय की पुकार हुई तो राजगद्दी का त्याग भी कर दिया।

अपने ध्येय की प्राप्ति हेतु ग्रामीण क्षेत्रों में गये। देश को वहां होने वाले अत्याचारों से अवगत कराया। चकबंदी से लेकर सीलिंग, जोतदारी, कटाई, मालियाना, अलियाना, रहन-सहन, पढ़ाई एवं उन्नति के अवसर, सरकार-संचालन में देहात एवं किसानों की भागीदारी को उन्होंने वैज्ञानिक दर्शन का रूप दे दिया।

चौधरी साहब ने देश में पहली बार अन्तर्जातीय विवाह की बात की, ताकि सामाजिक जीवन से जातिवाद समाप्त हो। ऐसा एक पत्र उन्होंने पं. जवाहरलाल नेहरू को भी लिखा था किन्तु उन्होंने उसका कोई सार्थक उत्तर नहीं दिया।

चौधरी साहब ने अन्याय का सदैव विरोध किया, साथ ही राष्ट्र-हित की बात कहने मे कभी कोई संकोच नहीं किया। अन्याय का विरोध करने वालों के वह प्रेरणा-स्त्रोत रहे हैं। जिस समय हरियाणा में भ्रष्टाचार का दूसरा नाम—भजनलाल गद्दी पर था, तब हमने उसके खिलाफ संघर्ष शुरू किया। राष्ट्रपति को जब हमने ज्ञापन देने का निश्चय किया, तो चौधरी साहब ने हम लोगों की अगुवाई की। इस तरह उन्होंने हमारा हौसला बढ़ाया।

इसके बाद हुआ पंजाब समझौता। जब मैंने यह पाया कि समझौते की धारा 7और 9 हरियाणा के हितों के खिलाफ हैं, तो मैंने विरोध का निश्चय किया। मैं चौधरी साहब के पास पहुंचा और उन्हें बताया कि समझौते की अमुक धाराएं हरियाणा के साथ अन्याय करती हैं, साथ ही यह समझौता हरियाणा को विश्वास में लिये बिना किया गया है, जो राज्य के लिए अपमानजनक है। चौधरी साहब ने सारी स्थिति पर विचार करने के बाद हमारे मकसद में हमारी हौसला आफजाही की, साथ ही हरियाणा के लोकदल विधायकों को आदेश दिया कि वे विधानसभा से इस्तीफा दे दें।

अन्याय को न सहना तथा उसका विरोध करना उनके मिजाज की खूबी थी और उसी के चलते उन्होंने ये फैसले लेने मे कोई देर-अबेर नहीं की। सिद्धांतों के लिए उन्होंने नफे-नुकसान को कभी नहीं देखा।

चौधरी चरण सिंह सार्वजनिक जीवन के साथ व्यक्तिगत जीवन में भी स्वच्छता एवं ईमानदारी के पक्षधर थे। उनका कथन था कि जो व्यक्ति अपने निजी जीवन में सही आचरण नहीं करेगा, वह सार्वजनिक जीवन को भी गंदा करेगा। राजकीय

पदों पर रहते हुए जब-जब उन्हें अवसर मिला, उन्होंने प्रशासन से भ्रष्टाचार मिटाने के लिए भरसक-प्रयास किये। शासन के पद पर उनकी उपस्थिति मात्र से भ्रष्टाचारी तत्व घबराने लगते थे।

ये गुण हैं, जो चौधरी साहब को दूसरे राजनेताओं से अलग करते थे। यही गुण आज भी उनके लिए मन में आदर और सम्मान की भावना पैदा करते हैं।

7

# औरों से अलग थी उनके जीवन की प्रतिमा

शिवराज एन. पाटिल*

श्री चरण सिंह जी का जीवन बहुत ही सादा था। उनके जीवन मे देहात के जीवन की प्रतिमा, आदर्श और गरिमा का दर्शन होता था। वे स्वयं को कृषकों का साथी और मित्र मानते थे। उनके जीवन को सुखी और समृद्ध बनाने में उन्होंने उत्तर प्रदेश में महान कार्य किया था। वही प्रयास देश के स्तर पर भी उन्होंने किया था। उन के आर्थिक विचार महात्मा गांधी जी की आर्थिक विचारधारा से मिलते थे। वे समझते थे कि देहात का उत्थान होने से देश का उत्थान हो सकेगा। उनकी समझ थी कि कृषि की उन्नति में ही देशवासियों की उन्नति है। इन विचारों को वे हमेशा लोगों के सामने रखते थे और उसकी सार्थकता समझाने की कोशिश करते थे।

वे पाश्चात्य विचारों के विरूद्ध नहीं थे। किन्तु उन विचारों को महत्व नहीं देते थे, जितना महत्व अन्य नेतागण देते हैं। इसी वजह से कभी-कभी ऐसा लगता था कि वे नूतन विचारों को, अपनाने के विरूद्ध थे।

उनका राजकीय जीवन घटनाओं से भरा था। उस में उतार-चढ़ाव था, संघर्ष था और कभी-कभी उसमें अप्रियता भी दृष्टिगोचर होती थी। उसमें निचले तबके के लोगों की पीड़ा का भी दर्शन होता था। उनके राजकीय जीवन की अपनी एक प्रतिमा है और वह प्रतिमा औरों की प्रतिमाओं से अलग थी। किन्तु इससे एक बात स्पष्ट होती थी और वह थी उनका दृढ़ निश्चय और संघर्ष करने की तैयारी।

भारतीय समाज में विषमता थी और है। इस विषमता ने अनेकों के मन में तीखेपन को जन्म दिया है, चरण सिंह जी के मन मे तीखापन था या नहीं, यह कहा नहीं जा सकता। परन्तु इस का अहसास उन के मन में जरूर था। इस प्रकार का अहसास अनेकों के मन में हो सकता है। इस अहसास और तीखेपन को कम करने का प्रयास अनेकों ने किया है और अनेकों को करना पड़ेगा। वह एक सीमा के बाहर

---

* लोकसभा अध्यक्ष

न जाए, यह देखने का काम हम सब लोगों का है और वह काम किया जा रहा है और किया जाएगा।

हम किसी के विचारों से लाभान्वित होते हैं। किसी का कार्य हमारा मार्गदर्शन करता है। किसी के दुःख और पीड़ा से हमें पथ प्रदर्शन मिल सकता है। किसी के एहसास से भी हम सीख सकते हैं।

चरण सिंह जी का संघर्ष, उनके मन की पीड़ा और उनके राजकीय पैतरों से भी हमारा समाज, हम सब, कुछ सीख सकते हैं। कुछ पाने का प्रयत्न कर सकते हैं और देश को, समाज को अधिक अर्थपूर्ण, समृद्ध और शक्तिशाली बनाने का प्रयास कर सकते हैं।

# 8

# वे हरदिल अजीज नेता और अमर सख्शियत थे

डा. नजमा हेपतुल्ला*

तारीख जब अपना सफर शुरू करती है तो वो किसी ऐसे इन्सान को अपने लिए चुन लेती है जिसमें वक्त से आंख मिलाने की जुर्रत व हिम्मत हो। हिन्दुस्तान की तारीख को ये फख्र हासिल है कि उसने यहां ऐसे इन्सानों को जन्म दिया जिन्होंने अपने हौसले और इरादों से वक्त की मुश्किल धार को मोड़ दिया। चौ.चरण सिंह एक ऐसे ही हिम्मती इंसान थे। उन्होंने खेतों और खलिहानों से अपनी जिन्दगी शुरू की और उसे तमाम हिन्दोस्तान की जिन्दगी बना दिया। उन्होंने जो हरे-भरे खेतों में ख्वाब देखे थे, उन्हें साकार करने के लिए उन्होंने जर्बदस्त मेहनत की। तपती हुई धूप में काम करने वाले किसान भाई उन्हें उतने ही प्यारे थे जितने कि सरहदों के फौजी पहरेदार,जिनके बाजुओं पर कोई भी देश नाज कर सकता है।

चौ. चरण सिंह जब सियासत के मैदान में आये तो बहुत जल्द वो जनता के एक हरदिल अजीज नेता बन गये। उन्होंने अपनी हिम्मत और मजबूत इरादों से यह साबित कर दिया कि किसानों और खलिहानों के बीच से उठकर आने वाला इंसान एक बेहतरीन सियासत वाला और एक बेहतरीन एडमिनिस्ट्रेटर भी बन सकता है। उन्होंने लाल किले की तारीखी फसील से तकरीर करते हुए कहा था कि–

"एक किसान के लिए यह बात क्या कम है कि वह भारत जैसे देश का प्रधानमंत्री बन जाए।"

उनकी तकरीर का यह जुमला सिर्फ एक जुमला नहीं था, बल्कि यह तारीख की एक सच्ची हकीकत भी था। उत्तर प्रदेश के चीफ मिनिस्टर की हैसियत से हिन्दुस्तान की तारीख में उनका अपना एक मुकाम है।

अर्थव्यवस्था के विकास के लिए चौधरी साहब की अपनी विचारधारा थी। वह शहरीकरण के खिलाफ नहीं थे, मगर वो यह नहीं चाहते थे कि गांव वालों की कड़ी

---

* उपसभापति, राज्य सभा

मेहनत का फायदा उनको न मिलकर सिर्फ शहर वालों को ही मिले। उसके लिए वह गांधी जी के दिखाये हुए रास्ते और आदर्शों पर जिन्दगी भर चलते रहे।

गांव और देहात की तरक्की का उनके जेहन में एक खास मुकाम था। हमें आज भी याद है कि उन्होंने उत्तर प्रदेश में जमींदारी को खत्म करने में जो योगदान दिया और जो कानून पास करवाया, उसकी कितनी एहमियत है और उससे गरीब को कितना फायदा हुआ है। तारीख के पर्दे पर सख्शियतें उभरती और डूबती रहती हैं। लेकिन चौधरी चरण सिंह जी की सख्शियत तारीख का एक हिस्सा बन गयी है। वो हमारे देश की एक खूबसूरत और अमर सख्शियत थे।

9

# एक आडम्बरहीन व्यक्तित्व

जस्टिस एच. आर. खन्ना*

1977 में चौधरी चरण सिंह के निकट सम्पर्क में आने के बाद मुझे उनके अगाध स्नेह की छत्रछाया में काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हालांकि एक-दो अवसरों पर चौधरी साहब को मुझसे शिकायत भी हुई थी लेकिन उन्होंने कभी इस बात को वजन नहीं दिया, न ही मेरे प्रति अपने स्नेह में कमी आने दी। दिल और दिमाग, दोनों स्तरों पर उनमें बहुत सी और बेहतरीन खूबियां थी। उनका स्मरण करते हुए मैं उनके व्यक्तित्व के ऐसे तीन या चार पहलुओं को उजागर करना चाहूंगा।

चौधरी साहब एक विलक्षण क्षमता वाले व्यक्ति थे। यद्यपि उन्होंने भारत के सर्वोच्च पदों यथा-उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री के रूप में, केन्द्र में गृहमंत्री व वित्तमंत्री के रूप में और अन्ततः भारत के प्रधानमंत्री के रूप में देश की सेवा की, फिर भी कभी आर्थिक या अन्य किसी प्रकार के लालचों से पथभ्रष्ट नहीं हुए। वे भ्रष्टाचार, खास तौर पर राजनैतिक भ्रष्टाचार के प्रबल दुश्मन थे और इस रूप में उन्होंने अपनी भरपूर कोशिशों को जीते-जी जारी रखा। आशय यह कि चौधरी साहब राजनीति में फैले भ्रष्टाचार के खात्मे के लिए दृढ संकल्पी व्यक्ति थे। लोकपाल बिल उनकी निगरानी और प्रयास के फलस्वरूप तैयार हुआ तथा संसद में पेश किया गया था, जो एक छोटी सी बहस के बाद चयन समिति द्वारा पारित करने के उद्देश्य से स्वीकृत हो गया था।इस बिल को जल्दी -से-जल्दी पारित करवाने और लागू करवाने की चौधरी साहब की व्यक्तिगत रूप से प्रबल इच्छा थी, इसलिए वह चाहते थे कि बिल को जितना जल्दी हो, कानूनी जामा पहनाया जाए लेकिन तभी कुछ दूसरी घटनाओं के कारण व्यवधान की स्थिति उत्पन्न हो गई और संसद के भंग होने के साथ ही सब किया-धरा अधूरा ही रह गया। सत्तासीन होने वाली बाद की पार्टियों ने उस बिल को बिल्कुल अनमने और बिना किसी गम्भीर प्रयास के संसद में रखा जरूर

---

* उच्चतम न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधीश

लेकिन एक कानून के रूप में बिल पारित करवाने की ऐसी कोशिश कभी नहीं हुई, जैसी कि चौधरी साहब ने की थी।

उनके व्यक्तित्व का दूसरा पहलू भी इतना ही दृढ़ व उज्जवल है। उनके समय में जबकि कुछ बड़ी राजनैतिक हस्तियों की छवि विभिन्न कांडों मे शरीक होने के कारण मलिन हो रही थी,तब भी चौधरी साहब का उदाहरण ताजी हवा के झोंके की तरह हमारे वातावरण में मौजूद रहा, और है।

चौधरी चरण सिंह की दूसरी बड़ी खूबी थी- सादा जीवन-आडम्बर और पाखंड रहित। वे न कभी गर्वोन्मत हुए, न ही उन्हें पद का अहंकार था। एक अवसर पर चौधरी साहब नंगे पांव मेरी कार के दरवाजे तक आये, तो मुझे काफी उलझन की स्थिति का सामना करना पड़ा था। अपने निवास पर वह फर्श पर ही बैठकर अपना लेखन-पठन का कार्य करते थे। जहां उनके सामने केवल एक छोटा सा डेस्क होता था, कुर्सी या मेज नहीं। यहां तक कि बैठक कक्ष में भी साधारण दर्जे का सोफा-सेट, स्वामी दयानन्द,स्वामी विवेकानन्द, गांधी जी और सरदार पटेल सहित तीन या चार पोट्रेट दीवारों पर टंगे होते थे।

चौधरी साहब हिन्दू समाज की जाति व्यवस्था के कट्टर आलोचक थे। उनके अनुसार जातिवादी तत्वों ने हमारे समाज को सर्वाधिक क्षति पहुंचाई है और हमारी राजनीति के लिए यही अच्छा होगा कि जितनी जल्दी हो, जातिवाद को निर्मूल कर इसके कीटाणुओं को फैलने से रोकें। एक बार एक वरिष्ठ पत्रकार,जो उनके चुनावी दौरे के समय चौधरी साहब के साथ था, इस बात से विस्मित था कि तीन या चार दिनों के दौरान उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में चौधरी साहब ने जहां-जहां भी जन-सम्बोधन किया,उन्होंने एक बार भी 'जाट कार्ड' का इस्तेमाल नहीं किया या कहीं भी जातिवादी आधार पर वोट पाने की जुगत नहीं बिठाई।

यद्यपि उन्होंने कभी औद्योगीकरण का विरोध नहीं किया और न ही वे देश के विकास के लिए उद्योगों की आवश्यकता से इन्कार करते थे, लेकिन वह महसूस करते थे कि हमारी ग्रामीण और कृषि अर्थव्यवस्था के समुन्नत विकास के प्रयासों के बगैर सफलता संदिग्ध है। अपनी ओर से चौधरी साहब ने हमेशा ही हमारी अर्थव्यवस्था की खामियों, खाइयों और असन्तुलन को पाटने की भरपूर कोशिश की थी और विकास कार्यक्रमों को निर्धारित किया था।

चौधरी साहब को याद करते हुए उनको विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मैं अन्त में यही कहना चाहूंगा कि चौधरी चरण सिंह वस्तुतः किसानों के मसीहा थे।

10

# कृषक लोकतंत्र के पक्षधर

मधु लिमये*

आगरा और अवध के संयुक्त प्रांत (वर्तमान उत्तर प्रदेश)ने बीसवीं सदी के प्रारम्भ में मदन मोहन मालवीय,तेज बहादुर सप्रू, मोतीलाल नेहरू और वजीर हसन जैसे नेताओं की एक आकाश गंगा को जन्म दिया। लेकिन वस्तुतः गांधी-युग में यह प्रांत अपने उरूज पर आया। असहयोग आन्दोलन के दौरान जवाहरलाल नेहरू, पुरूषोतम दास टण्डन, गोविन्द बल्लभ पंत, आचार्य नरेन्द्र देव, सम्पूर्णानन्द, रफी अहमद किदवई और मोहनलाल सक्सैना जैसे विशिष्ट व्यक्तियों ने ख्याति पाई। जवाहरलाल नेहरू इनमें सबसे बड़े कद के नेता थे। चौधरी चरण सिंह,चन्द्रभानु गुप्ता, कमलापति त्रिपाठी और बनारसी दास इन नेताओं के शिष्य थे, जिन्होंने राज्य में महत्वपूर्ण ओहदे संभाले।

नयी पीढी के नेताओं में चौधरी चरण सिंह सिर्फ सबसे महत्वपूर्ण ही नहीं बल्कि कई मायनों में सबसे ज्यादा असामान्य नेता भी थे। उनके बीच चौधरी चरण सिंह ही ऐसे व्यक्ति थे, जो समाजवादी विचारों से अछूते थे और ये विचार कांग्रेसी नेताओं और उनके अनुवर्तियों के सामान्य गुण थे। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के एक बड़े नेता दादा भाई नौरोजी ने भारत के स्वराज्य के संघर्ष के लिए अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी आंदोलन का समर्थन प्राप्त करने हेतु एम्स्टर्डम में आयोजित सोशलिस्ट इंटरनेशनल की कांफ्रेंस में हिस्सा लिया था, जिसके कारण इंग्लैण्ड में उनके उदारवादी मित्र और भारत में नरम दलवादी साथी उनसे नाराज भी हुए। दादाभाई के इस कदम की प्रशंसा करते हुए लोकमान्य तिलक ने बड़े पूंजीपतियों और जमींदारों द्वारा गरीबों के शोषण के खिलाफ विश्वव्यापी समाजवादी आंदोलन और गुलाम भारत के प्रति इसकी सहानुभूति की बात की थी। तिलक ने यह भी कहा था कि किसी न किसी दिन समाजवादी आंदोलन की निःसंदेह जीत होगी। उन्होंने कहा कि भारत में विदेशी नौकरशाही तंत्र से लड़ने के लिए दुनिया के समाजवादियों से मदद लेने में कुछ गलत

* दिवंगत भूतपूर्व सांसद, प्रख्यात समाजवादी चिंतक तथा संसदविद्

नहीं है। तिलक के अलावा लाला लाजपत राय, सी.आर.दास और दूसरे कई पुराने नेताओं के मन में समाजवादी उद्देश्य के प्रति सहानुभूति थी। महात्मा गांधी ने, जिन्होंने कांग्रेस आंदोलन को स्वरूप प्रदान किया, अपने आपको समाजवादी या साम्यवादी कहा। लेकिन उन्होंने यह स्पष्ट किया कि उनके समाजवाद में हिंसा,राज्यवाद और केन्द्रीकरण लेश मात्र भी नहीं है। जहां तक जवाहर लाल नेहरू और सुभाष बोस का सवाल है, उन्होंने समाजवाद में अपनी आस्था खुले तौर पर घोषित की।

उत्तर प्रदेश की कांग्रेस समाजवादी विचारों से रंगी हुई थी और एक मौलिक कृषि कार्यक्रम के प्रति प्रतिबद्ध थी, जिसमें जमींदारी प्रथा को खत्म करना और राज्य एवं किसानों के बीच से बिचौलियों को समाप्त करना शामिल था। लेकिन यह कुछ आश्चर्य की बात है कि जहां उत्तर प्रदेश के वरिष्ठ नेता और समकालीन लोग समाजवादी विचारों से प्रभावित थे, वहीं चौधरी चरण सिंह इन प्रभावों से पूरी तरह अछूते रहे। मेरी राय में इसके दो कारण हैं। पहला,उनकी प्रेरणा के स्त्रोत सबसे पहले स्वामी दयानन्द और फिर महात्मा गांधी थे। दूसरा कारण यह था कि समाजवादी विचारों से उनका परिचय कभी भी ठीक तरह से नहीं हुआ था। वह एक गैर औद्योगिक क्षेत्र के व्यक्ति थे और उन्होंने मुझसे कई बार यह कहा कि औद्योगिक पूंजीवाद की कार्यप्रणाली के बारे में उन्हें ज्यादा जानकारी नहीं है। बहरहाल, वह बड़े व्यापारियों और एकाधिकारियों के प्रभुत्व के खिलाफ थे। यह उनके और समाजवादियों के बीच एक कड़ी की तरह होना चाहिए था। मगर ऐसा नहीं हुआ और इसका बड़ा कारण यह है कि उनकी सोच का मुख्य विषय औद्योगिक शोषण नहीं,बल्कि कृषि सम्बन्धी समस्या और सामाजिक सवाल थे।

समाजवादी दल जमींदारी प्रथा को खत्म करने के पक्ष में था। जवाहरलाल खुद इसके कट्टर समर्थक थे। चौधरी चरण सिंह के मन में सरदार पटेल के लिए बहुत श्रद्धा थी, लेकिन उन्हें मालूम नहीं था कि सरदार पटेल जमींदारी खत्म करने के पक्ष में नहीं थे। उत्तर प्रदेश में वस्तुतः जवाहरलाल, गोविन्द बल्लभ पंत, पुरूषोत्तम दास टण्डन और समाजवादियों ने कांग्रेस को,इस दिशा में कदम उठाने के लिए मजबूर किया।

जब चौधरी चरण सिंह एक कनिष्ठ मंत्री बने और महान भूमि-सुधार विधेयक विधान मंडल में पारित करवाने की जिम्मेवारी उन्हें सौंपी गयी, तब तक समाजवादी कांग्रेस छोड़ चुके थे और भूमि सुधार के मामले में उन दोनों के बीच सहयोग की कोई सम्भावना नहीं थी।

चौधरी चरण सिंह भूमि सुधार कानून को बिना प्रतिक्रियावादी परिवर्तन के पास करने तथा उसको निष्फल बनाने के निहित स्वार्थों द्वारा किये गए प्रयासों के खिलाफ लड़े। हालांकि हमेशा उनकी चल नहीं पाई किन्तु इसमें संदेह नहीं कि मुख्य रूप से उन्हीं की लगन और समर्पण के कारण उत्तर प्रदेश भूमि-सुधार कानून का प्रगतिशील चरित्र बना रहा।

इसलिए चौधरी चरण सिंह को कुलकों का समर्थक कहना अन्याय है। वह जमीन के स्वामित्व के मामले में असमानता के खिलाफ थे और एक किस्म के कृषि प्रजातंत्र के पक्षधर थे। औद्योगिक क्षेत्र में वह एक ऐसी विकेन्द्रीकृत अर्थ-व्यवस्था के पक्ष में रहे, जिसमें बड़े पैमाने पर तकनीक का प्रयोग सिर्फ उन क्षेत्रों में सीमित हो, जहां उसकी निहायत जरूरत है।

तब समाजवादी कार्यक्रम में ऐसा क्या था, जिस पर चौधरी चरण सिंह का आक्षेप था? इसका कारण जमींदारी खत्म करना नहीं हो सकता था। इसका कारण पूंजीवाद का विरोध नहीं हो सकता था। इसका कारण लोहिया द्वारा छोटी इकाई की तकनीक का समर्थन भी नहीं हो सकता था। मेरी समझ से इसका मुख्य कारण राज्य द्वारा खेती और सामूहिक खेती का समर्थन था, जिससे चौधरी चरण सिंह के बुनियादी मतभेद थे। जवाहरलाल ने बार-बार व्यक्तिगत खेती की जगह सामूहिक और सरकारी खेती पर जोर दिया था। प्रारम्भ के कांग्रेस-समाजवादी कार्यक्रमों ने भी सामूहिक खेती का समर्थन किया, हालांकि बाद में समाजवादियों ने इस कार्यक्रम को त्याग दिया था। लेकिन चौधरी चरण सिंह को समाजवादियों की नयी सोच और उनके द्वारा अपने परम्परागत कार्यक्रमों के पुनर्मूल्यांकन की जानकारी नहीं थी।

चौधरी चरण सिंह जानते थे कि अपने खेत से किसानों का कितना गहरा जुड़ाव है। वे जानते थे कि सामूहिक खेती मानव स्वभाव के विरूद्ध है। उन्हें विश्वास था कि सामूहिक या सहकारी खेती से उत्पादन पर बुरा असर होगा और मुल्क विनाश की ओर अग्रसर होगा।

पोलैण्ड, चीन,यूगोस्लाविया और सोवियत रूस जैसे साम्यवादी देशों का अनुभव यह बतलाता है कि चौधरी साहब की राय सही थी। खेती के जबरन सामूहिकरण से सोवियत कृषि को पहुंची हानि से उबारने के लिए सोवियत सुधारक 1953 से भरसक कोशिश कर रहे हैं। लेकिन वे सफल नहीं हो पाये, क्योंकि उन्होंने व्यवस्था में मौलिक सुधार किए बिना ही सुधार लाने की कोशिश की। सामूहिक किसानों को जमीन के छोटे-छोटे टुकड़े देने की सोवियत पद्धति काफी पुरानी है। जमीन के इन टुकड़ों की, जिन पर किसान फल के पेड़, सब्जियां लगाते थे और मुर्गी ,सुअर, गाय, आदि पालते थे, उत्पादन क्षमता हमेशा बहुत ज्यादा रही है। फिर भी सोवियत नेताओं ने इससे आवश्यक सीख नहीं ली। बुरे हाल में फंसी सोवियत कृषि को बचाने के लिए गोर्बाचोव ने हिम्मत के साथ गंभीर प्रयास किए। सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के जून-जुलाई 1987 में हुए सम्मेलन में कई वक्ताओं ने यह विलाप किया कि "ग्रामीण क्षेत्र तबाही में है।" गोर्बाचोव ने फिर पट्टेदारी पद्धति के प्रयोग की बात चलाई। यह और कुछ नहीं बल्कि पिछले दरवाजे से निजी सम्पति की व्यवस्था को लागू करना था। लेकिन मूल्य की गारंटी, ऋण देने वाली संस्थाओं और कृषि से सम्बद्ध एजेंसियों से आवश्यक मदद के बिना पट्टेदारी से प्राप्त जमीन पर अपनी बचत का धन कौन

खर्च करना चाहेगा? निःसन्देह गोर्बाचोव के रास्ते में कई मुश्किलें रहीं, मगर इस सोवियत प्रयोग से बहुत उम्मीदें भी थीं और इससे यह पता चलता है कि चौधरी चरण सिंह द्वारा सामूहिकरण और सहकारीकरण का विरोध दुराग्रहपूर्ण नहीं था। सहकारी खेती पर जवाहरलाल नेहरू द्वारा प्रायोजित नागपुर प्रस्ताव का, चौधरी साहब ने साहसपूर्वक विरोध किया था, जो मृत-पत्र ही रहा है। इससे भी चौधरी चरण सिंह की समझ सही साबित होती है।

सामाजिक-सांस्कृतिक नीति के क्षेत्र में चौधरी चरण सिंह के विचारों में कुछ विरोधाभास या अन्तर्विरोध रहे हैं जहां वह हिन्दू एकता के विचारों से आकर्षित हुए थे,वहीं उन्होंने परम्परागत श्रेणीबद्ध जाति व्यवस्था, जिसके कारण निम्न श्रेणी के लोग निकृष्ट माने जाते थे, को पूर्णतया अस्वीकार किया। चौधरी चरण सिंह ब्राह्मणवाद और उसकी अवधारणाओं के खिलाफ थे। जनसंघ, भाजपा और आर.एस.एस. के साथ उनके संदिग्ध सम्बन्ध का मुख्य कारण यही था। हिन्दुओं के गौरवपूर्ण अतीत की उनकी बातें उन्हें उनकी ओर खींचती थी लेकिन उनके उच्च जातीय भारी अक्खड़पन के कारण चौधरी चरण सिंह का आकर्षण विरोध में बदल गया। वर्ण की पवित्रता का पक्ष लेना उनकी दूसरी अस्पष्टता थी। चूंकि हिन्दू सामाजिक व्यवस्था का सार तत्व जाति है, जाति संस्था का विरोध और हिन्दू सुदृढ़ीकरण के प्रति जुड़ाव के बीच का विरोधाभास, कम से कम अल्पकाल में,खत्म नहीं हो सकता। चूंकि चौधरी चरण सिंह ने वर्ण-व्यवस्था को स्वीकारा था, डा. अम्बेदकर,जो जन्म पर आधारित वर्ण और जाति व्यवस्था में कोई भेद नहीं देखते थे, के अनुयायी उन्हें प्रतिक्रियावादी मानते थे। और, इसलिए वे उनका विश्वास नहीं जीत पाये। कुछ वर्षों तक महात्मा गांधी भी वर्ण-व्यवस्था के पक्षधर रहे और उन्होंने अन्तर्जातीय और अन्तर साम्प्रदायिक विवाहों को गैर-जरूरी ही नहीं, हानिकारक भी माना। बाद में उन्होंने पूरी तरह से अपने विचार बदल दिये और ऐसे मिश्रित विवाहों के कट्टर समर्थक बने। चौधरी साहब भी मिश्रित विवाहों के बड़े समर्थक थे और इसलिए मेरी राय में, उन्हें जातिवादी कहना अन्यायपूर्ण होगा।

हालांकि कृषक लोकतंत्र और विकेन्द्रीकृत अर्थ-व्यवस्था में उनका गहरा और ईमानदार विश्वास था, उन्होंने महसूस किया कि सत्ता के बगैर कुछ भी नहीं किया जा सकता। इसीलिए वे सत्ता चाहते थे और उसे पाने के लिए उन्होंने विरोधाभासी गठबंधन भी किए। गैर-कांग्रेसी पार्टियों और कांग्रेस (1967और 1970),दोनों के साथ उन्होंने संबंध बनाए। फिर भी आम कांग्रेसियों की तरह वह खालिस रूप से सत्ता के पीछे भागने वाले राजनीतिज्ञ नहीं थे। चूंकि वह अपनी आस्थाओं और कार्यक्रमों से गहरे रूप से जुड़े हुए थे, सत्ता में आने पर उन्हें लागू करने में वह कभी नहीं झिझके, और इस प्रक्रिया में उन्होंने हमेशा पदच्युत होने का खतरा भी मोल लिया। यही कारण है कि वह अपने पदों पर हमेशा थोड़े समय के लिए रहे- जैसे 1967-68,

1970, 1977-78 तथा 1979 में। जब भी वह किसी पद पर रहे, एक सशक्त और ईमानदार शासक के रूप में उनकी ख्याति रही और वह कामचोर कर्मचारियों के सिरदर्द बने रहे।

हालांकि चौधरी चरण सिंह के व्यक्तित्व का विकास गांधी युग में हुआ और वह कई बार जेल गए थे, उनका विचार था कि लोकतंत्र में नागरिक अवज्ञा के लिए कोई जगह नहीं है। अन्याय के निदान के लिए सरकार को वोट के जरिये बदलना चाहिए, ऐसी उनकी मान्यता थी। हम लोग उनके इस विचार से कतई सहमत नहीं थे। चौधरी साहब दुराग्रही नहीं थे और उनकी राय बदलवा पाने में मैं सफल हुआ। अन्तिम वर्षों में उन्होंने इस बात की जरूरत को स्वीकार किया कि प्रत्यक्ष बुराईयों को दूर करने के लिए शांतिपूर्ण संघर्ष आवश्यक है। ऐसा एक अवसर माया त्यागी का वीभत्स प्रसंग था। जब सरकार पर हमारे प्रतिवेदनों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा, तब उन्होंने सत्याग्रह करने के लिए मुझे और दल को न सिर्फ अपनी स्वीकृति दी, बल्कि एक लेख भी लिखा, जिसका शीर्षक था 'सत्याग्रह की घड़ी"। वह खुद इस सत्याग्रह में हिस्सा लेना चाहते थे, लेकिन कुछ पक्षपाती लोगों ने उन पर अनुचित दबाव डाला और उनके सहज बोध को कुंठित कर दिया। आज इस घड़ी में जब विपक्षी पार्टियों के बीच एकता की आवश्यकता व्यापक पैमाने पर महसूस की जा रही है, चौधरी चरण सिंह का व्यावहारिक ज्ञान और विपक्षी एकता का उनका कट्टर समर्थन, राजनीतिक व्यक्तियों के लिए प्रेरणा स्त्रोत होगा।

# 11

# किसान दिवस की उनकी संकल्पना

मधु दण्डवते*

वित्त मंत्रालय चलाते समय जिनकी स्मृति ने मुझे अर्थव्यवस्था को किसान की तरफ ले जाने में स्फूर्ति दी, वह प्रेरणा के स्त्रोत थे चौधरी चरण सिंह। मैं यहां किसान दिवस के बारे में बताना चाहता हूं कि चौधरी चरण सिंह जी की राय इस सिलसिले में क्या थी। एक मर्तबा उनके साथ बातचीत हो रही थी। उस समय चौधरी साहब ने कहा था कि सिर्फ हिन्दुस्तान में ही नहीं बल्कि समूची दुनिया में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दुनिया के मजदूरों का दिन एक मई "मजदूर दिवस" के रूप में मनाया जाता है लेकिन कृषि प्रधान होते हुए भी हमारे देश में "किसान दिवस"नहीं मनाया जाता, यह कितने दुःख की बात है।

यहां मैं एक बात और बताना चाहता हूं कि एक बार इस दिन (किसान दिवस) के बारे में चौधरी साहब से बात हुई,तो उन्होंने मजाक में कई बातें मुझे बताईं। उन्होंने मजाक में कहा कि हमारे देश मे कई नेताओं के नाम से दिन मनाये जाते हैं। विडम्बना यह है कि हमारे यहां नेताओं की कमी नहीं है और यदि हर नेता के नाम से दिन मनाये जाते रहे तो एक दिन वह आयेगा, जब भारत ही बन्द हो जायेगा। इसलिए उन्होंने कहा था कि ये सारे दिन संकल्प दिवस के रूप में मनाये जाने चाहिए, न कि अवकाश-दिवस के रूप में।

जहां तक किसान दिवस की बात है, तो इस बारे में उनका कहना था कि किसान दिवस वाले दिन किसान देहात में सुबह से शाम तक खेत में मेहनत से काम करे और बाबू लोग सारे दिन आराम करते हैं, इस तरह से किसान दिवस की सार्थकता पूरी नहीं होगी। यह तभी पूरी होगी, जबकि किसान को न्याय दिलाने के लिए, उसके अधिकारों को दिलाने के लिए संघर्ष किया जाए और उस संघर्ष के लिए किसान दिवस के दिन संकल्प लिया जाए। "किसान दिवस" की मेरे मन में भी सही मायने

---

* भूतपूर्व केन्द्रीय वित्त मंत्री

में यही कल्पना है।

चौधरी साहब का कहना था कि देश को सिर्फ विचारों से ही नहीं बल्कि अपने चरित्र से, आचार से,कथनी और करनी से प्रेरणा देनी होगी। जिसके विचार ही उज्जवल नहीं होंगे, चरित्र अच्छा नहीं होगा, जिसकी कथनी और करनी में अन्तर होगा, जिसका आचरण उदाहरण प्रस्तुत नहीं करेगा, वह किसी को क्या प्रेरणा देगा। उन्होंने किसान के लिए न तो रंगीन टेलीविजन की मांग की, न रेफ्रीजरेटर की, न मारूति कार की, उन्होंने किसान के लिए केवल कपड़ा,रोटी और मकान की मांग की। उनका कहना था कि यह तीन चीजें हमारे किसान को दे दो, वह खुशहाल हो जायेगा और यदि किसान खुशहाल हो गया, तो देश खुशहाल हो जायेगा।

भौतिक सुख-सुविधाओं से वह आजीवन परे रहे। वह मंत्री रहे हों, मुख्यमंत्री रहे हो,केंद्रीय मंत्री, उप-प्रधानमंत्री या प्रधानमंत्री पद पर रहे हों, उन्होंने पूरा जीवन एक साधारण किसान की तरह जिया।

सच तो यह है कि देश की जनता धरा पुत्र चौधरी चरण सिंह को नहीं भूलेगी, जिसने पूरी जिन्दगी ही गरीबों, पिछड़ों, मजदूरों और किसानों के लिए कुर्बान कर दी। इस हिन्दुस्तान को आगे ले जाने के लिए किसान की जिन्दगी में तरक्की लानी होगी, जिस दिन किसान की तरक्की होगी, सही मायने में वही दिन चौधरी चरण सिंह साहब को श्रद्धांजलि देने का सही दिन होगा। यह अवसर जल्दी आये, यही मेरी कामना है।

## 12

# यथार्थवादी राजनेता थे वह

प्रो. बलराज मधोक*

चौधरी चरण सिंह के साथ मेरा पहला परिचय 1967 में हुआ। मैं उस समय भारतीय जनसंघ का राष्ट्रीय अध्यक्ष था और चौधरी साहब भारतीय जनसंघ के सहयोग से बनी उत्तर प्रदेश की संविद सरकार के मुख्यमंत्री थे। मैं लखनऊ में उनके सरकारी आवास पर उनसे मिला। मुझे उनकी बैठक में लगे महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र और उनके सादे रहन-सहन ने प्रभावित किया। बातचीत के दौरान उन्होंने संविद सरकार के काम में जनसंघ के उत्तर प्रदेश नेतृत्व द्वारा अनुचित हस्तक्षेप की शिकायत की और यह कह कर कि जनसंघ उत्तर प्रदेश संविद का सबसे बड़ा घटक है और इसके पूरे सहयोग के बिना सरकार सुचारू रूप से चल नहीं सकती, मेरे हाथ में राज्यपाल के नाम लिखा अपना त्याग पत्र थमा दिया और कहा कि आप इसे राज्यपाल को भेज दें। मुझे इससे अचम्भा भी हुआ और दुःख भी। मैंने उन्हें त्याग-पत्र वापस कर दिया और आश्वासन दिया कि मैं जनसंघ के उत्तर प्रदेश के नेताओं को कहूंगा कि वे आपको शिकायत का अवसर न दें।

उस पहली भेंट में ही हम दोनों में एक-दूसरे के प्रति आदर का भाव पैदा हुआ। हमारी जो मित्रता उस दिन शुरू हुई, वह उनके जीवन-पर्यन्त बनी रही।

1973में जनसंघ के नये नेतृत्व के साथ वैचारिक और नीतिगत मतभेद के कारण में जनसंघ से अलग हो गया और अपना अधिक समय लिखने-पढ़ने में लगाने लगा। उस समय तक चौधरी चरण सिंह उत्तर प्रदेश में क्रांति दल बना चुके थे और राष्ट्रीय स्तर पर समान विचार के संगठनों को जोड़कर एक बड़ा संगठन बनाने की आवश्यकता महसूस कर रहे थे। इस संबध में उन्होंने मुझसे लखनऊ में चर्चा भी की थी।

13 अप्रैल,1974 को वैसाखी के दिन वे अकस्मात मेरे निवास पर पहुंच गये। वे लखनऊ से विमान से आये थे और विमानपत्तन से सीधे मेरे पास आ गये। मुझे

---

* भारतीय जनसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं भूतपूर्व सांसद

इसकी कोई पूर्व सूचना नहीं थी। वे दिन भर मेरे पास रहे और समान विचारधारा वाले दलों को मिलाकर राष्ट्रीय संगठन बनाने के सम्बंध में विचार विनिमय करते रहे। इसी बीच उन्होंने मेरे निवास से ही बीजू पटनायक,राजनारायण और पीलू मोदी से फोन पर बात की और सायं चार बजे बीजू पटनायक के निवास स्थान पर इकट्ठे मिलने की बात तय की। यह बैठक बहुत सफल रही और यहां क्रांति दल, स्वतंत्र पार्टी, राष्ट्रीय लोकतांत्रिक संघ, समाजवादी दल इत्यादि सात संगठनों को मिलाकर भारतीय लोकदल बनाने का निर्णय लिया गया।

कुछ दिन बाद जब हम लोग भारतीय लोकदल का घोषणा-पत्र तैयार कर रहे थे, तब विदेशी मिशनरियों के प्रश्न पर गतिरोध पैदा हो गया। चौधरी साहब और मैं चाहते थे कि घोषणा-पत्र में स्पष्ट लिखा जाए कि विदेशी मिशनरियों की गतिविधि पर रोक लगाई जाये, लेकिन पीलू मोदी और राजनारायण इसका कड़ा विरोध कर रहे थे। चौधरी साहब ने राजनारायण और पीलू मोदी को काफी समझाया-बुझाया और इस संदर्भ में तर्क भी दिए, तब कहीं जाकर मिशनरी सम्बंधी उनके मत का घोषणा-पत्र में समावेश किया जा सका। भारतीय लोकदल के विधिवत गठन के बाद वे उसके राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने गये और राजनारायण, बीजू पटनायक तथा मैं इसके उपाध्यक्ष बने। पीलू मोदी को महामंत्री की जिम्मेदारी सौंपी गयी।

1975 में आपातकाल की घोषणा के बाद चौधरी चरण सिंह सहित हम सबको मीसा के अन्तर्गत गिरफ्तार कर, देश की विभिन्न जेलों में बंद कर दिया गया। कुछ महीनों के बाद चौधरी साहब को छोड़ दिया गया। उसके बाद पत्नी की बीमारी के कारण मुझे एक सप्ताह के लिए पैरोल पर छोड़ा गया। दिल्ली आने पर मैंने चौधरी साहब से भेंट की। उस समय सभी गैर-कम्युनिस्ट विपक्षी दलों को मिलाकर एक साझा दल बनाने की बात चल रही थी।इस सम्बंध में मेरी उनके साथ विस्तृत चर्चा हुई और वे भी इन दलों को मिलाकर प्रस्तावित जनता पार्टी बनाने के लिए रजामन्द हो गये। कुछ दिनों के बाद मैं पुनः जेल लौट गया।

मेरे कारावास-काल में चौधरी साहब नियमित रूप से मेरे घर जाकर मेरी पत्नी की कुशल-क्षेम के बारे में जानकारी लेते रहे। उनके इस सहानूभूतिपूर्ण व्यवहार ने मुझे बहुत प्रभावित और अनुगृहीत किया। अपने साथियों के प्रति उनकी यह आत्मीयता और प्रेम उनका बहुत बड़ा गुण भी था और मित्रों के लिए सम्बल भी।

31 दिसम्बर,1976 को अठारह महीनों के कारावास के बाद मैं रोहतक जेल से रिहा हुआ। रिहा होने के बाद मैं दिल्ली आकर चौधरी साहब से मिला और हम सब जनता पार्टी के गठन में जुट गये।

कुछ दिन बाद मोरारजी देसाई भी रिहा हो गये। चौधरी साहब और मैं उनसे मिलने उनके दुप्ले रोड स्थित आवास पर गये। मोरारजी देसाई बड़े रूखे ढंग से मिले। मेरे लिए यह बड़ी अनपेक्षित बात थी, क्योंकि मेरे साथ उनके मैत्रीपूर्ण सम्बंध थे।

कुछ दिनों बाद मैं मोरारजी देसाई से अकेले मिलने गया तो उनकी बातचीत से पता लगा कि चौधरी साहब के प्रति उनकी धारणा अच्छी नहीं है। वे उन्हें 'प्रादेशिक' और 'जातिवादी' नेता मानते थे, राष्ट्रीय नेता नहीं।

मोरारजी देसाई और चौधरी साहब में बहुत सी बातें समान थीं। दोनों चरित्रवान और यथार्थवादी थे। दोनों पंडित नेहरू की अपेक्षा सरदार पटेल से अधिक प्रभावित थे और राष्ट्रवादी तथा यथार्थवादी नीतियां अपनाना चाहते थे।परन्तु दोनों के बीच किसी प्रकार का भावात्मक सामंजस्य नहीं था। जनता सरकार में उनके बीच टकराव का यही सबसे बड़ा कारण बना। यदि मैं उस समय संसद में होता तो शायद मोरारजी देसाई और चौधरी साहब के बीच पुल का काम कर पाता, क्योंकि मैं दोनों का विश्वासपात्र था और दोनों से खुलकर बात कर सकता था। परन्तु जनसंघ के नेताओं के दबाव पर चौधरी चरण सिंह ने मुझे 1977 में लोकसभा में चुनाव न लड़ने की सलाह दी।

उस समय चौधरी साहब ने मुझसे कहा था कि राज्यसभा में भी जनता पार्टी का कोई वरिष्ठ नेता होना चाहिए और साथ ही यह आश्वासन भी दिया था कि "यदि मैं जिन्दा रहा तो सबसे पहले आपको राज्यसभा में भेजूंगा।"

मेरी चौधरी साहब में श्रद्धा और आस्था थी। आयु में भी वे मुझसे बड़े थे। इसलिए मैंने उनकी बात मान ली और लोकसभा का चुनाव नहीं लड़ा। कुछ महीनों के बाद उन्होंने स्वयं मेरे पास आकर मुझसे कहा कि मुझे दिल्ली से राज्यसभा का टिकट दिया जा रहा है। परन्तु कुछ दिनों बाद जनसंघ के लोगों के दबाव में आकर उन्होंने मेरे स्थान पर जनसंघ के कर्नाटक के नेता जगन्नाथ जोशी को दिल्ली से राज्यसभा में भेज दिया। मुझे इससे दुःख हुआ और कुछ समय के लिए मैं चौधरी साहब से दूर हो गया किन्तु हमारी पुरानी मित्रता शीघ्र ही हमें फिर एक-दूसरे के निकट ले आयी।

1967 से मृत्यु पर्यन्त चौधरी चरण सिंह मेरे अभिन्न मित्र रहे। मैं उन्हें अपना मित्र भी मानता था और बुजुर्ग भी। वे मुझसे आयु में लगभग 16 वर्ष बड़े थे। मेरी तरह वह भी आर्य समाजी और यथार्थवादी थे। देश के गांवों और कृषि सम्बंधी समस्याओं पर उनकी गहरी पकड़ थी। इस सम्बंध में उनका अध्ययन और अनुभव व्यापक था।

चौधरी चरण सिंह और सरदार बल्लभ भाई पटेल में बहुत ही बातें समान थीं। वे सरदार पटेल की तरह देश को कुशल और सशक्त नेतृत्व देने की क्षमता रखते थे। उनके गुणों को अपने अन्दर धारण करना और देश की नीतियों, विशेषकर आर्थिक नीति को, उनके चिन्तन के अनुरूप दिशा देना राष्ट्र के लिए हितकर होगा।

# 13

# कथनी और कर्म के समन्वय-पुरुष

प्रो. जे. डी. सेठी*

चौधरी साहब से मेरा रिश्ता सियासी नहीं था। मेरी उनसे विभिन्न मुद्दों पर घंटों बात होती थी। आर्थिक स्थिति पर हो, चाहे देश के सियासी हालात पर हो, उनसे अक्सर बहस-मुबाहिसे होते रहते थे। लेकिन मेरा उनसे किसी पार्टी या गुट के किसी नुमाइन्दे के रूप में कोई रिश्ता नहीं था।

मैं उन तीन-चार बातों को तो, जिन्हें मैं समझता हूं कि आमतौर पर लोग नहीं जानते हैं, उन्हें बताना चाहता हूं। कृषि और देश के आर्थिक हालात के बारे में ही नहीं बल्कि हिन्दुस्तान के अनेक अनबुझे पहलुओं के बारे में भी उनकी सोच थी और उनके बारे में उन्होंने अपनी एक स्पष्ट एवं आदर्श नीति बनाई। बहुतेरे लोग उनसे, उनकी किसी बात से, सहमत नहीं होते थे, यहां तक कि मैं भी किसी-किसी मुद्दे पर उनसे सहमत नहीं रहा करता था, लेकिन उन मुद्दों पर उनसे घंटों बहस होती थी। यह इस बात का प्रमाण है कि वह किसी भी मुद्दे पर बहुत चिंतित रहते और उस पर बहस करते थे। हिन्दुस्तान की राजनीति में मैंने उनके अलावा कोई राजनेता ऐसा नहीं देखा, जो किसी भी सवाल पर उसके हल खोजने के लिए खुद घंटों बहस करता हो।

चौधरी चरण सिंह ऐसे नेता थे, जिन पर जनता का भरोसा था। वे तबके, जिनके अधिकारों के लिए वह लड़ाई करते रहे, उन्हें अपना मसीहा मानते थे। वह एक बुद्धिजीवी ही नहीं, लेखक और चिंतक भी थे। यह बात चौधरी साहब द्वारा "भारत की भयावह आर्थिक स्थिति : कारण और निदान" नामक पुस्तक से प्रमाणित होती है। इस किताब के एक-एक पन्ने पर उन्होंने जो सवाल उठाये हैं और उसके निदान की दिशा में जो सुझाव दिये हैं, उनके बारे में मुझसे बहस की। कुछ ऐसी गलतियां थीं जो उस पुस्तक में नहीं आनी चाहिए थीं, उन्होंने उनके बारे में उस

---

* प्रख्यात अर्थशास्त्री

विषय के कई प्रमुख जानकारों से बात की और जब संतुष्ट हो गये, तब उसमें से वे बातें हटाईं, तब पुस्तक छपवायी। मुझे दुःख इस बात का है कि ऐसे महान नेता की पुस्तक, जो हिन्दुस्तान की आर्थिक नीति का और उसके समाधान के तरीकों का खुलासा करती है, देश में कम पढ़ी जाती है जबकि विदेशों में ज्यादा पढ़ी जाती है और जहां तक मेरी जानकारी है, वह पुस्तक कई विदेशी विश्वविद्यालयों के अर्थशास्त्र के पाठ्यक्रम में भी लागू है।

वह सरल, साफ दिल और सादगी पसंद इंसान थे। आजकल देश में ऐसे नेताओं की कमी नहीं है, जो खादी तो पहनते हैं लेकिन उनके दिल साफ नहीं होते। यहां एक घटना का जिक्र करना चाहता हूं : एक बार बातचीत करने के बाद उन्होंने मुझसे कहा कि भाई सेठी, खाना खाकर जाना। खाने में सादगी का नमूना देखिये, जब खाना आया तो थालियों में एक दाल, एक सब्जी, दो चपाती और प्याज थी। कुल तीन थालियां थीं, जिनमें एक बड़ी और दो छोटी थाली थीं। उन्होंने (श्रीमती गायत्री देवी से) कहा कि, "अरे भाई, दो थाली बड़ी रख देतीं, यह मेहमान हैं।" इस पर श्रीमती गायत्री देवी ने कहा कि "घर में बड़ी थाली दूसरी हो तो दूं।" मेरा यहां यह कहने का मतलब यही है कि इतने बड़े नेता होने के बावजूद उनके यहां दो बड़ी थालियां नहीं थीं। यह सादगी नहीं तो और क्या है।

वह कितने स्पष्टवादी थे, इसका एक उदाहरण बताता हूं। मैंने उनसे एक बार कहा कि "आपने हरियाणा चुनाव में अमुक गलत आदमी को चुनाव का टिकट दे दिया। आपका वह रिश्तेदार है, वर्ना तो किसी भी कीमत पर टिकट के काबिल नहीं था। उसे आपको टिकट नहीं देना चाहिए था। यह बात मैं आपसे इसलिए नहीं कह रहा हूं कि मुझे कुछ चाहिए, मुझे कुछ नहीं चाहिए। लेकिन इससे आपकी और आपकी पार्टी की साख गिरती है।" इस बात पर मेरी उनसे काफी तकरार हुई। इस बीच उनकी आंखों से टप-टप आंसू गिरने लगे। मैंने कभी भी उन्हें रोते हुए नहीं देखा था। इसके बाद रुंधे गले से उन्होंने मुझसे कहा, "सेठी, तुम भी मेरे ऊपर आरोप लगाते हो कि मैंने ऐसा किया है। यह झूठ है कि मैंने अपने रिश्तेदार को टिकट दिया। मैंने उसकी कभी सिफारिश नहीं की। जबकि सच यह है कि वह पार्टी के लोगों का फैसला था, मेरा नहीं। पार्टी के लोगों की वजह से वह टिकट ले गया, मेरी वजह से नहीं।"

एक बार की बात है कि मैं और पत्रकार श्री कुलदीप नैयर उनके निवास पर गये थे। मैंने चौधरी साहब से मजाक में कहा, "चौधरी साहब, आप पक्के आर्यसमाजी हैं। हमें यहां घंटों बिठाये रखते हैं, लेकिन कभी आपने हम लोगों से चाय तक के लिए नहीं पूछा। आपको अतिथि सत्कार भी नहीं आता। क्या बात है ?" तो हैरान होकर उन्होंने हमसे कहा कि, "भई, मुझे तो कभी ख्याल ही नहीं आया कि आप लोगों को मुझे कभी चाय आदि भी पिलानी चाहिए। यहां तो सभी आते हैं। मैं तो

किसी को भी चाय नहीं पिलाता।" इस पर हमने उनसे कहा कि ऐसी बात है तो कल से हम लोग नहीं आयेंगे। यह तो हुई मजाक की बात। इसके बाद तो हम लोग जब भी पहुंचते थे, उन्हें यह मालूम रहता था कि हम एक बजे आ रहे हैं, तो वह पौने एक बजे ही कह देते थे कि "भई वह आ रहे हैं, उनके लिए चाय रख दो।" इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वह दिखावा नहीं करते थे और न उसे पसंद करते थे। यह सादगी की चरम सीमा थी। ऐसा था उनका सादगी भरा जीवन, जिसकी मिसाल नहीं मिलती।

एक बार वृंदावन (मथुरा जिले) में लोकदल का अधिवेशन हो रहा था। वह वहां मुझे भी साथ ले गये थे। वहां मैंने उनसे कहा कि "चौधरी साहब यहां श्रीकृष्ण जी का बहुत खूबसूरत मंदिर है। चलिए वह मंदिर देखकर आते हैं।" वह बोले "भाई सेठी, मैं ठहरा आर्य समाजी। मैं मंदिर-वंदिर नहीं जाऊंगा। यदि मैं मंदिर गया तो लोगों के दिमाग में गलतफहमी पैदा होगी।" तब मैंने कहा कि "साहब, हमें तो कोई ऐतराज नहीं है, हम चाहे आर्य समाजी हों या सनातन धर्मी, चाहे वह मंदिर हो, मस्जिद हो, गिरिजाघर हो या गुरुद्वारा, मेरे ऊपर तो कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन देखना तो चाहिए कि इसके अन्दर क्या है।" उन्होंने कहा कि "भाई मैं आपके साथ गया तो गलतफहमी भी होगी और लोग यह कहेंगे कि मैं आर्य समाजी होते हुए मूर्ति पूजा करने गया।" तब मैंने कहा कि "चौधरी साहब यदि आप मंदिर में जायेंगे तो यह कोई छोटेपन की बात तो नहीं होगी, और कोई यह भी नहीं कहेगा कि आप मंदिर गये। यह तो आपका बड़प्पन ही होगा।" तब कहीं जाकर उन्होंने कहा कि "लो चलते हैं।" हम चल दिये। यह स्वाभाविक ही था कि चौधरी साहब जहां कहीं जाते, वहां उनके समर्थक, अनुयायी, नेता, सांसद व विधायक वहीं जाते। नतीजतन पूरा काफिला मंदिर के लिए चल पड़ा।

मंदिर में पहुंचते ही एक अभूतपूर्व नजारा मुझे देखने के लिए मिला। वह यह कि मैंने तो भगवान के सामने पहुंचकर, जैसा कि अक्सर करते हैं, झुक कर हाथ जोड़ कर प्रणाम किया लेकिन देखते क्या हैं कि चौधरी साहब ने मंदिर में मूर्ति के सामने पहुंचते ही हाथ जोड़ दिये। बाहर आकर मैंने पूछा कि "चौधरी साहब आपने मंदिर में मूर्ति के सामने हाथ जोड़कर प्रणाम क्यों किया।" तब उन्होंने कहा कि "भाई दिल की बात है, खुद-ब-खुद हाथ उठ गये और उनको नमन करने के लिए जुड़ गये। इसमें मेरा क्या कसूर है। सच तो यह है कि दिल-दिमाग मेरा कहीं भी हो लेकिन वहां अकस्मात ऐसा हो गया। जबकि मैं मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं करता लेकिन वहां का वातावरण ही ऐसा था और मेरे ऊपर प्रभाव ही ऐसा पड़ा कि मुझसे रहा नहीं गया। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि यहां तो झुकना ही चाहिए, भले ही मेरी आकांक्षा कुछ भी हो रही हो।" इसलिए मेरा कहना है कि वह दिल के साफ आदमी थे और हमेशा साफगोई से ही बात करते थे।

उनका हमेशा यह मानना था और वह इस बात पर सदैव बल देते रहे कि खेती या गांव हिन्दुस्तान में तब तक पनप नहीं सकते, जब तक गांवों में कुटीर उद्योग नहीं लगाये जाते। कृषि पर आप कितना भी खर्च कर लें, उसको कितनी भी प्रमुखता दें, वह उतने लोगों को रोजगार नहीं दे सकती जितनी कि अपेक्षा की जाती है। यह तब तक सम्भव नहीं है जब तक कि गांवों में छोटे-छोटे उद्योग न लगाये जाएं, जिससे लाखों लोगों को रोजगार मिलेगा और उनका दिन-ब-दिन विकास होगा। महात्मा गांधी और चौधरी साहब ने हमेशा गांव को इकाई माना। जब तक हम गांव को इकाई नहीं मानेंगे तब तक गांव में रहने वाले, खेती से जुड़े किसान-मजदूर, दस्तकारी से जुड़े दस्तकार, आत्मनिर्भर नहीं हो सकते। उनका कहना था कि जो चीज हाथ से बनाई जा सकती है, उसे मशीन के जरिये न बनाया जाए। जो चीज कुटीर उद्योग-धंधों के जरिये बनाई जा सकती है, उसे भारी यानी बड़ी मशीनों के जरिये न बनाया जाए, जब तक इस तरह की नीति नहीं बनाई जायेगी, देश का विकास सम्भव नहीं। यही उनका आर्थिक दर्शन था।

# 14

# गरीब ने देखी उनमें अपने रहनुमा की तस्वीर

डा. स्वरूप सिंह*

किसी भी देश की राजनीति तभी अच्छी हो सकती है, जब उस देश के लोगों का चरित्र और उसके विचार अच्छे हों। यदि देश की जड़ें कट जायें और वहां के लोगों के दिमागों में अच्छे विचार न हों, तो उस देश की राजनीति के अच्छे होने की सारी सम्भावनाएं समाप्त हो जाती हैं। चौधरी चरण सिंह ऐसे ही विलक्षण राजनीतिज्ञ थे, जिनकी साफगोई, सादगी, ईमानदारी, सच्चरित्रता और सिद्धांतों के प्रति अटूट पक्षधरता के लिए उन्हें सदैव याद किया जाता रहेगा। वह व्यक्ति नहीं विचार थे। उन्होंने इस देश को गरीबी से निजात दिलाने के लिए एक वैचारिक दर्शन दिया। उनकी ईमानदारी की तो उनके विरोधी भी प्रशंसा करते हैं जो उनके जीवन की अमूल्य निधि थी।

मुझे याद है कि एक बार उत्तर प्रदेश में विधान सभा का चुनाव हो रहा था। चौधरी साहब के नेतृत्व में 109 लोग विधान सभा का चुनाव जीतकर आये थे और तकरीब 100 लोग ऐसे थे जो लगभग 1000 या 2000 वोटों के अन्तर से विधान-सभा का चुनाव हार गये थे। उस दौरान की बात है कि एक सज्जन रात में मेरे पास आये और मुझसे बोले कि एक व्यक्ति ने मुझसे कहा है कि यदि तीन-चार लाख रुपये तुम दे दो तो चौधरी साहब से तुम्हें उत्तर प्रदेश से राज्यसभा का मेम्बर बनवा दूंगा। उस सज्जन को उस व्यक्ति की बात का विश्वास नहीं हुआ लेकिन उसे चौधरी साहब की बात का भरोसा था कि वह जो एक बार कह देते हैं, उसे करते जरूर हैं। उसी रात वह सज्जन मेरे पास आये और उपरोक्त पूरा वृतान्त पलक झपकते ही उन्होंने मुझे सुना डाला। मैंने तत्काल चौधरी साहब को फोन किया और उन्हें बात बता भी दी। यह बात भी सच है कि उस समय चौधरी साहब को चुनाव के लिए धन की काफी जरूरत थी। मैंने चौधरी साहब को यह भी बता दिया था कि वह सज्जन इस एवज में राज्य सभा का टिकट चाहते हैं। यह सुनते ही चौधरी साहब ने

---

* गुजरात के राज्यपाल एवं प्रख्यात शिक्षाविद्

मुझसे कहा कि "डा. साहब मैं चुनाव हारूं या जीतूं, सौदा नहीं करूंगा। यह गलत बात है कि मैं यह वायदा करूं कि मैं अमुक व्यक्ति को चुनाव जीतने के बाद राज्यसभा का मेम्बर बनवा दूंगा।"

चुनावों में आदर्श आदि जीवन की सभी उच्च मान्यताएं खो दी जाती हैं और व्यक्ति का केवल एक ही ध्येय होता है कि वह येन-केन प्रकारेण चुनाव जीत जाये। यहां मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि राजनीतिक जीवन में चुनाव ही तो सब कुछ नहीं होता, और भी बहुत कुछ महत्वपूर्ण होता है, जिसे तिलांजलि नहीं दी जा सकती। जिस आदमी में यह हिम्मत नहीं कि मैं इलैक्शन की परवाह नहीं करूंगा, जो ठीक है, वही करूंगा और उसे डंके की चोट पर कहने की हिम्मत भी है। दूसरे की गलत बात को गलत कह पाना बिरले के ही बस की बात है। यह गुण चौधरी साहब में था। वह सही को सही और गलत को गलत कहने में किंचित मात्र भी देर नहीं करते थे और बिना लाग-लपेट के साफ कह दिया करते थे। चाहे सामने वाले को वह बात बुरी ही क्यों न लग जाये। वह गलत बात होने पर अक्सर लोगों से कह दिया करते थे कि मैं तुम्हारी बात नहीं मानूंगा। मुझे याद है कि 1984 के चुनाव के दौरान भी उनसे कुछ लोगों ने जनता को आश्वासन देने का अनुरोध किया था, लेकिन उन्होंने तुरन्त उनकी बात नकारते हुए कहा था कि "तुम्हारी बात गलत है, यह देश हित में नहीं है, मैं ऐसा कदापि नहीं कर सकता।" ऐसे थे चौधरी चरण सिंह।

उन्होंने किसी से एक बार कुछ कह दिया, वह पत्थर की लकीर बन जाती थी। वह कहते थे कि आदमी की राजनीतिक और निजी जिंदगी में कोई फर्क नहीं है, दोनों एक हैं। जो दिल में हो, वहीं जुबान पर भी होना चाहिए। ऐसा न हो कि हम दिल में तो कुछ और रखें लेकिन जुबान से कहें कुछ और यानी दिल में कुछ और रखते हुए अपनी जुबान से झूठे आश्वासन-दर-आश्वासन देते जायें। यह कहां का न्याय है।

आज गरीब की सभी बात करते हैं, लेकिन क्या वजह थी कि गरीब आदमी को चौधरी साहब की बात पर भरोसा था। उसके दिल में चौधरी साहब के लिए अपार श्रद्धा थी और एक अटूट विश्वास था। इसकी प्रमुख वजह यही थी कि गरीब को भरोसा था कि इस इंसान के दिल में उसके लिए प्यार है, उसकी तकलीफों को दूर करने के लिए लड़ाई का जज्बा है। गरीब किसान-मजदूर तो उनमें अपने रहनुमा की तस्वीर देखता था। चौधरी साहब किसी ऐसे व्यक्ति, जिसने सच्चाई और न्याय के लिए अपना सर्वस्व त्याग दिया हो, की बात सुनते थे, तो वह उसकी बहुत प्रशंसा किया करते थे। जस्टिस खन्ना साहब की तो वह बहुत प्रशंसा करते थे और कहते थे कि "एक इंसान ऐसा भी है जिसने अन्याय के सामने झुकना गवारा नहीं किया। जस्टिस खन्ना उसकी मिसाल हैं।"

मेरी दृष्टि में चौधरी साहब केवल राजनीतिज्ञ ही नहीं थे बल्कि वह एक बेहतरीन

इंसान थे। उनकी सादगी, ईमानदारी, बड़प्पन और सिद्धांतवादिता के बहुतेरे दृष्टांत हैं, उनकी स्मृति मात्र से ही मेरा मन भर आता है। ऐसे महापुरुष के जीवन से हम और देश के राजनीतिज्ञ कुछ सबक लें, उनके मार्ग पर चलकर देश को आगे बढ़ा सकें और उनके आदर्शों को अपने जीवन में उतार सकें, यही उनके प्रति हमारी विनम्र श्रद्धांजलि होगी।

15

# इस युग के भीष्म

मधुकर दिघे*

सन् 1974 में सोशलिस्ट पार्टी और भारतीय क्रांति दल, जिसके नेता चौधरी चरण सिंह थे, का एकीकरण होकर भारतीय लोकदल बना था। इसके बाद हम लोग चौधरी साहब के साथ, उनके नेतृत्व में, भारतीय लोकदल के कार्यकर्त्ता के रूप में काम करते रहे। वैसे मैं चौधरी साहब के सम्पर्क में, प्रथम बार, सन् 1967 में ही आ गया था। गोखरपुर के पिपराईच क्षेत्र से उत्तर प्रदेश विधान सभा के लिए मैं सन् 1967 के चुनाव में जीत गया था। सन् 1964 से 1966 के अंत तक मै उत्तर प्रदेश की सोशलिस्ट पार्टी तथा बाद में संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी का राज्य-सचिव रहा और इस कारण उत्तर प्रदेश में होने वाली राज्य स्तर की सभी घटनाओं से मेरा सीधा सम्पर्क था। विधान सभा का गठन होते ही हम लोगों ने इस बात का अनुमान लगा लिया था कि कांग्रेस दल बहुत ही अल्प बहुमत में है और उसमें अर्न्तविरोध भी व्याप्त हैं, इस स्थिति का लाभ उठाया जा सकता है। कांग्रेस की सरकार, चंद्रभानु गुप्त के नेतृत्व में बन चुकी थी। चौधरी साहब के साथ सरकार के गठन के समय स्पष्ट रूप से अन्याय किया गया था और उत्तर प्रदेश की राजनीति में उनके कृषक-प्रवक्ता व नेता बनने के व्यक्तित्व को अंकुश लगाने और सम्भवतः अपमानित करने का प्रयत्न किया गया था।

इस स्थिति का लाभ और समाजवादी नेताओं को अपने प्रयत्नों में सफलता तब मिली, जब चौधरी साहब अपने सोलह सहयोगियों के साथ कांग्रेस छोड़कर संयुक्त विधायक दल में शामिल हो गए। फलस्वरूप चंद्रभानु गुप्ता ने अपने दल की सरकार का इस्तीफा दे दिया। रामचन्द्र विकल उस समय संयुक्त विधायक दल के नेता थे। चौधरी साहब के लिये उन्होंने अपने पद से इस्तीफा दे दिया और हम लोगों ने सर्वसम्पति से चौधरी साहब को संविद का नेता चुन लिया।

---

* मेघालय के राज्यपाल

आजादी के बाद यह प्रथम अवसर था, जब उत्तर प्रदेश में गैर-कांग्रेसी सरकार का गठन हुआ था और चौधरी साहब उस सरकार के प्रथम मुख्यमंत्री बने थे। मैं सरकारी पक्ष का सचेतक था। मेरे 'मेडन स्पीच' से प्रभावित होकर तथा विधान सभा में मेरी लगन को देखकर चौधरी साहब बहुत खुश हुए। उन्होंने मुझे अनेक बार बुलाकर एक विधायक के कर्त्तव्यों के साथ-साथ, सरकारी पक्ष के विधायक और विरोध पक्ष के विधायक में क्या फर्क होता है, यह समझाया; क्योंकि हम लोग सदन में कभी-कभी सरकारी पक्ष में रहते हुए भी सरकार की आलोचना कर देते थे। वे इस पर नाराज भी हो जाते थे लेकिन उनकी नाराजगी भी क्षणिक ही होती थी। लेकिन जिनकी इच्छा उनसे समझने और अपनी गलती स्वीकार करने की होती थी, उसे वे डांटते जरूर, पर समझाते भी थे। ऊपर से जितने वे कठोर लगते थे, उतने ही बालक समान मृदु स्वभाव के भी थे—एकदम ग्रामीण बूढ़े व्यक्ति जैसे। लेकिन जो बात मैं मुख्यतः बताना चाहता हूं, वह यह नहीं कि उनकी राजनेता या समाजनेता के रूप में क्या छवि थी, वरन् वे कितने कुशल एवं दृढ़ प्रशासक थे।

उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले में एक घटना हो गयी थी, हत्या के साथ-साथ एक महिला को रस्सी से बांधकर कुएं में लटका दिया गया था। घटना के पीछे जिन लोगों का हाथ था, वे केवल भूतपूर्व जमींदार और धनी व्यक्ति ही नहीं थे बल्कि कांग्रेसी नेता भी थे। स्वाभाविक तौर पर जैसा हुआ करता है, जिले के स्थानीय अधिकारी व पुलिस कर्मचारी सम्बंधित गुनाहगारों को बचाने और उनकी गिरफ्तारी की कार्यवाही करने में कोताही बरत रहे थे। वस्तुतः उन्हें काफी अंश तक छूट भी दिये हुये थे। मैंने सरकारी पक्ष के एक जिम्मेदार पदाधिकारी-सचेतक होने के बावजूद विधान सभा में सरकार और गृह-विभाग की, जो मुख्यमंत्री का ही महकमा था, कड़ी आलोचना कर दी। मुख्यमंत्री चौधरी चरण सिंह ने एक बार कड़ी निगाह से, भृकुटि ताने, मेरी तरफ देखा परन्तु केवल इतना ही कह कर कि सरकार वस्तुस्थिति की जानकारी करने के बाद ही किसी निर्णय पर पहुंचेगी, उस प्रश्न को टाल कर दूसरे विषयों पर बोलने लगे। मुझे एक बार गुस्सा भी आया और मैंने अपने कई मित्रों से कहा भी कि क्या संविद की सरकार का रवैया भी वैसा ही होगा जैसे कांग्रेसी सरकारों का सामान्यतः हुआ करता है ? मैं सरकार के रवैये से दुःखी था।

लगभग तीन बजे मुझे मुख्यमंत्री ने अपने कक्ष में बुलवाया। मैं समझ गया था कि चौधरी साहब अवश्य ही मेरे भाषण का और जो मैंने सरकार की आलोचना की है, उसी पर विरोध और गुस्सा जाहिर करेंगे। परन्तु कक्ष में पहुंचते ही उस समय मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा, जब मैंने उनके कक्ष में मुख्यमंत्री के अलावा गृह-सचिव और मुख्य सचिव को भी बैठे हुए देखा। चौधरी साहब ने मुख्य सचिव

और गृह सचिव को सम्बोधित करते हुए कहा, "यह दिघे संयुक्त विधायक दल का सचेतक है, नया है परन्तु अच्छा विधायक है। प्रतापगढ़ की घटना के संबंध में यह जो भी सूचना दे सकें, उसकी जानकारी इनसे कर लो और खुद भी घटना की जांच करके कल ही मुझे सारी स्थिति से अवगत करा दो।" दो-टूक बात कर, मैं उनके कक्ष से बाहर आया और घटना के संबंध में मुझे जो भी जानकारी थी, वह मैंने उन अधिकारियों को दे दी। दूसरे दिन विधान सभा में बगैर किसी का नाम लिए चौधरी साहब ने सूचना दी कि जिले के जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक को 24 घंटे के अन्दर बुला लिया गया है और आवश्यक कार्यवाही की जा रही है। दूसरे ही दिन ज्ञात हुआ कि उन अफसरों का तबादला हो गया है। मैं अपनी विजय पर खुश तो था ही परन्तु मुझे चौधरी साहब की प्रभावशाली कार्यशैली व एक कुशल प्रशासक द्वारा दृढ़ता के साथ अपने फैसले को कार्यान्वित करने की क्षमता ने सबसे अधिक प्रभावित किया था।

सन् 77 में वही अनुभव मुझे उत्तर प्रदेश के वित्त व संसदीय कार्यमंत्री होने पर काम आया। उनकी शिक्षा का ही परिणाम था कि वे दिल्ली में रह कर भी रामनरेश यादव के मंत्रिमंडल में, सबसे अधिक मुझसे ही प्रसन्न रहते थे और यही कारण था कि जब बनारसी दास जी के नेतृत्व में मंत्रिमंडल का पुनर्गठन हुआ तो मुझे अकेले को ही बनारसी दास जी के साथ मंत्री पद की शपथ लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। बाकी अन्य सभी विभागों के मंत्री एक सप्ताह बाद बनाए गए थे। चौधरी साहब एक कुशल प्रशासक ही नहीं थे, उनकी छवि एक ईमानदार व्यक्ति की भी थी। सन् 67 में जब तक वे उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री थे, तब तक सम्पूर्ण प्रदेश के सरकारी कर्मचारियों में एक भय व्याप्त था कि हमने घूस ली, तो हम बख्शे नहीं जायेंगे। यहां तक कि लोगों में खौफ बना रहता था कि टिकट खिड़की पर टिकट देने वाला बाबू भी भीड़ से बुलवाकर टिकट खरीदने वाले का बकाया, यदि भूल से छूट गया हो, तो वापिस करता था। लोगों में यह आम धारणा बन गयी थी एवं इस प्रकार की अफवाहें प्रचारित थीं कि चौधरी साहब भेष बदलकर किसी भी स्थान पर कभी भी आ सकते हैं। ऐसी हालत में स्वाभाविक था कि सभी लोग अपने-अपने काम पर मुस्तैद रहते थे। और, भ्रष्टाचार पर, थोड़ा ही क्यों न हो, अंकुश लग गया था।

गन्ने के दाम में वृद्धि हो जाने के कारण भी किसानों में संतोष था। मैं इसलिये प्रसन्न था कि गोरखपुर के गन्ना उत्पादक कृषकों के संघर्ष के फलस्वरूप ही मुझे विधान सभा में अच्छे बहुमत से जीतकर आने का मौका मिला था। मेरा विधान सभा क्षेत्र गन्ना उत्पादकों का ही क्षेत्र था। एशिया की सबसे बड़ी चीनी मिल "सरैया फैक्ट्री" सरदार नगर तथा एक अन्य पिपराइच शुगर मिल मेरे कार्य क्षेत्र के अन्तर्गत ही पड़ती थीं। गोरखपुर जनपद में और भी कई चीनी मिलें थीं और मेरा उनसे एक

मजदूर कार्यकर्ता के नाते तथा गन्ना उत्पादकों के लिये किये जाने वाले संघर्ष के नाते सीधा सम्बंध था। अतः मेरे लिये स्वाभाविक था कि मैं मुख्यमंत्री चौधरी चरण सिंह का प्रशंसक बनता। वैसे केवल एक विधायक के नाते ही मेरा उनसे सम्बंध था। एक प्रकार से मुझे उनसे भय भी लगता था, क्योंकि उनकी गम्भीर मूर्ति, उनकी कार्यशैली और ऊपर वर्णित उनके कार्यों से उनमें एक सम्मानित बुजुर्ग व्यक्ति की ही छवि दिखाई देती थी। हम समाजवादियों में व्यक्तिगत संपर्क बढ़ाने और काम के अतिरिक्त नेताओं से सम्बंध बनाने की आदत बहुत कम थी। मुझे तो और भी अधिक संकोच लगता था।

समाजवादियों की उनसे लगान के प्रश्न पर लड़ाई भी ठन गयी थी। संभवतः यह भी कारण रहा हो कि हम उन्हें "कुलक पक्षपाती" (बड़े किसानों का पक्षधर होना) मानते थे और उस दृष्टि से हमारे लिये वे दकियानूसी भी थे। परन्तु सन् 74 आते-आते हम लोगों की यह धारणा बदल गयी थी। उनका यह मानना था कि "जमींदारी-उन्मूलन" तथा "अधिकतम जोत-सीमा कानून" के बाद बड़े-छोटे किसानों में भेदभाव न किया जाय। स्ट्रेटेजीकली (व्यूह रचना की दृष्टि से) हमें भी वह उचित ही लगा। इसके अतिरिक्त 6-7 वर्षों के अंतराल में उनके विचारों में भी काफी परिवर्तन आ गया था। अब कांग्रेस संगठन तथा कांग्रेस कल्चर से उनका दुराव उनके अपने ही अनुभव से बढ़ गया था। हम लोगों के स्वभाव में भी अंतर आ गया था।

सन् 74 की विधान सभा में चौधरी साहब विपक्ष के नेता थे और मैं भारतीय लोकदल विधान मण्डल दल का सचिव। अब रोजमर्रा के काम के लिये मुझे उनके पास जाना पड़ता था। मेरा संकोच मिट रहा था। उनके बारे में मेरी धारणायें बदल रही थीं। मैं बार-बार सोचता था कि ऊपर से रूक्ष दिखने वाला यह व्यक्ति इतना मोम-दिल कैसे हो सकता है।

वह अपनी बात थोपते कभी नहीं थे। उन्होंने नियम-कानून के अतिरिक्त सद्व्यवहार की अनेक बातें हमें समझायी थीं। वे भ्रष्टाचार, बेईमानी और गरीबों, विशेष तौर पर ग्रामवासियों, पर होने वाले अत्याचार पर क्षुब्ध होते थे और कई उपायों पर विचार भी करते थे, साथ ही दयालु भी थे। उनके इसी स्वभाव का फायदा चतुर चालाक लोग बहुत उठाते थे। उनके विरुद्ध आरोप लगाने वाले भी उनसे कई बार लाभ उठा ले गये।

सन् 77 से 78 तक के दौरान जब मैं उनसे अधिक संपर्क में आ गया था, तो मैंने उनसे एक बार सहज तौर पर कहा, "चौधरी साहब क्या बात है, भीष्म, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य का फायदा अधिकतर दुर्योधन और कौरव ही क्यों उठाते हैं ?" चौधरी साहब गम्भीर हो गये, मेरे प्रश्न का आशय वे समझ गये थे। मैंने प्रश्न तो कर दिया था और थोड़ा घबड़ाया भी था परन्तु मैं आश्चर्यचकित था, जो

उन्होंने मुझसे कहा। चौधरी साहब ने कहा "मैं भी तो कांग्रेस से चिपका रहा, गांधी जी के मरने के बाद भी इतने वर्षों तक, मुझे तो बहुत पहले ही कांग्रेस छोड़ देनी चाहिये थी, पर मैं चिपका रहा, शायद नमक की वजह से। अब से बहुत पहले ही देश को बदलने, कृषकों के हित में, गरीबों के हित में, गांधी के सपनों का देश बनाने का मौका मिल गया होता", यह एक स्वीकारोक्ति थी, इस युग के भीष्म की।

# 16

# युग-पुरुष चौधरी चरण सिंह

देवीदास आर्य*

उन दिनों चौधरी साहब उत्तर प्रदेश में कांग्रेसी सरकार में स्वायत्त शासन मंत्री थे। मैं जनसंघ से कानपुर नगर महापालिका का पार्षद तथा आर्य समाज का अध्यक्ष था। मुझे ज्ञात हुआ कि उत्तर प्रदेश की कांग्रेसी सरकार में केवल चौधरी साहब ही एक मात्र आर्य समाजी हैं। चौधरी साहब के कानपुर आगमन पर मैंने उनसे आर्य समाज के वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में मुख्य अतिथि बनने का आग्रह किया, जिसे चौधरी साहब ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। आर्य समाज, गोविन्द नगर में आयोजित वार्षिकोत्सव की जो प्रचार सामग्री वितरित की थी उसमें चौधरी साहब के मुख्य अतिथि के रूप में आने की सूचना थी। नगर के कुछ अति उत्साही कांग्रेस जनों को चौधरी साहब का मेरे कार्यक्रम में आना नागवार तथा अप्रिय लगा। एक कांग्रेसी मित्र ने चौधरी साहब को निष्ठावान कांग्रेसी होने के अधिकार से टेलीफोन किया तथा उनसे कहा कि "आप इस जनसंघी कार्यक्रम में न आएं, यही कांग्रेस पार्टी के हित में होगा।" चौधरी साहब ने उनसे उनकी उम्र पूछी तथा उम्र पूछने के पश्चात् उन्हें फटकारते हुए कहा कि "जितनी तुम्हारी उम्र है, उतने दिनों से मैं राजनीति कर रहा हूं। मैं किसी राजनैतिक सम्मेलन में नहीं आ रहा हूं, धार्मिक सभा में आ रहा हूं। यह कोई आवश्यक नहीं कि कानपुर के आर्य समाजियों का राजनैतिक दृष्टिकोण मेरे राजनैतिक दृष्टिकोण से मेल खाए। तुम धर्म को राजनीति में मत घसीटो", यह कह कर चौधरी साहब ने गुस्से में टेलीफोन पटक दिया। चौधरी साहब का उग्र रूप देखकर वह कांग्रेसी मित्र सहम गये।

निश्चित तिथि व समय पर चौधरी साहब सर्वप्रथम मेरे निवास स्थान पर पधारे। तत्पश्चात् समीपवर्ती सभा स्थल में चौधरी साहब ने यह घटना मंच से बताई, तो जनमानस चौधरी साहब की सदाशयता एवं उदार हृदयता के प्रति श्रद्धावनत हो गया।

---

* पत्रकार, समाजसेवी एवम् केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान

मैं स्वयं उनसे इतना प्रभावित हुआ कि राजनैतिक भिन्नता होते हुए भी, अन्तिम समय तक उनके सानिध्य में रहा तथा उनसे मार्ग दर्शन प्राप्त करता रहा।

राजनीति में चौधरी चरण सिंह जी की ठीक वही भूमिका रही, जो प्राचीन काल में चाणक्य की रही। अतः चौधरी साहब को आधुनिक चाणक्य कहने में किंचित भी अतिश्योक्ति न होगी। वह आजीवन चाणक्य की तरह तानाशाही की जड़ों में मट्ठा डालने की प्रक्रिया की ओर अग्रसर रहे।

मैं व्यक्तिगत रूप से चौधरी साहब का और उनकी नीतियों का प्रशंसक रहा हूं, विशेष रूप से उनके स्वदेशी विषयक विचारों का हार्दिक सम्मान करता रहा हूं। आज तक किसी प्रशासक का ग्रामोत्थान की तरफ ध्यान नहीं गया था। या यह कहना उचित होगा कि मूल की तरफ किसी का ध्यान ही नहीं गया। चौधरी साहब ने गांधी जी की नीतियों के आधार पर ग्रामोत्थान का जो बीड़ा उठाया था, उसकी मैं हार्दिक प्रशंसा करता हूं। सही रूप में अगर देशभक्ति या स्वदेशी की भावना कहीं जन्म ले सकती है, तो वह ग्राम विकास द्वारा ही सम्भव है। यही सच्ची देशभक्ति का उदाहरण है।

ग्रामोत्थान के अपने ध्येय और आदर्श की प्राप्ति के लिए चौधरी चरण सिंह ने जो प्रयत्न किये थे, वे विचारणीय हैं। उनका ध्येय-समर्पण अनुकरणीय है। वह भारतीयता को जिस ढंग से संगठित करने के लिए प्रयत्नशील रहे, उससे अन्य राजनीतिक नेताओं को शिक्षा लेनी चाहिए। जो लोग उनके सिद्धान्तों से सहमत नहीं थे, वे भी उनकी देशभक्ति पर शंका नहीं कर सकते। उन्होंने "सादा जीवन-उच्च विचार" की सूक्ति को कार्यरूप में परिणित करके एक उदाहरण पेश किया। भारत के गौरवमय अतीत का चित्र आंखों के सामने रखकर वर्तमान परिस्थिति में जो दुर्दशा हुई है, उससे ऊपर उठकर, उसे फिर से गौरवपूर्ण स्थान पर स्थापित करना ही उनका महान व्रत था।

चौधरी साहब का जीवन खुली किताब है, जिसे सब पढ़ सकते हैं। हो सकता है आप कई मुद्दों पर उनसे सहमत न हों, पर इसका कोई महत्व नहीं, महत्व तो इस बात का है कि हम उनमें एक ऐसे व्यक्ति और चरित्र का दर्शन पाते थे जो निष्कलंक, निःस्वार्थ और निर्भय रहा। जब अन्य नेतागण नयी योजनाओं, औद्योगीकरण, जीवन स्तर, विदेशी सम्बंध आदि की बातें कर रहे थे, चौधरी साहब अनुशासन, शक्ति, निर्भयता, चरित्र निर्माण, निःस्वार्थ सेवा, ग्रामोत्थान तथा गतिशील देश-भक्ति की शिक्षा दे रहे थे, जिसके बिना उपरोक्त लक्ष्य—भारत का भविष्य उज्ज्वल बनाना कदापि सम्भव नहीं है।

चौधरी चरण सिंह का प्रारम्भिक जीवन 'आर्य समाज' आन्दोलन से प्रभावित रहा। वह अपने सार्वजनिक जीवन को आर्य समाज की देन मानते थे। वह महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्तों में से थे। उनके जीवन के प्रत्येक पहलू पर आर्य समाज

की गहरी और अमिट छाप थी। उन्हीं के शब्दों में "देश सेवा के क्षेत्र में आने के लिए आर्य समाज मेरा प्रथम सोपान है।" चौधरी साहब आर्य समाज गाजियाबाद के कई वर्षों तक अध्यक्ष रहे। "आर्य समाज मेरी मां है, महर्षि दयानन्द मेरे गुरु हैं" यह उद्‌गार उन्होंने लाखों के जन समूह के बीच फूलबाग, कानपुर में आर्य समाज शताब्दी महोत्सव के अवसर पर निःसंकोच कहे थे। लाला लाजपतराय ने भी यही भावना व आदर आर्य समाज को दिया था।

चौधरी साहब स्पष्ट वक्ता थे। उनकी स्पष्टवादिता व निर्भीकता का उदाहरण आपातकाल के दौरान विधान सभा में साढ़े तीन घंटे लम्बा दिया गया ओजस्वी भाषण है, जिसने कांग्रेसी तानाशाही की धज्जियां उड़ा दी थीं और वही निर्भीकतापूर्ण भाषण कांग्रेसी तानाशाही के ताबूत में एक कील साबित हुआ।

चौधरी साहब का जीवन-चरित्र भविष्य में शोध का विषय होगा। आगामी युग उनके द्वारा किये गये सद्‌कार्यों का सदा-सर्वदा ऋणी रहेगा।

17

# उनके ख्वाबों का भारत

मोहम्मद यूनुस सलीम*

आजादी की लड़ाई के दौरान और आजादी के बाद देश के बहुतेरे नेताओं को देखा और उनसे मेरा जाती साबका भी पड़ा। मैंने चौधरी साहब से ज्यादा सच्चा, देश से मुहब्बत करने वाला, ईमानदार, सीधा-सादा, गांधी जी के उसूलों पर दिल से अमल करने वाला एक शख्स भी उनसे बेहतर नहीं पाया। जब मैं उनसे मिलता था, तो मेरे दिल पर उनकी मुलाकात का बहुत असर होता था। जुबान से जो कहें, उस पर अमल करें, इस तरह के इंसान दुनिया में बहुत कम मिलते हैं। वह इसी तरह के एक अनोखे इंसान थे।

मुझे चौधरी साहब की खिदमत में उस ज़माने से नियाजमंदी हासिल थी, जब वह उत्तर प्रदेश जैसे, देश के सबसे बड़े, सूबे के मिनिस्टर और चीफ मिनिस्टर थे। दिल्ली आने के बाद से तो मेरी उनसे मुलाकात और ज्यादा होने लगी लेकिन उनकी वजादारी में कोई फर्क नहीं आया। यहां मैं यह उल्लेख करना चाहता हूं, कि जिसका आपको यकीन भी नहीं होगा, आज के दौर में ऐसा कोई लीडर है, जो मिनिस्टर रहा हो, चीफ मिनिस्टर रहा हो, सेन्ट्रल में होम मिनिस्टर, फाइनेंस मिनिस्टर रहा हो, डिप्टी प्राइम मिनिस्टर या फिर प्राइम मिनिस्टर रहा हो और उसके इंतकाल के बाद उसके बीबी-बच्चों के पास सर छुपाने के लिए एक झोंपड़ा भी न हो, ऐसा कोई न दिखाई देता है और न मिलेगा। लेकिन चौधरी चरण सिंह ऐसे ही नेता थे, जिनके पास अपना खुद का मकान नहीं था।

उन्होंने अपनी सियासी जिन्दगी महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस के झंडे के नीचे शुरू की। वह सच्चे कांग्रेसी थे। उन्होंने ही हमें यह रास्ता दिखाया और बताया कि "यदि कांग्रेस सरकार कांग्रेस के उसूलों से हट जाये, उनके खिलाफ काम करे और कांग्रेसी कांग्रेस के उसूलों से गद्दारी करने लगें, तो कांग्रेस को

* सांसद एवं बिहार के भूतपूर्व राज्यपाल

छोड़कर अलग हो जाना चाहिए और मौका मिले तो कांग्रेस की सरकार को गिरा देना चाहिए।" इस तरह की हिम्मत भी 1967 में उत्तर प्रदेश में चौधरी चरण सिंह ने ही की थी। उनके ही बताये रास्ते को देखकर कांग्रेसियों में तब यह एहसास हुआ कि यदि कांग्रेस के उसूलों के साथ कोई गद्दारी करे, तो उसका मुकाबला करना चाहिए।

चौधरी चरण सिंह की यह खसूसियत थी कि हर आदमी के मुंह पर जो बात होती थी, कह दिया करते थे। इसका नतीजा यह हुआ कि लोग उन्हें गलत समझते थे। इसको लेकर उनके मुताल्लिक, खासकर प्रेस के लोग, तरह-तरह के अफसाने गढ़ते रहते थे। प्रेस के लोग तो उनपर नामहरवान थे ही, लोग समझते थे कि चौधरी चरण सिंह का अक्लियतों के साथ बर्ताव अच्छा नहीं है। मैंने चौधरी साहब को बहुत करीब से देखा है और अक्लियत के मसाइल पर उनसे घंटों गुफ्तगू की है। मैंने उनके दिल में अक्लियतों के लिए उसी तरह दुख और दर्द पाया जिस तरह उनके दिल में पिछड़ों और गरीबों के लिए था। मेरा यह दावा है कि उनसे ज्यादा इस मुल्क में अक्लियतों का पासवां और उनके हुकूक की हिफाजत करने वाला और कोई नहीं था। यहां मैं इस बात का भी जिक्र करना मुनासिब समझता हूं कि जब चौधरी साहब टिकट देने की हैसियत में और ऐसे ओहदे पर आए, तो उन्होंने कांग्रेस के मुकाबले अपनी पार्टी के सबसे ज्यादा टिकट अक्लियत के लोगों को दिए। यही नहीं, जब वह उत्तर प्रदेश के चीफ मिनिस्टर थे और प्राइम मिनिस्टर बने, तब भी उन्होंने अपनी कावीना में अक्लियत के लोगों को नुमाइंदगी देकर तरजीह दी।

चौधरी चरण सिंह सीधे-सच्चे इंसान थे। उनका रहन-सहन कितना सादा था, इससे वह सभी लोग वाकिफ हैं, जो उनके यहां आया-जाया करते थे। उनके कमरे में जमीन पर दरी पर एक चांदनी बिछी रहती और मसनद लगा रहता था, वहीं वह आने वालों से मिलते थे। वहां न तो एयर कंडीशनर था और न सोफासेट। उनकी बजादारी का यह हाल था कि वह जिससे भी मिलते थे, जिन्दगी भर उसकी पासवानी करते थे। मैं जब-जब भी उनसे मिलने उनके घर जाता था, वह हमेशा मुझे बाहर कार तक छोड़ने आते थे, यह उनकी बजादारी का ही सबूत है। मैं उनसे कहता था कि "चौधरी साहब, आप बैठिये, आप मुझसे बड़े हैं, यह अच्छा नहीं लगता।" लोगों को यह जानकर हैरत होगी कि वह जब प्राइम मिनिस्टर बने, तब भी उनका यही रवैय्या जारी रहा। यह उनका बड़प्पन ही था।

यही वजह है कि आज भी हमारे दिल उनकी याद से भरे हुए हैं। आज मुल्क में जो जागृति है, एक किस्म की बेदारी और जो एक किस्म का बलवला पैदा हो रहा है, वह उन्हीं की देन है। उनका कहना था कि "यदि गांवों में रोजगार पहुंचा दिए जायें, तो गांवों से शहरों की ओर आबादी का जो हिस्सा

भागने को मजबूर है, जिससे शहरों में परेशानियां बढ़ रही हैं, वह खुद-ब-खुद रुक जायेंगी। नतीजा यह होगा कि इससे न सिर्फ गांवों की रौनक बढ़ेगी, शहर की रौनक भी बढ़ेगी, मुल्क की रौनक भी बढ़ेगी और पूरे मुल्क की गुरबत दूर होगी। मुल्क की गुरबत दूर होगी तो मुल्क के मेहनतकश किसान-मजदूर को आजादी का वही लाभ पहुंचेगा, जिसका ख्वाब महात्मा गांधी ने देखा था।" चौधरी साहब आज हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनका बताया रास्ता हमारे सामने है। हमारा कर्तव्य है कि हम उनके बताए रास्ते पर चलें। उनके ख्वाबों का मुल्क बने, यही हमारी ख्वाहिश है।

# 18

# गांधी के सच्चे वारिस

सत्य प्रकाश मालवीय*

चौधरी चरण सिंह साधारण व्यक्ति नहीं, विचार थे। वह एक कुशल राजनीतिज्ञ ही नहीं बल्कि एक महान समाज सुधारक, यथार्थवादी दृष्टा, अर्थशास्त्री और विचारक होने के साथ-साथ देश के बहुसंख्यक किसानों, मजदूरों, दलितों, शोषितों और गरीबों के मसीहा भी थे, जो सदैव उनकी मुक्ति तथा समृद्धि के लिए सोचते और लगातार संघर्ष करते रहे।

वह एक ऐसे स्पष्टवादी राष्ट्रनेता थे, जिनमें निजी व दलगत स्वार्थ से परे रह कर—चाहे वह पंजाब समस्या का सवाल हो, असम का हो, मिजोरम का हो, सम्प्रदाय, जाति, धर्म या भाषा का सवाल हो—राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानते थे। परिणाम की चिन्ता किये बिना उनमें खरी बात कहने का साहस था। उन्होंने राष्ट्रहित में जो उचित समझा, वही कहा और वही किया।

यही एक प्रमुख कारण था कि उनके विरोधियों और व्यक्तिगत स्वार्थ और दलीय संकीर्ण मानसिकता से ग्रस्त लोगों द्वारा चौधरी साहब के ऊपर कभी जातिवादी, तो कभी प्रतिक्रियावादी, तो कभी भारी उद्योग तथा शहर विरोधी होने का आरोप लगाया जाता रहा। चौधरी साहब हमेशा जात-पांत के खिलाफ रहे। उनकी अवधारणा थी कि जातीयता देश और समाज का सबसे बड़ा दुश्मन है। उन्होंने जीवन में भोग-विलास की वस्तुओं के इस्तेमाल को खत्म करने तथा अन्तर्जातीय विवाह पर बल दिया।

चौधरी साहब लघु एवम् कुटीर उद्योगों के समर्थक थे। उनका स्पष्ट मत था कि भारी उद्योगों के विकास से इस देश के करोड़ों लोगों की समस्या का हल नहीं हो सकता। इसलिए वह लघु एवं कुटीर उद्योगों को बड़े पैमाने पर विकसित करना चाहते थे। उनका मत था कि लघु अथवा कुटीर उद्योगों में अधिक पूंजी नही लगानी

---

* सांसद एवम् भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री

पड़ती है और रोजगार के नये अवसर जुटाने के लिए इसमें क्षमता अधिक होती है। छोटी इकाइयों को देहाती क्षेत्र में भी खोला जा सकता है, इससे शहरों की तरफ रोजगार के लिए हो रहे पलायन को भी रोका जा सकता है। वह कामगारों को हर प्रकार की सहायता और प्रोत्साहन देने की बात पर जोर देते थे।

चौधरी चरण सिंह राजनैतिक सत्ता में किसानों और पिछड़ों की भागीदारी के प्रबल समर्थक थे। वह गरीब किसान की मड़ैया में पैदा हुए थे। इसलिए वह गरीब के दर्द को जानते थे। इसका श्रेय उन्हीं को जाता है, जो आज हर राजनैतिक दल किसान, गांव, गरीब और पिछड़ों की बात करता है।

चौधरी साहब के व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन में किंचित भी अंतर नहीं था। वह जो कहते थे, वही करते भी थे। छोटे-से-छोटे कार्यकर्ता से मिलते थे, उसकी बात सुनते थे।

चारित्रिक पतन को उन्होंने सभी बुराइयों की जड़ माना। वह सदैव इस बात पर बल देते रहे कि व्यक्ति की सामाजिक, व्यक्तिगत और पारिवारिक जिन्दगी एक खुली किताब की तरह होनी चाहिए। वह स्वयं इस बात की जीती-जागती मिसाल थे।

चौधरी साहब ऐसे राजनैतिक नेता थे, जिन्होंने वर्तमान में जो देश के सामने समस्याएं हैं, उनकी संभावनाओं के बारे में सन् 1980 में ही घोषणा कर दी थी। पंजाब में आतंकवाद के संदर्भ में उन्होंने बहुत पहले चेतावनी देते हुए कहा था : "देश विघटन के कगार पर है। यदि समय रहते समस्या का कारगर निदान नहीं किया गया तो देश टूट जायेगा।"

चौधरी साहब हमेशा इस बात को दोहराते रहे कि भारत के भविष्य-निर्माण के योजनाकारों का बुनियादी गुनाह यह था कि उन्होंने कृषि की उपेक्षा की। चौधरी साहब शान्तिपूर्ण तथा न्यायोचित उपायों से समाज में गैर-बराबरी को खत्म करना चाहते थे। वह भारत की कृषक और ग्रामीण जनशक्ति को बड़ी सम्पत्ति मानते थे। उनका तर्क था कि देश की प्रगति तभी होगी जब कृषि उन्नतिशील होगी तथा गांवों का विकास होगा। वह ग्रामीण भारत को ही असली भारत मानते थे और कहते थे कि किसान और गांव के आत्म-निर्भर होने से ही सारा देश आत्म-निर्भर होगा। यदि किसान खुशहाल होगा, अधिक पैसा कमायेगा तो अधिक खर्चा करेगा और इसका लाभ शहर वालों को, दुकानदारों को होगा। उत्तर प्रदेश में वह जमींदारी उन्मूलन के जनक थे। उन्होंने हल चलाने वाले किसान को जमीन का मालिक बना दिया।

चौधरी चरण सिंह ईमानदारी, सादगी और संयम के प्रतीक थे। वे जिस सादगी से रहते थे, वह सारे भारत के लिए आदर्श है। न वह बैंक बैलेन्स छोड़ गए, न चल अथवा अचल सम्पत्ति। प्रमुख उद्योगपति तथा राज्य सभा सदस्य श्री कृष्ण कुमार बिड़ला ने कुछ वर्ष पूर्व प्रकाशित एक पुस्तक में लिखा है, "धन सम्बन्धी मामलों में

चौधरी साहब पूर्ण रूप से बेदाग हैं। उनका व्यक्तिगत जीवन निष्कलंक है। उनकी आवश्यकताएं बहुत कम थीं। वह गरीबों और किसानों के लिए हमेशा चिंतित रहते थे।"

यह केवल संयोग नहीं कि 31 तारीख को सूर्यास्त के समय राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के शव को अग्नि को समर्पित किया गया था और 31 तारीख को ही सूर्यास्त के समय चौधरी चरण सिंह के शव को भी अग्नि को समर्पित किया गया। चौधरी साहब का दाह-संस्कार गांधी जी के समाधि-स्थल "राजघाट" परिसर में 'किसान घाट' पर हुआ। इसको मैं केवल संयोग नहीं मानता। वह गांधी के सच्चे वारिस थे।

देश के सामने समस्याएं मुंह बाए खड़ी हैं। महात्मा गांधी के सच्चे वारिस चौधरी चरण सिंह का रास्ता ही देश को सही अर्थों में बचा सकता है। यह तभी सम्भव है जब हम उनकी नीतियों और कार्यक्रमों का व्यापक प्रचार-प्रसार करें, जिनमें हम पिछड़ गये हैं।

# 19

# एक सार्थक बहस के जन्मदाता

लाल कृष्ण आडवाणी*

चौधरी साहब किसानों की समस्याओं को समझते थे, उनके लिए दर्द अनुभव करते थे, इसी कारण हिन्दुस्तान के इतिहास में उनका नाम है, यह कहना उचित नहीं है। दरअसल 1947 में देश के आर्थिक विकास की दो संभावनाएं थीं। देश के शासकों ने आजादी के बाद जो सम्भावनाएं चुनीं, वह हमें उस स्थिति तक ले आयीं, जिससे बहुत बड़ी वेदना चौधरी साहब को होती थी। इस वेदना का प्रकटीकरण उन्होंने कांग्रेस के अन्दर रहते हुए उस समय किया, जब कांग्रेस पार्टी सहकारी खेती के प्रस्ताव को स्वीकारने जा रही थी। उस समय उन्होंने अपने साहस का परिचय दिया, अपनी प्रतिबद्धता का परिचय दिया कि जिस बात में मैं विश्वास करता हूं, उस बात के खिलाफ यदि मेरा नेता भी कहेगा, तो मैं उसका विरोध करने से नहीं चूकूंगा। उल्लेखनीय है कि पंडित नेहरू उस समय कांग्रेस पार्टी के नेता थे और उन्होंने ही अधिवेशन में सहकारी खेती का प्रस्ताव पेश किया था और ऐसा लगता था मानो हिन्दुस्तान की कम-से-कम कृषि नीति की तो दिशा ही बदल जायेगी। चौधरी चरण सिंह उस समय प्रान्तीय नेता थे लेकिन उन्होंने जिस दृढ़ता के साथ इस प्रस्ताव का विरोध किया, उससे यह प्रतीत होता था कि वह केवल किसान की समस्याओं को ही नहीं समझते बल्कि इस बात की अनुभूति करते थे कि हिन्दुस्तान की समस्या किसान की समस्या है। किसान का विकास यानी देश का विकास, देहात का विकास यानी देश का विकास, यह दोनों अलग-अलग नहीं हैं बल्कि दोनों पर्यायवाची हैं।

1947 के बाद हमारे दो रास्ते थे। मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि एक गांधी जी का रास्ता और एक नेहरू जी का रास्ता। अक्सर लोग कहते हैं कि अमुक व्यक्ति की तारीफ करो, देश के आर्थिक विकास के लिए गांधी के रास्ते पर चलो, नेहरू के रास्ते पर चलो लेकिन मैं इसे चौधरी साहब के साहस का ही प्रतीक

* सांसद एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष, भाजपा

मानता हूं कि उन्होंने अपनी पुस्तक 'इकोनॉमिक नाइटमेयर ऑफ इंडिया : इट्स कॉजेज एण्ड क्योर' में कहा है कि "गांधी-नेहरू कैन नॉट बी हाईफेनेटेड।" ये दो चीजें हैं। हालांकि दोनों के अपने-अपने गुण हैं। दोनों के अपने-अपने पक्ष-विपक्ष हैं। नेहरू जी ने हिन्दुस्तान के विकास में बहुत बड़ा योगदान दिया है। आज मैं अगर संसद सदस्य के नाते संसद की महत्ता का कहीं बखान करता हूं, तो नेहरू जी से कितने भी मतभेद होने के बावजूद उनके योगदान की उपेक्षा तो नहीं कर सकता। इसमें दो राय नहीं कि देश के अन्दर संसद का जो स्थान व सम्मान बना, उसमें नेहरू जी का बहुत बड़ा योगदान है। जहां तक आर्थिक क्षेत्र का सवाल है, तो उसके बारे में मेरा यह कहना है कि आज जो हमारे देश की स्थिति है या हम जहां तक पहुंचे हैं, यह नेहरू जी की नीतियों का ही नतीजा है।

यदि 1947 में हमने गांधी जी का रास्ता अपनाया होता, तो देश की हालत कुछ और होती। गांधी जी ने केन्द्रीकरण के स्थान पर विकेन्द्रीकरण को, शहर के स्थान पर देहात को, उद्योग के स्थान पर कृषि को, बड़े उद्योग के स्थान पर छोटे उद्योग को चुना। इस चयन के बारे में तर्क के साथ, तथ्यों के साथ और आंकड़ों के साथ 1967 के बाद लगातार—वह चाहे मुख्यमंत्री के रूप में हों, गृहमंत्री के रूप में हों, या देश की राजनीति के शीर्षस्थ नेता के रूप में रहे हों, चौधरी साहब ने बहस छेड़ने का काम किया, जो 67 से पहले किसी ने नहीं किया था। उन्होंने जनता के सामने यह सवाल भी उठाया कि गांधी का रास्ता सही था या नेहरू का। आज यह मुद्दा बहस का रूप ले चुका है और इसके बारे में चर्चा आम हो गई है। यानी अब हर एक की ज़बान पर यह सवाल है कि यह रास्ता बदलना चाहिए। यदि देश को आर्थिक प्रगति करनी है तो वह प्रगति गांव-किसान की प्रगति के साथ पर्यायवाची है। इसका श्रेय भी चौधरी साहब को ही जाता है।

चौधरी साहब की स्पष्टवादिता, ईमानदारी, सादगी, प्रतिबद्धता और प्रामाणिकता की जो छाप है, वह राजनीति के क्षेत्र में कार्य करने वाले हर कार्यकर्ता के लिए दीपस्तम्भ है। उनका जितना भी हम अनुसरण कर सकें, वह कम है। देश की राजनीति में, खासकर देश की अर्थनीति को दिशा देने में चौधरी साहब का सबसे बड़ा योगदान है।

यदि सही मायने में देश का विकास करना है, तो हमें चौधरी साहब के बताए रास्ते पर चलना होगा, तभी हम एक नया हिन्दुस्तान बनाने में कामयाब होंगे।

20

# किसानों के सच्चे रहनुमा थे चौधरी साहब

हरिकिशन सिह सुरजीत*

चौधरी चरण सिंह ने भारत के कौमी मुक्ति संघर्ष और किसानों को जागरूक करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। उत्तरी भारत में पिछली सदी के अंत और इस सदी की शुरुआत में दो महान व्यक्तियों का जन्म हुआ, उनमें एक थे चौधरी छोटूराम और दूसरे थे चौधरी चरण सिंह। इन दोनों ही महान विभूतियों ने यह अनुभव किया कि जब तक किसानों में चेतना पैदा नहीं होती, तब तक हम आर्थिक, सामाजिक उन्नति की दिशा में आगे नहीं बढ़ सकते। चौधरी छोटूराम और चौधरी चरण सिंह में जो दो बातें समान थीं, वह यह कि किसानों में नई चेतना लायी जाये और साम्प्रदायिक सद्भाव कायम रखा जाय। दो बातों के लिए इन दोनों शख्सियतों ने ताजिन्दगी संघर्ष किया। दोनों के मन में यह भाव कभी नहीं आया कि किसान हिन्दू है, मुसलमान है या सिख है—यही वजह रही कि दोनों, यानी चौधरी छोटूराम और चौधरी चरण सिंह जी को हर तबके के, धर्म के मानने वाले किसान अपना नेता मानते थे।

चौधरी छोटूराम की बनिस्बत चौधरी चरण सिंह की विशेषता यह थी कि वह किसानों में चेतना जगाने और साम्प्रदायिक सद्भाव बनाये रखने के साथ-साथ यह भी मानते थे कि जब तक हमारा देश गुलाम रहेगा, यहां से अंग्रेज निकाल बाहर नहीं कर दिये जाते, तब तक इस देश के किसानों की न तो समस्याओं का समाधान ही हो सकता है और न देश खुशहाल हो पायेगा। इसीलिए वह खुद तो मुल्क के कौमी मुक्ति संघर्ष में कूद ही पड़े, साथ ही इसके लिए उन्होंने मुल्क के किसानों को भी लामबंद किया। यहां यह उल्लेख करना ग़ैर मुनासिब नहीं होगा कि महात्मा गांधी जी ने भी यह अनुभव किया था कि जब तक देश के गांवों में रहने वाली 80 फीसदी जनता, जिनमें ज्यादातर किसान-मजदूर हैं, कौमी मुक्ति संघर्ष में हिस्सा नहीं लेते, तब तक देश आजाद नहीं हो सकता और हम देश का एक नया नक़्शा नहीं देख पायेंगे।

---

* भाकपा महासचिव



चौधरी साहब ने आजादी से पहले और उसके बाद देश में किसानों की समस्याओं को जिस पक्के इरादे से उठाया, उनको दूर किए जाने के लिए जो संघर्ष किया, वह एक मिसाल है। इसका असर उनकी अपनी पार्टी में ही नहीं बल्कि देश की दूसरी पार्टियों में भी देखने को मिलता है।

आज परम्पराएं टूट रही हैं या फिर नई-नई बातों के साथ नई-नई जगह बना रही हैं, लेकिन चौधरी साहब ने सामाजिक सुधार और आर्थिक दर्शन के रूप में जो बातें कहीं, उनका आज भी महत्व है। उन्होंने किसानों में एक नया उत्साह और चेतना पैदा की। उनके कहने और करने में कभी अंतर नहीं दिखाई दिया। वह जो कहते थे, उस पर अमल करते थे। वह ऐसे नेता नहीं थे, जिनसे चुनाव के मौके पर चाहे कुछ कहलवा लो। कई ऐसे मौके आए लेकिन उन्होंने कभी भी गलत बात कहने या गलत वायदा करने से इंकार कर दिया। वह तो वही बात कहते थे जो उनके मन में होती थी, जिससे किसानों की भलाई हो, देश का भला हो।

मुझे जो स्नेह चौधरी चरण सिंह से मिला, वह मैं कभी भूल नहीं सकता। किसी मुद्दे पर उनसे मेरी कभी-कभी घंटों बात होती थी, बहस होती थी। यकायक वह किसी सवाल पर मेरी राय जानने या उस पर बहस करने के लिए मुझे बुला लिया करते थे, ठीक उसी तरह जिस तरह अपने घर के किसी सदस्य को बुला लेते हैं। आपातकाल के बाद तो यह सिलसिला काफी बढ़ गया और मुझे उनके साथ काम करने के काफी मौके मिले। यहां यह कहने में मुझे गर्व है, कि उनके अपने दल के बाहर किसी अन्य के मुकाबले मुझे उनका सबसे ज्यादा प्रेम मिला।

आज वह हमारे बीच में नहीं हैं लेकिन हमारे पास उनके विचार हैं। किसानों में उन्होंने जो नई चेतना पैदा की, आज उसका असर हम देख रहे हैं। नया परिवर्तन इसका सबूत है। भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह द्वारा अपनी सरकार में बजट का पचास फीसदी हिस्सा खेती और गांव पर खर्च करने की योजना में चौधरी चरण सिंह की ही तस्वीर नज़र आती थी। मैं उम्मीद करता हूं कि चौधरी साहब का नाम उनके कार्यों के कारण अमर रहेगा तथा उनके विचार किसान की हमेशा रहनुमाई करते रहेंगे।

# 21

# वह फिरकापरस्ती के खिलाफ लड़े

एम. फारूखी*

चौधरी चरण सिंह एक महान स्वतंत्रता सेनानी थे। वह गांधी के अनुयायी थे। इसमें दो राय नहीं कि आजादी के बाद कैसा भारत बने, इसके बारे में उन्होंने देश को एक नई सोच दी। देश के किसान-मजदूरों, गरीबों और पिछड़ों को एक नई दिशा दी, उन्हें अपने हक का एहसास दिलाया और उनमें राजनीति में भागीदारी का एहसास जगाया, जिसके लिए किसान-मजदूर और पिछड़े तबके सदा उनके ऋणी रहेंगे।

इतिहास के पृष्ठ उलटने पर हमें मालूम होता है कि राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन ने गांधी जी के नेतृत्व में 1920 के बाद जब एक नया मोड़ लिया, उस समय गांधी जी ने भी किसानों की तरफ देखा। उस समय हमारा राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन शहरों तक सीमित था। लेकिन गांधी जी ने महसूस किया कि अगर अंग्रेजों को यहां से बाहर निकालना है, आजादी हासिल करनी है, तो यह किसान के बल पर ही सम्भव है। जब तक किसान को आंदोलन में हिस्सेदार नहीं बनायेंगे, तब तक हमारे राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन में वह शक्ति नहीं आयेगी, जिसकी हमें जरूरत है।

यहां मेरा यह कहना है कि चौधरी चरण सिंह, जो गांधी के अनुयायी थे, की विचारधारा किसान की विचारधारा थी। जाहिर है कि जब मुल्क में आबादी के 80 फीसदी लोग गांव में रहते हैं, तो पहला काम यह होना चाहिए कि हम सबसे पहले गांव के बारे में सोचें। भारत आजाद होगा और उस भारत में यदि किसान की दिशा और दशा ठीक नहीं होगी, तो कैसे नया भारत बनेगा। इस हाल में इसकी कैसे कल्पना की जा सकती है। चौधरी चरण सिंह ने इसके लिए बहुत संघर्ष किया। हालांकि पंडित नेहरू से भी उनके इस मामले में मतभेद रहे कि सर्वप्रथम प्राथमिकता किस चीज को दी जाये, उद्योग को दी जाए, खेती-बाड़ी को दी जाये या फिर कुटीर उद्योग-धंधो को दी जानी चाहिए। हम उसके अन्दर कोई अन्तर्विरोध नहीं समझते

* भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सचिव

लेकिन चौधरी चरण सिंह की जो देन है और जिसे याद रखना चाहिए, वह यह कि जब गांव की हालत सुधरेगी, तो देश सुधरेगा।

उन्होंने देश में हिन्दू -मुस्लिम एकता के लिए काम किया। खासकर उत्तर प्रदेश के पश्चिमी इलाके में, जहां से वह चुनकर आते थे। आज देश में इसकी बहुत जरूरत है,वरना हम राष्ट्र को एक नहीं रख सकते। यदि यह एकता न रही, तो हमारा राष्ट्र टूट कर बिखर जाएगा।

हम किसान-मजदूर और समाज के गरीब पिछड़े तबकों की बहबूदी के लिए काम करते रहेंगे और देश की एकता और अखंडता की खातिर हिन्दू-मुस्लिम भाई-चारे को बनाये रखेंगे तथा हम भाई-चारे को तोड़ने वाली फिरकापरस्त ताकतों का मुंहतोड़ जवाब देंगे और इस तरह चौधरी साहब को हमेशा अपने बीच बनाए रख सकेंगे।

22

# ग्राम देवता थे चौधरी चरण सिंह

चौ. कुम्भाराम आर्य*

चौधरी साहब किसान के बेटे थे। किसान के घर पैदा होने से किसान की आर्थिक-सामाजिक और शासनिक-प्रशासनिक व्यवस्थाओं से पूर्ण परिचित थे। इसलिए गांव-गरीब और किसान की व्यथा से वे सदैव बेचैन रहते थे। चौधरी साहब के माता-पिता सोच के धनी थे, इसलिए आर्थिक संकटों के बीच चौधरी साहब को शिक्षा प्राप्त करने का पूरा अवसर मिला।

उस समय धार्मिक-सामाजिक विषमताएं अमानवीयता पर तुली हुई थीं। जिसका पर्दाफाश करने के लिए महर्षि दयानंद सरस्वती वैदिक पताका फहराते हुए जब इधर आये, तो यहां के किसान उनके अनुयायी बन गये। इसमे जाट सबसे आगे रहे। चौधरी साहब भी आर्य समाजी बन गये। पुराण पंथियों और आर्य समाजियों के बीच बौद्धिक संघर्ष होना स्वाभाविक था, क्योंकि आर्य समाज उनका पर्दाफाश करती थी। आर्य समाजियों और सनातनियों के बीच जब भी शास्त्रार्थ होता, पुराणपंथी टिक नहीं पाते थे और उन्हें हार का सामना करना पड़ता था। इन पुराणपंथियों में ब्राह्मण और बनिये मुख्य थे। चौधरी साहब आर्य समाजी थे, इसलिए पुराणपंथी चौधरी साहब का विरोध करते थे। चौधरी साहब ने महर्षि दयानन्द जी के वैदिक साहित्य के स्वाध्याय को अपनी आचार संहिता में ढाल लिया था जो जीवन भर उनके साथ रहीं। इस आचार संहिता के कारण ही चौधरी साहब कुरीतियों के प्रबल विरोधी बने। वे स्वाधीनता के समर्थक थे।

स्वाधीनता अभियान कांग्रेस के माध्यम से महात्मा गांधी चला रहे थे। चौधरी साहब ने गांधियन साहित्य का अध्ययन किया और कांग्रेस के सदस्य बन कर सक्रिय राजनीति में प्रवेश किया। चौधरी साहब धर्म और सामाजिक क्षेत्र में महर्षि दयानंद जी और राजनैतिक जगत में महात्मा गांधी के निर्देशन पर आजीवन चले।

---

* भूतपूर्व सांसद

चौधरी साहब के चिंतन-मनन का विषय कुरीतियों का निराकरण और देश को स्वाधीनता दिलाना रहा। इस स्वाध्याय मीमांसा ने चौधरी साहब को सत्यनिष्ठ बना दिया। इससे पुराणपंथी लोग चौधरी साहब की महत्ता और गरिमा को योजनाबद्ध ढंग से क्षति पहुंचाने में लग गये। इस सबके बावजूद साधारण जनता, जो धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक वेदनाओं से पीड़ित थी, ने चौधरी साहब को अपना मसीहा मान लिया, जिससे विरोधियों के षडयंत्र कारगर नहीं हो सके।

स्वाधीनता से पूर्व भारत को औपनिवेशिक सत्ता संभालने का अवसर मिला। उसमें विधान सभाओं के चुनाव हुए और मंत्री मंडल बने। चौधरी साहब छपरौली विधान सभा क्षेत्र से विधायक बनकर विधान सभा में पहुंचे।

चौधरी साहब राजनीति में रहते हुए भी राजनैतिक आचार संहिता के मूल तत्व साम-दाम, दण्ड और भेद को पूर्ण रूप से ग्राहय करने के स्थान पर सत्य, न्याय और नैतिकता के सिद्धान्त पर चलते रहे, नतीजतन उन्हें पग-पग पर संकटों का सामना करना पड़ा।

एक बार चौधरी साहब को देश का प्रधानमंत्री बनने का भी मौका मिला। पर सत्य,न्याय और नैतिकता के मार्ग पर चलने वाले चौधरी साहब ने बहुमत के लिए न तो जोड़-तोड़ की और न किसी के आगे समर्पण । मैंने उनसे कांग्रेस के समर्थन के बावत बात की तो वह मेरी पीठ पर हाथ रखकर बोले कि "केवल प्रधानमंत्री पद के लिए जीवन भर की ईमानदारी बरबाद करने के लिए चरण सिंह तैयार नहीं। मैं चरण सिंह हूं और चरण सिंह ही रहूंगा।" मैं, सभी साथी, सहयोगी और शुभ चिंतक सरकार बनाये रखने के लिए चौधरी साहब को मनाने में लगे थे। पर चौधरी साहब की नैतिकता के आगे किसी की कुछ नहीं चली और उन्होंने प्रधानमंत्री पद से त्याग-पत्र दे दिया। लोकसभा भंग हो गयी। चुनावों की तैयारियां होने लगीं। चुनावों के लिए चौधरी साहब के पास उम्मीदवारों को देने के लिए कुछ नहीं था। अर्थाभाव के कारण पार्टी बुरी तरह से हार गयी लेकिन चौधरी साहब इतना सब खोकर भी अहं के साथ कहते थे-"मैंने अपनी ईमानदारी और नैतिकता पर आंच नहीं आने दी।"

ऐसे थे चौधरी चरण सिंह जो यथार्थ में युग पुरुष थे। भगीरथ गंगा को लाकर 'युग पुरुष' कहलाए-चौधरी चरण सिंह राजसत्ता की गंगा को गांव-गांव तक ले जाने वाले राजनेता होने के कारण 'युग पुरुष' कहलाए। स्वाधीनता के बाद राजनैतिक सत्ता नागरीय क्षेत्र की शोभा बन गई थी। ग्रामीण क्षेत्र में वह होली के त्यौहार की भांति पांच वर्ष में एक बार आती थी ।

भारत की स्वाधीनता के साथ राजसत्ता अवतरित हुई और नागरीय क्षेत्र में फंस कर रह गयी। गंगा को तल पर लाने के लिए भगीरथ ने तपस्या की और गंगा को शिव की जटा से मुक्ति दिलाई। गंगा मुक्त होकर भारत भूमि को पवित्र करती

हुई बंगाल की खाड़ी में पहुंची। आज गंगा 'भगीरथी' भी कहलाती है। भगीरथ ने गंगा को मुक्त कराया, गंगा ने भगीरथ को 'युग पुरूष के' नाम से अमरता प्रदान की।

चौधरी चरण सिंह ने नागरीय क्षेत्र में फंसी राजसत्ता की पुकार सुनी। उसे मुक्त कराने के लिए उन्होंने दृढ़ निश्चय के साथ संघर्ष का रास्ता अपनाया। उनके संघर्ष के परिणाम स्वरूप राजसत्ता मां बसुन्धरा के लालों के पास पहुंची। राजसत्ता को मां बसुन्धरा के लालों के पास पहुंचने का अवसर प्रदान करके चौधरी चरण सिंह ग्रामीणों के देवता बन गये। जब तक लोकतंत्र रहेगा, चौधरी चरण सिंह 'ग्राम देवता' के रूप में पूजे जाते रहेंगे।

आज इस बात को कौन नहीं जानता कि एक समय राजनैतिक दलों के नेता, जो किसान और मजदूर की बात करने में हिचक महसूस करते थे, वही आज सत्ता हथियाने के लिए किसान और मजदूर का नारा बुलन्द करने में लगे हुए हैं। चौधरी चरण सिंह ने राजसत्ता को गांव-गांव तक पहुंचा कर किसान मजदूर की पूछ करवा दी। यही वजह है कि किसान और मजदूर को विश्वास में लेने के लिए राजनेता एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ में हैं। इस होड़ के कारण किसान और मजदूर में वर्ग-चेतना उत्पन्न हुई और उसकी आँखें खुल गयीं।

अब मजदूर राजनीतिज्ञों के पंजे से छुटकारा पाने के लिए वर्ग चेतना के द्वारा संगठित होगा। किसान आज वर्ग चेतना के आधार पर संगठित होने के लिए कमर कस कर चल पड़ा है। अनेक प्रान्तों में किसान यूनियन, किसान संघर्ष समिति, खेड़ून संगठन आदि के नामों से किसान स्वतंत्र रूप से संगठित हो रहा है। राजनेता इस स्थिति से चिन्तित और परेशान हैं। इसके मूल में चौधरी साहब ही रहे, जिन्होंने देश के गरीब-मजदूर और किसान तथा सदियों से शोषित -पीडित लोगों में चेतना जगाने का काम किया। देश की राजनीति को जन-साधारण की राजनीति बनाने का श्रेय चौधरी चरण सिंह को ही जाता है। इसलिए चौधरी चरण सिंह जन-साधारण के राजनैतिक मसीहा होने के नाते भी 'युग पुरुष' कहलाये।

# 23

# हमदर्द और नेक दिल इंसान

धनिक लाल मंडल*

भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह स्वभाव से ही अत्यन्त मृदु, विनम्र और सरल-सहज प्रकृति के इंसान थे।धोती-कुर्ता और टोपी- यह वेश-भूषा उनके सादा जीवन की पहचान थी। उनका रहन-सहन खान-पान और सोच-यह सब कुछ इस तथ्य को रेखांकित करते थे कि वह जमीन से जुड़े हुए थे। ग्रामीण परिवेश में जन्मे-पले होने के कारण वह ग्रामीणों की तकलीफों,दुःख -दर्द और समस्याओं से भली-भांति परिचित थे। अभावग्रस्त एवं दलितों-शोषितों के प्रति हमदर्दी और संवेदनशीलता उनके चरित्र की प्रमुख विशेषता थी। अतः उन्होंने सदैव विपन्न ग्रामीणों के कल्याण-उत्थान की बात सोची और जो कुछ उनसे बन पड़ा, उनके लिए किया भी। यही वजह है कि वह महान किसान नेता के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

चौधरी चरण सिंह जी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के चिन्तन व दर्शन से बहुत प्रभावित थे। गांधी जी का विचार था कि भारत के स्वतंत्र होने के पश्चात् दलितों और दीन-दुखियों के कष्टों का निवारण हो जायेगा, उनकी आंखों के आंसू पुंछ जायेंगे और आजादी की सुबह के साथ ही भारत के कोटि-कोटि गरीबों के लिए एक नये युग का सूत्रपात होगा, जिसके फलस्वरूप हर भारतीय को पेट भर रोटी, तन ढांपने को कपड़ा और सिर छिपाने के लिए छत का आश्रय मिल सकेगा। सैकड़ों वर्षों से पीढ़ी दर पीढ़ी पराधीन- जीवन बिताने के कारण जो मायूसी उनके चेहरों पर छाई थी, वह छंट कर सुखद मुस्कान में बदल जायेगी। सम्भवतः गांधी जी के अनुयायी होने के नाते चौधरी चरण सिंह जी का भी यही सपना था कि स्वतन्त्र भारत के लोग फटेहाल न रहकर शीघ्र ही सुखी जीवन-यापन करने लग जायेंगे। परन्तु जब उनका यह स्वप्न पूरा नहीं हुआ तो उनका चिन्तित हो उठना स्वाभविक था। इस सम्बन्ध में उन्होंने अपनी चिन्ता का कई स्थानों पर उल्लेख किया है।

---

* हरियाणा के राज्यपाल

वह एक अत्यधिक जागरूक व्यक्ति थे। भारतीय सामाजिकार्थिक परिस्थितियों से बखूबी वाकिफ थे वह और उन्हें इस बात का आभास था कि भारत के कोटि-कोटि निर्धन व विपन्न लोगों की दशा को कैसे सुधारा जा सकता है। उनका मानना था कि स्वतन्त्र भारत को निर्धनता,बेरोजगारी, अपूर्ण-रोजगार और विभिन्न वर्गों की आय में भारी असमानता, इत्यादि समस्याएं ब्रिटिश सरकार से विरासत में मिली हैं। उन्हें खेद था कि आजादी के बाद कई दशक बीत जाने पर भी सरकार इन समस्याओं का समाधान नहीं कर सकी बल्कि इन समस्याओं में भ्रष्टाचार की समस्या का और इजाफा हो गया। चौधरी चरण सिंह जी का मानना था कि यह तत्कालीन सरकार और नेताओं की गलत नीतियों और वरीयताओं के परिणामस्वरूप ही उक्त समस्याओं का समाधान नहीं हो सका। सरकार ने इस तथ्य को दरगुजर कर दिया कि भारत के ज्यादातर लोग झुग्गी-झोपड़ियों और कच्चे मकानों में रहते हैं। सरकार ने हमारे देश की सामाजिकार्थिक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर नीतियां तैयार नहीं कीं बल्कि विदेशी नीतियों को भारत पर थोपने का प्रयास किया।

चौधरी चरण सिंह जी का अभिमत था कि स्वतंत्रता के तुरन्त पश्चात् भारत सरकार द्वारा जो औद्योगिक नीति अपनाई गई, उसके ही गलत नतीजे देश की गरीब जनता को भुगतने पड़े। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी चाहते थे कि खेती-किसानी और घरेलू उद्योगों को भारी उद्योगों की तुलना में अधिमान दिया जाये परन्तु गांधी जी की इन नीतियों को अस्वीकार कर दिया गया। यद्यपि 1955 में कांग्रेस ने समाजवाद का नारा तो दिया परन्तु कुटीर उद्योगों की तरफ समुचित ध्यान न देकर बड़े उद्योगों को ही प्रोत्साहन दिया। गांधी जी चाहते थे कि राष्ट्र ऐसी नीति अपनाये जो ग्राम-केन्द्रित हो और सर्वाधिक निर्धन और कमजोर लोगों को ध्यान में रखकर तैयार की गई हो परन्तु हुआ उसके विपरीत।

गांधी जी समाज के निचले और जमीन से जुड़े हुए वर्ग को ध्यान में रखकर योजनाएं तैयार करने की बात कहा करते थे। चौधरी चरण सिंह जी का भी यही मत था कि भारत का हित-साधन खेती-किसानी और ग्राम्य-कुटीर व लघु उद्योगों को प्रोत्साहन देकर किया जा सकता है, ताकि जन-सामान्य को खाने के लिये अन्न और पहनने के लिये कपड़ा उपलब्ध हो और अधिकाधिक लोगों को काम मिल सके।

चौधरी साहब की राय में भारत की परिस्थितियों को देखते हुए स्थानीय कारीगरी और कच्चे माल पर आधारित छोटे उद्योगों को प्रोत्साहन देकर उनके माध्यम से ज्यादा से ज्यादा लोगों को रोजगार मुहैया किया जाता, तत्पश्चात् भारी उद्योगों को लगाया जाता तो श्रेयस्कर होता परंतु सरकार ने ऐसा नहीं किया। इसका मुख्य कारण था कि तत्कालीन नीति-निर्धारक ग्रामीण भारत की वास्तविक परिस्थितियों और समस्याओं से पूरी तरह परिचित नहीं थे। इसलिए उन्होंने 'को-ऑपरेटिव फार्मिंग का नारा भी दिया था। इस बारे में चौधरी जी का मत था कि 'को-ऑपरेटिव फार्मिंग; भारतीय

कृषि के परिदृश्य तथा ग्रामीण कृषक समाज के अनुकूल नहीं है। व्यापक पैमाने पर सहकारी कृषि का अर्थ है कृषि का मशीनीकरण।

चौधरी साहब के विचार में, भारतीय संदर्भ में; यह सरासर गलत धारणा थी कि 'सहकारी-कृषि' से उत्पादन में वृद्धि होती है। हां, अन्य देशों की बात और है। जहां तक भारतीय क्षेत्रों की विविध प्रकार की मृदाओं (मिट्टी), जलवायु और वर्षा आदि का प्रश्न है, उनके दृष्टिगत मशीनों द्वारा खेती से प्रति व्यक्ति उत्पादन नहीं बढ़ेगा, बल्कि कम होगा। उन्हें खेद था कि भारतीय अर्थशास्त्रियों और योजना तैयार करने वालों ने देश में प्रचलित परिस्थितियों का ध्यान नहीं रखा। भारत में कृषि भूमि कम है और आबादी सघन। अतः हमें प्रति एकड़ उपज बढ़ाने की आवश्यकता है, जबकि अमरीका, कनाडा, आस्ट्रेलिया और ऐसे ही दूसरे देशों में बड़े पैमाने पर मशीनों द्वारा बेहतर परिणाम प्राप्त किये गये हैं। वहां प्रचुर मात्रा में कृषि-भूमि उपलब्ध होने के कारण प्रति व्यक्ति उपज बढ़ जाती है।

चरण सिंह जी इस बात से भी भली-भांति परिचित थे कि मानव और पशु-श्रम के स्थान पर पैट्रोल तथा डीजल शक्ति के प्रयोग से हमारी अर्थव्यवस्था पर बहुत दुष्प्रभाव पड़ेगा। बेरोजगारी हद से ज्यादा बढ़ जायेगी। भारत में ऐसी परिस्थितियां नहीं हैं कि कृषि के मशीनीकरण के फलस्वरूप बहुत बड़ी तादाद में जो लोग बेरोजगार हो जायेंगे, उन्हें उद्योगों अथवा अन्य सेवाओं में खपाया जा सके।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतीय कृषि अर्थशास्त्र संबंधी चौधरी चरण सिंह जी की दृष्टि अत्यन्त पैनी थी। यदि उनके विचारों को विभिन्न योजनाएं तैयार करते समय ध्यान में रखा जाता तो निश्चय ही कृषकों व कृषि मजदूरों का पर्याप्त हित-साधन हो सकता था। उम्र के आखिरी हिस्से में उन्हें भारत के प्रधानमंत्री के पद पर आसीन होने का सुअवसर अवश्य मिला, परंतु इस पद पर उनका कार्यकाल इतना थोड़ा था कि वह अपने इन विचारों को कार्यान्वित नहीं कर सके। उनके द्वारा लिखित अनेक पुस्तकें ऐसी हैं, जिनमें भारतीय कृषि तथा अर्थव्यवस्था सम्बन्धी उनके बहुमूल्य विचार दर्ज हैं, जिनसे लाभान्वित हुआ जा सकता है। उनके विचार सदैव दलितों-शोषितों व अभावग्रस्त किसान व कृषि मजदूरों के हित-साधन की दिशा में संचालित थे। वह ग्रामीण एवं कृषक समाज के मध्य सदैव हमदर्द व नेक इंसान के तौर पर स्मरण किये जाते रहेंगे।

24

# गांधीवादी अर्थनीति के प्रतिपादक

मुलायम सिंह यादव*

चौधरी साहब देश के उन गिने-चुने नेताओं में से थे जिन्होंने देश को भारतीय जनमानस एवं उसकी समृद्ध परम्पराओं के अनुरूप सार्थक दिशा-निर्देश प्रदान किया, ताकि भारत की अपनी अलग पहचान बनी रहे। देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में उन्होंने महात्मा गांधी व अन्य महान राष्ट्र नेताओं के साथ अग्रिम भूमिका निभायी और स्वतंत्रता के बाद देश के आर्थिक विकास तथा गरीब और पिछड़े लोगों को सामाजिक-आर्थिक न्याय दिलाने में भी वे सदैव सक्रिय रहे। हर आंख के आंसू पोंछने के लिए उन्होंने नेहरू की नीतियों के स्थान पर गांधी जी का रास्ता चुना।

किसानों के तो चौधरी साहब मसीहा थे ही, साथ ही वे देश के उन थोड़े से नेताओं में थे जिनका सीधा सम्बन्ध यहां की धरती से रहा है। अपने लम्बे राजनैतिक और सार्वजनिक जीवन में गांवों और किसानों के लिए उन्होंने जितना कुछ किया, शायद उतना उनके किसी समकालीन नेता ने नहीं किया।

भूमि का जैसा बन्दोबस्त किसानों के लिए उन्होंने उत्तर प्रदेश में किया, वैसा सम्भवतः अन्यत्र कहीं नहीं हुआ। आज दुनिया के अर्थशास्त्री भी यह महसूस करते हैं कि जमीन का अगर कहीं सही बन्दोबस्त हुआ है , तो वह उत्तर प्रदेश में हुआ है और इसका श्रेय चौधरी साहब को है।

गांधी जी बड़े घर में पैदा हुये थे, गांव में नहीं, लेकिन उनको ग्रामीण जीवन का बहुत गहरा अनुभव था। चौधरी साहब तो सीधे-सादे किसान के बेटे थे और गांव तथा खेती से जुड़े थे। वह गांधी के ग्रामीण अनुभव से परिचित थे। इसीलिए उनका कहना था कि गांधी जी की नीतियों पर चल कर ही हम देश को समृद्धि के रास्ते पर ले जा सकते हैं। उन्होंने जीवन भर इस दिशा में संघर्ष किया।

वह कहा करते थे कि किसानों की एक आंख खेत की मेड़ पर और एक आंख

---

* उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री

लखनऊ पर होनी चाहिए अर्थात इस बात पर कि सरकार क्या कर रही है, तभी देश सही दिशा में आगे बढ़ सकता है। वह सदा गांव और किसान की बात करते थे। लेकिन चौधरी साहब को केवल किसानों और गांव का नेता कहना उनके साथ नाइन्साफी होगी, उनका सम्मान गिराना होगा। वास्तव में चौधरी साहब सारे देश के नेता थे, राष्ट्रीय नेता थे। वह गांव और शहर दोनों के नेता थे। उनका कहना था कि जब तक गांव खुशहाल नहीं होते, शहर तरक्की नहीं कर सकते। चौधरी साहब जब गांव और किसानों की तरक्की की बात कहते थे, तो उसमे शहरों की भी खुशहाली निहित होती थी।

चौधरी साहब ने गांधीवाद के आधार पर आर्थिक नीति का प्रतिपादन किया। उनका मानना था कि देश की आर्थिक तरक्की के लिये गांवों और किसानों की तरक्की आवश्यक है। वे श्रम-मूलक आर्थिक नीति के समर्थक थे। उनका कहना था कि देश में अपार श्रम शक्ति है और पूंजी की कमी है, इसलिये आर्थिक विकास के लिये उपलब्ध श्रम शक्ति का अधिकाधिक उपयोग सुनिश्चित किया जाना चाहिए। उनका मत था कि हमारी आर्थिक नीति का उद्देश्य कुल राष्ट्रीय उत्पादन बढ़ाने के बजाय उत्पादक रोजगार बढ़ाना होना चाहिए। उनका कहना था कि केवल बड़े उद्योगों पर ध्यान केन्द्रित करने की बजाय हमें गांधी जी के बताये रास्ते पर चल कर कुटीर और ग्रामोद्योगों को बढ़ावा देना चाहिए। कम पूंजी लगाकर अधिक रोजगार के अवसर सृजित करना उनका ध्येय था।

वह गरीबी दूर करने के लिये, बेरोजगारी दूर करने के पक्षधर थे। इसीलिये उन्होंने बेरोजगारी और अर्द्ध-बेरोजगारी खत्म करने और भूमि पर बोझ कम करके खेती के काम मे लगे लोगों को लघु और कुटीर उद्योगों में लगाने पर जोर दिया। वह चाहते थे कि प्रति एकड़ उत्पादकता बढ़े और प्रति एकड़ काम करने वालों की संख्या घटे। उनकी आर्थिक नीति का मुख्य मुद्दा यह था कि हाथ से बनने वाले सामान मशीन से न बनें। उनका मत का कि कोई भी बड़ा या मध्यम उद्योग ऐसी चीज बनाने के लिए न लगे जो कुटीर या छोटे उद्योग के जरिये बनायी जा सकती है। गांधी-दर्शन के क्रियात्मक पक्ष के अनुसार चौधरी साहब कृषि के लिए उपयोगी एवं कृषि पर आधारित लघु एवं कुटीर उद्योग को प्रोत्साहन देने के पक्ष में थे। उनका विश्वास था कि लघु एवं कुटीर उद्योगों की उन्नति व प्रसार से देश की बेरोजगारी दूर करके अर्थ-व्यवस्था को सुदृढ़ आधार दिया जा सकता है।

चौधरी साहब चाहते थे कि जब तक हमारा आर्थिक विकास उस स्तर पर न पहुंच जाये, जहां श्रमिकों की कमी महसूस होने लगे, तब तक यन्त्रीकरण द्वारा उत्पादन में वृद्धि न की जाये। उनके अनुसार देश में खेती का अधिकाधिक विकास करके उत्पादन बढ़ाने तथा खेती के धन्धे से अधिक से अधिक लोगों को हटाने के अलावा देश के विकास का कोई दूसरा रास्ता नहीं है। जब तक खेतिहर की क्रय-शक्ति नहीं बढ़ेगी, तब तक उद्योगों का विकास भी नहीं होगा। चौधरी साहब का स्पष्ट मत था

कि छोटे परिवारों के खेतों और छोटे उद्योगों की छोटी इकाइयों वाली अर्थ-व्यवस्था से ही लोकतंत्र मजबूत होगा।

यह कितनी विडम्बना है कि आजादी के 47 वर्षों बाद देश की अपनी कोई भाषा नहीं बन पायी और सारा काम-काज विदेशी भाषा में ही हो रहा है। चौधरी साहब अपनी भाषा के बारे में दिन-रात चिन्तित रहते थे। उनके भाषा सम्बन्धी विचारों से प्रेरणा लेकर ही हमने उत्तर प्रदेश में सरकारी काम-काज में अंग्रेजी समाप्त कर हिन्दी का प्रयोग अनिवार्य कर दिया है। अब उत्तर प्रदेश में विदेशी भाषा में काम-काज नहीं होगा और चौधरी साहब के अरमानों को मजबूती के साथ पूरा किया जायेगा। यही चौधरी चरण सिंह के प्रति सबसे बड़ी श्रद्धांजलि होगी।

आज देश नाजुक दौर से गुजर रहा है। कतिपय ताकतें धर्म और सम्प्रदाय के नाम पर लोगों को बांटने और देश को कमजोर करने की साजिश कर रही हैं। चौधरी साहब ने ऐसी ताकतों के विरूद्ध संघर्ष किया। वे जीवन भर हिन्दू और मुसलमान की एकता के लिए चिन्तित रहे। उन्हीं की प्रेरणा से आज हमारी सरकार हिन्दू-मुस्लिम एकता कायम रखने के लिए बड़ी से बड़ी जोखिम उठाने के लिए तैयार है। हमें संकल्प लेना है कि ईश्वर-अल्लाह के नाम पर इन्सानियत का कत्लेआम नहीं होने दिया जायेगा और हर कीमत पर शान्ति-व्यवस्था और साम्प्रदायिक सौहार्द बनाये रखना होगा। यही तो चौधरी साहब की हम सबको सीख थी।

चौधरी साहब अपने सिद्धान्तों पर पूरी तरह दृढ़ थे और अपनी बात को बेलाग-लपेट निर्भीक रूप से कहने की उनमें विलक्षण क्षमता थी। यही कारण है कि सहकारी खेती के मामले में उन्होंने पंडित जवाहर लाल नेहरू का भी विरोध किया। अपने सिद्धान्तों और नीतियों के लिए उन्होंने 1967 में कांग्रेस पार्टी को भी छोड़ दिया। मुझे वह जमाना भी याद आता है जब बड़े-बड़े नेताओं ने उनका साथ छोड़ दिया। मुझे आज भी याद है कि ऐसे ही समय एक दिन मैं उनसे मिलने गया। वह मुस्कराते हुये ताश खेल रहे थे। मुझे आश्चर्य हुआ। लेकिन उस वक्त भी उन्होंने मुस्कराते हुए मुझसे कहा था कि घबराना मत, जनता हमारे साथ रहेगी, क्योंकि नीतियां अपने साथ हैं।

लोकनायक जयप्रकाश नारायण और डा. राम मनोहर लोहिया के साथ-साथ चौधरी साहब ने देश में गैर-कांग्रेसवाद का सूत्रपात किया। वह प्रदेश में पहले गैर-कांग्रेसी मुख्यमंत्री बने। कांग्रेस के विकल्प के रूप में विपक्ष को एकजुट करने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की और इस कार्य में उन्होंने दलगत राजनीति और अपने अहम् को आड़े नहीं आने दिया। आज प्रदेशों में गैर कांग्रेसी सरकारें उन जैसे दूरदर्शी और जुझारू नेताओं के ही अथक प्रयासों का प्रतिफल है, जिसके लिए सारा देश उनका कृतज्ञ रहेगा।

# 25

# उनका सपना था किसान-एकता

रामचन्द्र विकल*

चौधरी साहब से मेरा परिचय सन् 1937 से था। उस समय वह उत्तर प्रदेश धारा सभा का पहला चुनाव लड़ रहे थे। ठाकुर मानिक सिंह खुर्जा से और चौधरी साहब गाजियाबाद से उम्मीदवार थे। रेड़े पर स्वामी भीष्म जी रहते थे, हम सब चिरौटा वालों के हाथी पर चढ़कर चौधरी साहब का चुनाव प्रचार करते थे। सन् 1937 से मृत्यु पर्यन्त चौधरी साहब से मेरा सम्बन्ध किसी न किसी रूप में बना ही रहा।

वह स्वाभिमान के साथ किसान के मेहनत करने के पक्ष में थे। इसके लिए वह खुद भी मेहनत करना चाहते थे। उनके पास दुनिया के दूसरे मुल्कों के विकास के, आर्थिक स्थिति के और वहां होने वाली उपज आदि के ढेरों आंकड़े रहते थे। वह किसानों से हमेशा इस बात को कहते थे कि "अरे किसानों, अपने बेटों को खेती के सिवाय दूसरे पेशों में भी लगाओ। तब तक तुम्हारी तरक्की नहीं होगी, जब तक कि तुम्हारे लड़के खेती को छोड़कर दूसरे पेशों को नहीं अपनायेंगे।" इस बारे में वह एक उदाहरण पेश करते थे : "वह देश मालदार है, जहां किसान की तादाद सबसे कम है।" वह कहते थे कि "अमेरिका में किसानों की तादाद कुल आबादी की सात फीसदी है और जिस देश में खेती पर लोगों का जितना ही ज्यादा बोझ होगा, वह देश उतना ही गरीब होगा।" खेती के मुकाबले छोटे-छोटे पेशों के जो आंकड़े वह पेश करते थे, वह आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होते थे।

वह देश की आर्थिक स्थिति के बारे में हमेशा चिंतित रहते थे। यही वजह रही कि उन्होंने गांधी के दर्शन का अध्ययन किया। अध्ययन ही नहीं किया बल्कि गांधी के बताये रास्ते पर जिन्दगी भर चलते रहे। उन्होंने ऐसी अर्थनीति बनाई जो गांधी के विचारों से पूरी तरह ओत-प्रोत थी और यह मेरा विश्वास है कि यदि उनके बताये रास्ते पर चला जाए, तो देश तरक्की कर सकता है।

---

* चौधरी साहब के पुराने साथी और भूतपूर्व सांसद

सवाल चाहे देश की आंतरिक स्थिति के बिगड़ने का हो, राष्ट्रीय एकता का हो, आपसी भाई चारे का हो, हिन्दू-मुस्लिम एकता का हो, दंगे-फसाद का हो या बाहरी आक्रमण का हो, वह सदैव किसी न किसी मुद्दे पर सोचते ही रहते थे। समस्या चाहे राष्ट्र की हो, राज्य की हो, भाषा की हो, अलगाववाद-आतंकवाद की हो, वह समस्या के निदान की दिशा में उदाहरण देते हुए कहते थे कि यदि इन समस्याओं का कारगर निदान नहीं हुआ, तो देश टूट जायेगा। सच तो यह है कि उनके मन में सदैव देश की बात रहती थी और उनका एक-एक पल देश के हित-चिंतन में रहता था। वह राष्ट्र-हित चिंतक थे। वह राष्ट्र को मजबूत देखना चाहते थे।

उनके सम्पर्क में (केवल उनके अंगरक्षक श्री करतार सिंह को छोड़कर) जो उनके साथ लम्बे समय तक रहे, मैं किसी दूसरे के मुकाबले सबसे ज्यादा रहा था। मुझे भली-भांति मालूम है कि वह किस बात पर नाराज होते थे और किस बात पर खुश होते थे। वह हमसे बहुत बार नाराज हुए। वह साफ हृदय के इंसान थे। उनकी नाराजगी, गुस्सा उनके चेहरे पर से साफ झलकती थी, जबकि आम राजनीतिज्ञों के चेहरों पर नाराजगी होते हुए भी, नाराजगी दिखाई नहीं पड़ती और वह मन ही मन गुस्से में रहते हैं। उनके दिल की साफगोई का प्रमाण है नागपुर अधिवेशन में पंडित नेहरू का विरोध करना। उन्हें पंडित जी का सहकारी खेती का प्रस्ताव देशहित में नहीं लगा और उन्होंने परिणाम की परवाह किये बिना तुरन्त पंडित नेहरू के प्रस्ताव का विरोध कर डाला। यह उनके साहसी होने का भी प्रतीक है, जबकि उस समय पंडित नेहरू के सामने किसी के बोलने की हिम्मत तक नहीं होती थी। उन्होंने सहकारी खेती के प्रस्ताव का सक्षम तर्कपूर्ण विरोध किया। उन्होंने अपनी बात को हमेशा बिना लाग-लपेट के, साहस के साथ कहा।

एक कहावत मुझे याद आती है कि "गंगा के किनारे के लोग गंगा में नहीं नहाते", वह यहां पूरी तरह चरितार्थ होती है। सच तो यह है कि हमारे देश का दुर्भाग्य है कि हमारे यहां के व्यक्ति के गुण देश के लोग नहीं अपनाते, जबकि उन्हीं गुणों की विदेशी न केवल तारीफ करते हैं बल्कि उन्हें अपनाते भी हैं। यही चौधरी साहब के साथ हुआ। देश की बिगड़ती आर्थिक स्थिति का और उसके निदान का जो खाका उन्होंने अपनी पुस्तक "इकोनॉमिक नाइटमेयर ऑफ इंडिया : इट्स कॉजेज एण्ड क्योर" में खींचा है, उस पुस्तक को हमारे देश के लोगों ने न तो प्रमुखता दी और न उसे ज्यादा पढ़ा ही गया जबकि विदेशों में उस पुस्तक को विभिन्न विश्वविद्यालयों में अर्थशास्त्र के पाठ्यक्रम में भी शामिल किया गया। यह हमारे देश का दुर्भाग्य नहीं तो और क्या है कि ऐसे लेखक, चिंतक, राजनीतिज्ञ को नहीं पहचाना, जिसने देश की बहबूदी के रास्ते सुझाये।

यहां एक बात मैं जरूर कहना चाहता हूं और वह बात चौधरी साहब के विचारों से मेल भी खाती है, वह यह कि यदि किसानों की समस्याएं राष्ट्रीय हैं, तो उनका

संगठन भी राष्ट्रीय होना चाहिए। वह धर्म, जाति, सम्प्रदाय, गृह, भाषा, प्रांत और राजनीतिक दलों से परे होना चाहिए। हम किसी भी पार्टी में क्यों न हों, जरूरत इस बात की है कि किसान एक हों, अपने संगठन को मजबूत करें और अपनी समस्याओं को राष्ट्रीय स्तर पर एक होकर रखें। यदि ऐसा हो गया तो न केवल किसान की बल्कि समूचे राष्ट्र की समस्याएं हल हो जायेंगी। चौधरी साहब की यही इच्छा थी। उनका मानना था कि खेत में अपना खून-पसीना बहाने वाला तथा सीमाओं की रक्षा करने वाला किसान जिस दिन संगठित हो गया, दुनिया की हर बड़ी-से-बड़ी ताकत उसके आगे झुकेगी।

26

# एक सादगी पसंद प्रधानमंत्री

इन्द्र कुमार गुजराल*

मैं अपने को इस बारे में सौभाग्यशाली मानता हूं कि मुझे अपनी जिंदगी का कुछ हिस्सा चौधरी साहब के साथ गुजारने और काम करने का मौका मिला है। वह युग 1967 के दौर का था, जब उत्तर प्रदेश में संविद सरकार बनी थी और चौधरी साहब उस सरकार के मुख्यमंत्री थे। उस समय मैं केन्द्र सरकार में मंत्री था। यह वह समय था जब देश में एक पार्टी की सरकार का युग समाप्त हो रहा था। या यूं कहें कि अन्य पार्टियों द्वारा सत्ता में आने का युग शुरू हो रहा था। चौधरी साहब ने तब जो बात उठाई थी, वह बुनियादी तौर से बिल्कुल सही थी। उनका कहना था कि किसान को या जमीन पर काम करने वाले, खेती करने वालों को देश के विकास का लाभ हर हालत में बराबर मिलना चाहिए। उस चुनाव में और उसके बाद हुए चुनावों में चौधरी साहब की बात जनता ने गौर से सुनी और चुनावों में उनकी बात का असर भी हुआ।

1977 में केन्द्र में जनता पार्टी की सरकार बनी। उस समय मैं रूस में भारत का राजदूत था। उस समय मैं चौधरी साहब से मिलने आया था। मेरी उनसे भेंट हुई और उस बीच लम्बे समय तक मेरी उनसे बातचीत हुई। उस बातचीत में भारत-रूस मामलों का जिक्र भी आया कि हमारे और रूस के सम्बंध कैसे हों, आदि-आदि मसलों पर लम्बा विचार-विमर्श चला। फिर जब 1979 में चौधरी साहब प्रधानमंत्री बने, तब चौधरी साहब ने मुझे मास्को से हिन्दुस्तान बुलाया और कहा कि आप राजदूत का ओहदा छोड़कर उनकी कावीना में सूचना-प्रसारण मंत्री बन जायें। मैं उनकी इस मेहरबानी से एकटक भौचक-सा रह गया और इस बात के लिए मैंने उनका शुक्रिया अदा किया कि आपने मुझे इस लायक समझा कि मुझे अपनी कावीना में मंत्री बनायें। उस वक्त मैंने चौधरी साहब से यह गुजारिश की थी कि वह यह रद्दोबदल चुनाव

---

* सांसद एवं भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री

के बाद ही करें तो ज्यादा मुनासिब होगा, लेकिन चुनावों के बाद तो एकदम स्थिति ही बदल गयी।

चौधरी साहब में बहुत-सी विशेषताएं थीं। वह जो भी बात कहते थे, साफगोई और ईमानदारी से कहते थे, भले ही उस बात का ताल्लुक दूसरे देशों से ही क्यों न हो। उनके अंदर कोई दुराव व छिपाव नहीं था और न उनकी बात के दो अर्थ हुआ करते थे। चौधरी साहब की जो सबसे बड़ी विशेषता थी, वह उनकी देशभक्ति थी। वह चाहे वैदेशिक मामलों के बारे में हो या देश के अंदरूनी मामलों में या फिर और किसी बारे में, सबमें उनकी देशभक्ति की झलक हमेशा मिलती थी।

उन्होंने अपनी पूरी जिंदगी जिस सादगी से जी, उसकी मिसाल मिलनी मुश्किल है। मुझे उन्हें देखकर यह ताज्जुब होता था कि एक मुल्क का प्राइम मिनिस्टर इतनी सादगी से भी रह सकता है। एक छोटे से कमरे में जमीन पर बिछी दरी पर तकिये के सहारे डेस्क के सामने बैठकर देश के हर मसलों को सुलझाना, वहीं बड़े-से-बड़े और छोटे-से-छोटे आदमी से मुलाकात करना, अपनी कदर वही बनाये रखना, इससे उनकी इज्जत भी बढ़ती थी और तौकीर भी। इससे आने वाला उनके कदमों को देखने और यह सोचने पर मजबूर हो जाता था कि दुनिया के इतने बड़े मुल्क का प्राइम मिनिस्टर ऐसा है जिसमें बनावट का नामों-निशान नहीं है और इस सबसे बड़ी बात यह कि यह इंसान हमसे कद में कितना ऊंचा और बड़ा है।

होशियार और चालाक लोग कुछ भी कहें और खुद को कितना भी बड़ा राजनीतिज्ञ व कूटनीतिज्ञ समझें तथा यह समझते रहें कि वे कूटनीतिक बातें कितने उलझावपूर्ण तरीके से करते हैं, लेकिन इसमें कोई दो राय नहीं है कि उनकी सादगी, ईमानदारी का तरीका एक नये ढंग के नेतृत्व का था। दरअसल यहां विचार यह करना है कि नेता किसे कहते हैं। हमारे यहां एक तरह का रिवाज बन गया है कि जो भी आदमी एक बार कुर्सी पर बैठ गया, वह नेता बन जाता है, लेकिन नेता में जो विशेषता होती है, उससे वह मीलों दूर होता है। नेता वह होता है, जिसमें डगर से हटकर सोचने की हिम्मत हो, जो लहर के साथ न बहकर सही को सही व गलत को गलत कहने की सामर्थ्य रखता हो। यह गुण, इसे विशेषता भी कह सकते हैं, चौधरी चरण सिंह में थी। उनके बताये रास्ते आज भी हमारी रहनुमाई कर रहे हैं।

यहां यह बात गौर करने लायक है कि चौधरी साहब के आने से पहले कोई पार्टी किसानों की बात नहीं करती थी। आज कोई भी पार्टी अपने चुनाव घोषणा पत्र तक में किसानों की बात जोड़ना नहीं भूलती। यह सब चौधरी साहब का ही करिश्मा है। उनके केन्द्र में आने से पहले बनीं योजनाओं में जाहिरा तौर पर किसानों के लिए 60 फीसदी रकम खर्च करने की बात कह पाना किसी भी मेम्बरान

के बस की बात नहीं थी। चौधरी साहब के बाद बनी योजनाओं में भले ही वह चाहे झूठे को ही कहा गया हो, खेती, गांव और देहात के लिए 60 फीसदी बजट की रकम खर्च करने की बात जरूर कही जाती है। यह इस मुल्क के लिए चौधरी साहब की बहुत बड़ी देन है। उनके बताये रास्ते पर चलें और उनकी देशभक्ति, ईमानदारी, सादगी और जनता से प्यार करने की उनकी प्रवृत्ति को अपने जीवन में अंश मात्र भी उतार सकें, यही उनको हमारी सबसे बड़ी श्रद्धांजलि होगी।

27

# महान किसान नेता थे चौधरी चरण सिंह

कुंवर नटवर सिंह*

चौधरी चरण सिंह के बारे में इस बात पर दो राय नहीं हो सकती कि वह भारत के सबसे बड़े किसान नेता थे। किसान के प्रति उनकी समर्थन-भावना जाति और मतवाद से आगे की चीज थी। ग्रामीण भारत का उन्होंने सिद्धांतीकरण नहीं किया था। उसकी तो उन्हें प्रत्यक्ष जानकारी थी। किसानों की आकांक्षाओं, उनकी समस्याओं, उनकी दिलचस्पियों और उनकी चिंताओं की उन्हें गहरी समझ थी।

वह एक सामान्य परिवार से आये थे और ग्रामीण भारत से अपना सम्बंध उन्होंने जीवन के आखिरी क्षण तक बनाये रखा। नूरपुर गांव से साउथ ब्लॉक में प्रधानमंत्री कार्यालय तक की उनकी यात्रा, जिसमें बरतानिया हुकूमत और आपातकाल के दौरान उन्होंने जेल यात्रा भी की, उनके समर्पण भाव, संघर्ष, यातना और आत्मोत्सर्ग की एक लम्बी गाथा है।

उनकी जीवन शैली सहज और सरल थी। उनकी सत्यनिष्ठा निष्कलुष थी। वह अपना कोई बड़ा बैंक खाता नहीं छोड़ गये।

अपने वयस्क जीवन का बेहतरीन हिस्सा उन्होंने कांग्रेस पार्टी में रहकर बिताया। उससे अलग होने की स्थिति 1967 में तब आई, जब उन्होंने अनुभव किया कि राजनीतिक सोपान की ऊंचाई तक पहुंचने के मार्ग में जातिवादी तत्व बाधक बने हुए हैं। वह एक राजनीतिज्ञ थे और इसीलिए सत्ता के खेल में शामिल थे। सत्ता की ललक उनमें निजी लाभ के लिए नहीं, बल्कि अपने विचारों और आदर्शों को व्यावहारिक रूप देने के लिए थी। सिद्धान्त के मामलों में समझौता उन्हें कबूल नहीं था और सहकारी खेती के सवाल पर तो वह जवाहरलाल नेहरू तक को चुनौती देने से नहीं हिचके। सन् 1959 में जब वह नेहरू के साथ उलझ पड़े थे, तब सोवियत संघ और सहकारी खेती के अंत का पूर्वानुमान कोई नहीं कर पाया था।

---

* भूतपूर्व राजनयिक

आमतौर पर यह अनुभव नहीं किया जाता कि चौधरी चरण सिंह पहली श्रेणी के राजनीतिज्ञ होने के अलावा एक पुस्तक-प्रेमी भी थे। उन्होंने सूरजमल पर लिखी मेरी पुस्तक पढ़ी थी और वह उन्हें अच्छी लगी थी। उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखी थीं जिनमें सबसे महत्वपूर्ण है—"भारत का आर्थिक पतन : कारण और निदान" (इकोनॉमिक नाइटमेयर ऑफ इंडिया : इट्स कॉजेज एण्ड क्योर)। भारत की आर्थिक मुक्ति के बारे में उनका नजरिया गांधीवादी है। इस पुस्तक की भूमिका में वह लिखते हैं :

"गांधी की दृष्टि में भारत का निर्माण नीचे से ऊपर की ओर होना था, अर्थात निर्धनतम और दुर्बलतम से, और इसीलिए गांव केन्द्र में था; नेहरू का नजरिया इसके ठीक विपरीत था। वह भारत को ऊपर से नीचे की तरफ ले जाना चाहते थे, अर्थात उद्योगपतियों, प्रबंधकों और तकनीशियनों से और इसीलिए शहर को केन्द्र में रखा गया। अपने निर्णय पर अफसोस करने के लिए नेहरू जीवित तो रहे मगर वह उनके जीवन का सांध्यकाल था, तब समय इतना कम रह गया था कि यदि वह चाहते भी तो पहिये को दूसरी तरफ मोड़ नहीं सकते थे।

गांधी जी का झुकाव मूलतः बिल्कुल नीचे से आधारभूत नियोजन की ओर था। कृषि द्वारा भारत की सेवा ज्यादा अच्छी तरह और तेजी से हो सकती थी। जो कि भोजन-वस्त्र और घरेलू या ऐसी लघु स्तरीय तकनीक उपलब्ध कराती है जिसके लिए शारीरिक श्रम में कमी नहीं बल्कि वृद्धि अपेक्षित होती है, जिसमें सरलतम यंत्रों या औजारों का उपयोग होता है, जो पूर्णतः स्थानीय सामग्री और स्थानीय प्रतिभा पर आधारित रहती है। लेकिन कृषि और श्रम प्रधान अल्प अवधि वाली योजनाओं की जगह नेहरू की प्राथमिकता विशाल, खर्चीले और पूंजी बहुल योजनाओं के लिए थी, जो न केवल ज्यादा समय लेने वाली थीं बल्कि इस्पात, सीमेंट, जटिल तकनीकी कुशलता और विदेशी मुद्रा जैसे दुर्लभ संसाधनों की खपत की दृष्टि से अपव्यकारी भी थीं।"

चौधरी चरण सिंह द्वारा जवाहरलाल नेहरू की आर्थिक नीतियों के इस मूल्यांकन से किसी को असहमति हो सकती है, लेकिन चौधरी चरण सिंह की गांधीवादी दृष्टि का आदर तो हर कोई करेगा।

वह रूढ़िवादी या कट्टरपंथी नहीं थे, जैसा कि निम्नांकित उद्धरण से स्पष्ट होता है :

"जब तक लोग अपने पुराने तरीके, पुराने नजरिये, रीति-रिवाज और प्रथायें छोड़ने के लिए तथा पहले से ज्यादा कठोरतर, बेहतर और लम्बे काम करने के लिए कटिबद्ध नहीं हो जाते, तब तक न तो कृषि और न ही गैर-कृषि संसाधन विकसित किये जा सकते हैं, न ही जनसंख्या को नियंत्रित किया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर हमें जरूरत है भाग्यवाद से पीछा छुड़ाने की, जातिप्रथा को खत्म करने की, संतति निग्रह को अपनाने की और उस संसदीय लोकतंत्र पर फिर से नजर डालने

की जिसे हमने खुद अपने लिए बनाया है। लेकिन अफसोस ! हमारे कार्यकारी नुमाइंदे, हमारे संभ्रांत लोग या हमारे नेतागण ऐसी कोई आवश्यकता महसूस ही नहीं करते। न ही हमारी शिक्षा प्रणाली को बिल्कुल बदलने या कम से कम सुधारने के लिए ही कोई व्यावहारिक कदम उठाया गया है—हालांकि इसकी ज़रूरत को लेकर बयानबाजी तो हर कोई करता है।"

मैंने उन्हें भारत का सबसे महान किसान कहा है। किसी व्यक्ति को महान कहने का मापदंड क्या है ? मेरे विचार से इसमें यह पूछना निहित है कि किसी खास व्यक्ति के जीवन और कार्य से मानव जाति के किसी बड़े अंश के जीवन में परिवर्तन या सुधार हो पाया या नहीं। चौधरी चरण सिंह ने उत्तर प्रदेश के मंत्री और मुख्यमंत्री तथा देश के प्रधानमंत्री के रूप में भारतीय किसानों की चेतना का स्तर उठाने और उनके जीवन स्तर को सुधारने के लिए जो कुछ किया, उसके बारे में संदेह की गुंजाइश नहीं है। यही विशेषता उन्हें महान नेताओं की श्रेणी में ला खड़ा करती है। अगर वह नहीं होते तो हमारा कृषक समाज आज की अपेक्षा कहीं बदतर स्थिति में होता।

28

# उन्होंने की थी समता के विचार को जनाधार देने की पहल

सुरेन्द्र मोहन*

अकस्मात 16 वर्ष पहले 23 दिसंबर का वह विशाल जनसमूह आंखों के सामने आ जाता है, जो चौधरी चरण सिंह के जन्मदिन पर उनका अभिनंदन करने के लिए दिल्ली में उमड़ आया था। उस समय चौधरी साहब सत्ता से बाहर थे और संभवतः उनके प्रति जनता की सहानुभूति के चलते इस जनसमूह की विशालता बढ़ गयी थी। उतना विशाल जनसमूह उसके बाद कभी दिल्ली में एकत्र नहीं हुआ, न ही किसी अन्य नेता के अभिनंदन में और न ही स्वयं चौधरी चरण सिंह के लिए। उस दिन भी नहीं, जब वे प्रधानमंत्री बने, न ही उनके उस एकमात्र जन्मदिन पर, जब वे प्रधानमंत्री पद को सुशोभित कर रहे थे। उस दिन भी समृद्ध किसानों अथवा कुलकों की संख्या के मुकाबले घुटनों तक धोती बांधे और मीलों पैदल चल कर आये साधारण किसानों की ही गिनती बहुत भारी थी।

1980 में जब शिक्षित और बुद्धिजीवी वर्ग चौधरी चरण सिंह का आलोचक था, तब भी यह बात उसकी समझ से परे थी कि उत्तर भारत में अकेले वे इतने लोकप्रिय कैसे हो गये। वास्तव में यह करिश्मा ही था कि 1967 में 16 विधायकों के साथ कांग्रेस से हटकर संयुक्त विधायक दल के नेता के तौर पर मुख्यमंत्री बनने के दो वर्ष के अंदर वे 1969 के मध्यावधि आम चुनाव में 100 विधायकों को निर्वाचित कराने में कामयाब हुए और 1977 तक वे उत्तर भारत के किसानों और पिछड़ों के एकमात्र नेता बन गये।

1967 तक चौधरी चरण सिंह उत्तर प्रदेश से बाहर तो जाने ही न जाते थे। यदि उनको याद भी किया जाता था, तो उनकी ईमानदार और निर्भ्रष्ट छवि के चलते

---

* समाजवादी विचारक एवं भूतपूर्व सांसद

और दूसरे इसलिए कि 1959 में नागपुर के कांग्रेस अधिवेशन में उन्होंने जवाहरलाल नेहरू द्वारा प्रतिपादित सहकारी कृषि की नीति का विरोध किया था। अलबत्ता जब वे चौथे आम चुनाव के बाद तत्काल कांग्रेस से हटे, तो उन्होंने कांग्रेस विरोध की उस लहर को आंधी बना दिया, जिसमें कांग्रेस कई राज्यों में हारी थी। उसके बाद उनका भारतीय क्रांति दल यूं तो साठे कांग्रेसियों का एक मोर्चा बना, जिसमें बिहार के महामाया प्रसाद सिन्हा, मध्यप्रदेश के तख्तमल जैन, राजस्थान के कुंभाराम आर्य और हरियाणा के देवीलाल शरीक हो गये, तो भी उसकी पकड़ उत्तर प्रदेश में ही रही। 1969-74 और 1974-75 में भी उनकी भूमिका कुछ वैसी आकर्षक न थी कि वे उत्तर भारत में अपना असर जमा पाते। 1974 में उत्तर प्रदेश के आम चुनाव में यदि तत्कालीन भारतीय जनसंघ के साथ उनका चुनाव समझौता हो जाता, तो वे कांग्रेस को बुरी तरह हरा सकते थे, पर वे उस अवसर को चूक गये।

परन्तु बाद में उत्तर भारत में वे धीरे-धीरे जनमानस में छाते गये। उसके दो बड़े कारणों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालना जरूरी है, तभी यह बात स्पष्ट हो सकेगी कि 1967 में एक बार विपक्ष में आ बैठने पर वे राष्ट्रीय विपक्ष के इतने महत्वपूर्ण नेता कैसे बने कि उनकी टक्कर का कोई अन्य नेता नहीं रहा, जिसको इतना विशाल समर्थन मिला। बल्कि उस दस-बारह वर्षों में स्थिति यह आ गयी थी कि जैसे इंदिरा गांधी से हट कर कोई कांग्रेसी पनप न पाया और घर वापस आने पर मजबूर हो गया, वैसे ही लोकदल से नाता तोड़ने का अर्थ हुआ विपक्ष की राजनीति से हट कर सत्ता पक्ष में जा मिलना या फिर चौधरी चरण सिंह का ही दोबारा दामन थामना।

जमींदारी उन्मूलन में देश के सबसे बड़े राज्य में चौधरी चरण सिंह ने भारी भूमिका निभाई। गोकि बिहार में कृष्णबल्लभ सहाय ने अपनी एक मिसाल कायम की और उस सामंतशाही से टक्कर ली, जिसकी जड़ें उत्तर प्रदेश की तुलना में कहीं गहरीं थीं, तो भी चौधरी चरण सिंह ने स्वयं किसान समुदाय का व्यक्ति होने के कारण ज्यादा नाम पाया। जमींदारी उन्मूलन के बाद ही मध्यम किसान एक स्वतंत्र वर्ग के तौर पर उभरा और जब दूसरी-तीसरी पंचवर्षीय योजनाओं में देश को खाद्यान्नों में आत्मनिर्भरता के लक्ष्य से खेती को ज्यादा महत्व मिला, तो उसकी संपन्नता और आत्मविश्वास को अपेक्षतया भारी बल मिला। 1965 में लाल बहादुर शास्त्री ने 'जय किसान' का नारा बुलंद किया। 1966-67 के सूखे के उत्पीड़न से किसान और उसके खेत को सिंचाई देने का महत्व और भी बढ़ा। उन्हीं दिनों सी. सुब्रह्मण्यम के खाद्य मंत्रित्व काल में हरित क्रांति की ओर पग बढ़ाये गये। यानी 1955-67 का पूरा काल भारतीय राजनीति और अर्थनीति में उस किसान और खेती के पदार्पण का काल था, जिसका न तो अपना स्वतंत्र संगठन था और न ही एक सर्वमान्य नेता।

1959 में सहकारी खेती को ही प्रमुख मुद्दा बना कर चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, मीनू मसानी और एन. जी. रंगा ने स्वतंत्र पार्टी का गठन किया और लाइसेंस-परमिट

राज का विरोध करते हुए कृषि को प्राथमिकता देने की नीति अपनायी। राजस्थान का भूस्वामी संघ, उड़ीसा की गणतंत्र परिषद और बिहार की तत्कालीन जनता पार्टी भी उनके साथ मिले। परंतु स्वतंत्र पार्टी भारत में किसान आंदोलन के एक तरह से संस्थापक नेता एन. जी. रंगा के बावजूद, किसानों की पार्टी न बन पायी। उसने भूमि सुधारों का विरोध करके जमींदारों और रजवाड़ों का साथ दिया। अतः यह भी उस शून्य को भर न सका।

समाजवादी आंदोलन ने भी कृषि को प्राथमिकता देने, खेती की उपज को लाभकर दाम दिलाने, जोत हदबंदी, सिंचाई, अनार्थिक जोतों का लगान माफ करने जैसे महत्वपूर्ण प्रश्न उठाये थे; गुड़-गन्ना, पाट, कपास वगैरह के दाम सम्बंधी लड़ाईयां भी लड़ी थीं; जमींदारी उन्मूलन के साथ-साथ भूमि के पुनर्वितरण का सशक्त आंदोलन चला कर किसान जनता में अपनी जड़ें भी जमायीं थीं; लेकिन जमींदारी उन्मूलन के बाद भी वे जमीन के बंटवारे और भूमिहीनों के शोषण पर बल देते रहे, जिसके चलते जमीन के नये मालिक बने किसानों की विकास समस्याओं के साथ वे पूर्णतः जुड़े हुए नहीं दिखे, बल्कि शायद कई जगह हालत यही बनती गयी कि किसान उनको भूमिहीनों की ही पार्टी मानने लगे। फिर भी उनकी हालत स्वतंत्र पार्टी जैसी नहीं हुई। समाजवादी आंदोलन की कमी यह थी कि उसका नेतृत्व मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों और औद्योगिक मजदूरों का था, जबकि कार्यकर्ताओं में किसानों की भारी संख्या थी। दूसरे, आपसी फूट, एक समूह द्वारा कांग्रेस में विलय, पहचान के संकट और क्रमशः जेपी, कृपलानी, लोहिया, नरेंद्र देव और अशोक मेहता के हटने के कारण किसानों में जो ताकत बनी थी, वह टूटी ही।

चौधरी चरण सिंह से वह खाली जगह भर गयी। कुछ उनके अपने प्रयास अथवा संकल्प के कारण नहीं, बल्कि परिस्थिति की बाध्यता के कारण। उत्तर भारत में किसानों के उदीयमान मध्यमवर्ग को निर्भ्रष्ट, ईमानदार, किसान-परिवार में जन्मे और सादगी-पसंद नेता की जरूरत थी, वह पूरी हो गयी। हरित क्रांति की अत्यंत सीमित सफलता से और 1973-75 में मुद्रा प्रसार एवं महंगाई की मार से इस प्रक्रिया को मदद मिली। पांच-छह वर्षों में चौधरी चरण सिंह उत्तर भारत के प्रमुख जन नेता बन गये, क्योंकि संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी ने उनके दल के साथ विलय करके उनको बिहार में भी एक बड़ा मौका दिया।

दूसरा कारण था, उत्तर भारत में पिछड़ा वर्ग आंदोलन, जो दक्षिण भारत की अपेक्षा पिछड़ गया था। महाराष्ट्र का बहुजन समाज आंदोलन, जो महात्मा फुले से प्रेरणा पाकर मोरे जेधे और खाडिलकर के नेतृत्व में बलवान हो गया था, उसने कांग्रेस के अंदर उच्चतर जातियों के प्रभुत्व को पचास के दशक में समाप्त कर दिया। तमिलनाडु में रामास्वामी पेरियार के द्रविड़ आंदोलन और आंध्रप्रदेश के आत्मसम्मान आंदोलन (जो बाद में जस्टिस पार्टी में मुखर हुआ) ने भी वही भूमिका निभायी और

केरल में नारायण गुरू की अप्रत्यक्ष प्रेरणा से बनी एस. एन. डी. पी. ने भी। स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले दशक तक यह प्रक्रिया नर्मदा नदी के दक्षिण में लगभग पूरी हो चुकी थी। किंतु उत्तर भारत में अभी अवरुद्ध थी।

उच्चतर जातियों को उत्तर भारत में जमींदारी का बड़ा सहारा था और वे इस आर्थिक स्वामित्व के साथ-साथ शिक्षा और उसके फलस्वरूप सरकारी सेवाओं में भी बहुत आगे थीं। यहां समाज पर उनका दबदबा दक्षिण भारत की तुलना में कहीं अधिक था। स्वतंत्रता आंदोलन में सामाजिक-आर्थिक बदलाव की आकांक्षाओं के कारण जमींदारी प्रथा के खिलाफ भी वातावरण बना और समाज पर कुलीनों के दबदबे के खिलाफ भी। किंतु दक्षिण में तो कांग्रेस आंदोलन में काफी ऐसे नेता आगे आये, जो पिछड़ी जातियों के थे लेकिन उत्तर भारत में ऐसा न हो सका, इसलिए जब जमींदारी का खात्मा भी हुआ और लोकतांत्रिक चुनाव प्रणाली के चलते संख्या का महत्व भी बढ़ा, तो भी पिछड़ा वर्ग अपनी पहचान या अपना नेतृत्व पेश करने में कामयाब नहीं हो सका। कुल मिलाकर कर्पूरी ठाकुर बिहार में आगे आये और उत्तर प्रदेश में चौधरी चरण सिंह दोनों को ही पहला स्थान 1967 में या उसके बाद मिला। दूसरे, यशवंतराव चव्हाण, संजीव रेड्डी, कामराज नाडार, हनुमंतैया और निजलिंगप्पा 1957 के आसपास, बल्कि कामराज तो पहले ही, प्रमुखता पा चुके थे। उत्तर भारत मे साठोत्तर दशकों में पिछड़ा वर्ग आंदोलन तेजी के साथ आगे आया और नेता का स्थान भरा चौधरी चरण सिंह ने, क्योंकि पिछड़ों-दलितों, अल्पसंख्यकों के आंदोलनों में भी नेतृत्व के लिए बराबर वे ही आगे आते हैं, जो उनमें अपेक्षतया कम पिछड़े हुए हों। रेड्डी, चव्हाण, कामराज आदि की भी स्थिति वही थी।

भारत की अर्थव्यवस्था और जाति व्यवस्था में जो दो नये वर्ग गत पच्चीस-तीस बरसों में सामने आये हैं और संख्या-बल में भी जिनका दबदबा है, चौधरी चरण सिंह उनके सर्वमान्य नेता के तौर पर उभरे। उनको इसमें मदद मिली अपनी सज्जनता-शालीनता के कारण और उनके अगाध अध्ययन-मनन के चलते। वे पिछड़ी जातियों का सामाजिक समीकरण बना पाये, क्योंकि उन्होंने न केवल उनके सामाजिक संबंधों की जानकारी हासिल की, बल्कि इसलिए कि उन्होंने उनको आर्थिक कार्यक्रम की भी स्पष्ट रूपरेखा बतायी और लोकतंत्र के साथ-साथ विकेंद्रीकरण के गांधीवादी सिद्धांत का समावेश करके पंचायती-राज और ग्रामोत्थान का राजनीतिक-सांस्कृतिक धरातल भी दिया और स्वदेशी, स्वभाषा और स्वावलंबन की बुनियादें मजबूत कीं।

1976 आते-आते भारतीय अर्थव्यवस्था में भी एक ऐसा मोड़ आ गया था कि पंचवर्षीय आर्थिक नियोजन को छोड़ना पड़ा था। मुद्रा का अवमूल्यन हो चुका था और चीन व पाक युद्धों के चलते खाद्यान्नों और अन्य चीजों के संबंध में आत्मनिर्भरता की कमी बहुत चिंताजनक थी। उसके बाद के दशक में इंदिरा गांधी ने 'गरीबी हटाओ' के नारे पर चुनाव जीत कर जनता को निराशा की गुफा में ढकेल दिया।

इसलिए पंडित नेहरू द्वारा प्रतिपादित अर्थनीति, या कहिए कांग्रेसी अर्थनीति, अपनी साख पूर्णतः खो चुकी थी। जब जनता पार्टी विशेषकर चौधरी चरण सिंह ने वैकल्पिक अर्थनीति पेश की, तो उसने जनता को अपनी ओर आकर्षित किया।

चौधरी चरण सिंह ने अपने जीवनकाल के अंतिम बीस वर्षों में उत्तर भारत के किसानों और पिछड़ों को ही नया नेतृत्व नहीं दिया, उन्होंने गांधीवादी अर्थनीति को भी गांधी जी के निधन के तीस वर्ष बाद राष्ट्रीय चिंतन की मुख्यधारा में लाने में योगदान दिया। किंतु निपट आभिजात्य और कुलीन वर्ग और औद्योगिक-महानगरीय विशिष्ट-जनसमूह के हाथों से देश की राजनीति और सामाजिकार्थिक सत्ता को छुड़ाने का कार्य जब भी संपन्न होगा, तब इतिहास इस तथ्य की साक्षी देगा कि जेपी और लोहिया जो बातें, सिद्धांत और कर्म से जीवन पर्यन्त प्रचारित-प्रसारित करते रहे, उनको अत्यन्त सशक्त भूमिका दे कर जनसाधारण के हाथों में राजनीतिक, आर्थिक और सामजिक सत्ता सौंपने की ठोस शुरुआत चौधरी चरण सिंह ने ही की थी। इसीलिए गांधीवाद और समाजवाद के मध्य एक सेतु की तरह खड़े रह कर उन्होंने इन अवधारणाओं के साथ एक ऐसा जनसमुदाय जोड़ दिया, जो समता के दर्शनशास्त्र को साक्षात रूप दे सकता है। तत्वज्ञानी निःसंदेह चौधरी चरण सिंह की दसियों ऐसी उक्तियां, उदाहरण आदि जमा कर ले सकते हैं, जो उनकी विसंगतियों को उजागर कर दें और वे गांधी की बुनियादी सामाजिक मान्यता के संबंध में उनकी आर्य समाजी समझ की सीमाओं पर कटाक्ष भी कर सकते हैं, तो भी शायद वे भी इस तथ्य को अस्वीकार न कर सकेंगे कि सामाजिक समता, आर्थिक संतुलन और राजनीतिक विकेंद्रीकरण की आस्थाओं और कार्यक्रमों को उन्होंने एक अटूट जनाधार प्रदान करने में भारी पहल की है। हमारा समाज इन आकांक्षाओं में से कुछ समय तक मुंह चुरा भले ही ले, वह इनसे मुंह फेर लेने में अब सफल नहीं हो सकेगा।

29

# उन्होंने देश के दर्द की आवाज पर जी जिन्दगी

हेमवती नन्दन बहुगुणा*

चौधरी चरण सिंह एक महान स्वतंत्रता सेनानी और एक कुशल प्रशासक थे। वह लोकदल के संस्थापक अध्यक्ष थे। भारत की रीढ़-गांव की आवाज थे। गांव के उस दुःख दर्द और गांव की उस आवाज को आन्दोलन बनाने का काम स्वराज संग्राम से पहले और बाद में वह लगातार करते आए थे।

महात्मा जी ने कहा कि गांव भारत में रहता है। चौधरी चरण सिंह जी ने जन्म से यह समझा कि गांव के कष्ट क्या हैं। गांव और एक गरीब परिवार में जन्म लेने के कारण गांव की समस्याओं से उनका जीवंत सम्बन्ध रहा। चौधरी चरण सिंह का भारत के बुनियादी सवालों से सम्बन्ध किताबी नहीं, बल्कि उस जिन्दगी का है, जो वह जिये, उस जन्म का है, जो गांव की मां की गोद में हुआ।

उन्होंने शिक्षा गांव के धूल-धूसरित बालकों के साथ पायी, इसलिए गांव के दर्द और वेदना के साथ उनका संस्कार और विचार का सम्बंध रहा और दर्शन का भी। इसीलिए महात्मा जी ने जब स्वराज्य-संग्राम की दुन्दुभी बजायी, हिन्द-स्वराज में गांव के उस दुःख दर्द की कल्पना को साकार स्वरूप देने और उसका निराकरण करने की चेष्टा की तथा जब स्वयं महात्मा गांधी गांव का बाना पहन कर देश की बानी बोलने लगे, तो बरबस नौजवान चरण सिंह उनके छाते के नीचे आकर स्वतंत्रता संग्राम का सैनिक बन गया।

चौधरी साहब के जीवन की एक लम्बी कहानी है। उन्हें जन्म का कोई लाभ नहीं मिला। उन्हें गांव के वातावरण, अपने माता-पिता का जबरदस्त लाभ इस दिशा में अवश्य मिला, क्योंकि इससे उनकी समझ बनी और ऐसी समझ बनी, जो हर मौके पर सटीक सिद्ध हुई।

चौधरी चरण सिंह पग-पग पर संघर्ष के साथ आगे बढ़े। उत्तर प्रदेश के

---

* दिवंगत भूतपूर्व मुख्यमंत्री उ. प्र. एवं केन्द्रीय मंत्री

गाजियाबाद नगर का एक साधारण वकील, आर्य समाज के मंच से सामाजिक कुरीतियों और जात-पांत के विरुद्ध लड़ने वाला एक नौजवान, स्वराज संग्राम व असहयोग आन्दोलन में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेने वाला उत्साही नवयुवक 'जो घर फूंके आपना, चले हमारे साथ' की नीति पर चलने वाला नौजवान चरण सिंह, जिसका चरित्र ही धन रहा हो, संघर्ष-पथ पर धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए वह जिला परिषद के सदस्य, उपाध्यक्ष और उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य बन जाते हैं।

कांग्रेस के अन्दर भिन्न-भिन्न पदों पर रहते हुए पहली बार उनकी चमक और प्रतिभा तब निखरी जब 1937 में विधान सभा सदस्य के रूप में उन्होंने यह प्रस्ताव पेश किया कि सरकारी सेवाओं में 50 प्रतिशत स्थान ग्रामीण बच्चों, लड़के और लड़कियों के लिए आरक्षित कर दिये जायें। उनका यह प्रस्ताव भले ही स्वीकार नहीं हो सका—लेकिन इस प्रस्ताव को 'हिन्दुस्तान टाइम्स' ने प्रमुखता से प्रकाशित किया।

चौधरी साहब का यह प्रस्ताव उस उपनिवेशवादी संस्कृति के साथ मेल नहीं खाता था जिस उपनिवेशवादी संस्कृति में हमारी शिक्षा ढली, पली और बढ़ी और आज भी पल रही है। जिस शिक्षा के आधार पर हमारे देश के प्रशासन तंत्र में जाने वालों की संरचना होती है। स्पष्ट है कि कांग्रेस-आन्दोलन में भी वर्ग की दृष्टि से चूंकि शहरी प्रभाव ज्यादा था, इसलिए शहरों के भद्र लोगों को और मैकाले की शिक्षा पद्धति वाले नेतृत्व को चौधरी साहब की यह बात कैसे स्वीकार होती। लेकिन चौधरी चरण सिंह अपनी बात पर अटल रहे।

कानपुर के डा. जवाहर लाल रोहतगी भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के अग्रणी सेनानी रहे हैं। चौधरी साहब ने जब यह प्रस्ताव विधान सभा में रखा था, तब उन्होंने चौधरी साहब से कहा था कि "अरे भाई चरण सिंह, यदि तुम्हारे इस प्रस्ताव को मान लिया गया, तो फिर गांव की खेती कौन करेगा।" इस पर चौधरी साहब ने तत्काल जवाब दिया कि "डाक्टर साहब, जब तक प्रशासन के साथ गांव का बच्चा नहीं जुड़ेगा, तब तक स्वराज आकर भी लुटा-लुटा सा रहेगा।" वर्तमान में चौधरी साहब का उपरोक्त कथन सार्थक सिद्ध होता है।

हमारे प्रशासकों ने भारत को किताबों में पढ़ा है लेकिन चौधरी चरण सिंह ने भारत को जन्म से रहकर-जुड़कर पढ़ा। गांव की धूल, कीचड़, माटी, लहलहाते खेतों, तो कभी अवर्षण के कारण सूखी जमीन ने उनको ऐसी अमूल्य दृष्टि दे दी, जिसके चलते, चरण सिंह अन्ततोगत्वा चौधरी चरण सिंह बन गए।

चौधरी चरण सिंह एक व्यक्ति नहीं विचार थे, एक आन्दोलन थे, बल्कि एक ऐसा समर्पित जीवन थे, जिसके अन्दर गांव और भारत का दर्द छुपा हुआ था।

सन् 1937 में ही चौधरी चरण सिंह ने उत्तर प्रदेश विधान सभा में मंडी कानून बनाने सम्बन्धी प्रस्ताव पेश किया। इस संदर्भ में उनका कहना था कि किसान जब अपना उत्पादन बाजार में ले जाता है तो लुट जाता है। इसलिए मंडी कानून बनाना

आवश्यक है, जिसके तहत रेगूलेटेड मंडियां बनानी होंगी। इस प्रस्ताव को भी अखबारों ने प्रमुखता से छापा था। इस पर जब सर छोटू राम की दृष्टि पड़ी तो उन्होंने चौधरी चरण सिंह के उस विधेयक, जो मंडी कानून बनाने हेतु विधान सभा में पेश किया गया था, और मंजूर नहीं हुआ था, को मंगाया और पंजाब में 1937 में मंडी कानून लागू कराया। उत्तर प्रदेश की बदकिस्मती रही कि सन् 1962 तक कांग्रेस के अन्दर जो एक वर्ग विशेष का प्रभाव रहा, जिसमें ग्रामीण जीवन से सम्बन्धित प्रश्नों और समस्याओं के प्रति नासमझी प्रभावी रही, यह कानून बनने में देर हुई। इस दिशा में बाद में विश्व बैंक की सलाह पर केन्द्र सरकार ने इसको लागू किया। यहां यह उल्लेखनीय है कि अन्ततोगत्वा कानून तो बनाना ही पड़ा, यदि चौधरी साहब की बात को पहले ही मान लिया जाता, तो बात ही कुछ और होती। यह कहावत कि "घर का जोगी जोगना, आन गांव का सिद्ध" यहां पूरी तरह चरितार्थ होती है।

स्वराज्य की लड़ाई के दौरान 1941 में जब वह बरेली जेल में थे, तब उन्होंने शिष्टाचार की शिक्षा देते हुए अपने बच्चों को कुछ पत्र लिखे थे, जो बाद में 'शिष्टाचार' शीर्षक के अन्तर्गत पुस्तक के रूप में कुछ बरस पहले ही प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक में उन्होंने माता-पिता के साथ कैसे सम्बन्ध हों, गुरु के साथ कैसे सम्बन्ध हों, बड़े-छोटों के बीच आदर का क्या मापदण्ड हो, खान-पान में क्या दोष हैं, किस तरह का जीवन चरित्र है, का खुलासा किया है। इस संदर्भ में मेरी मान्यता है कि वर्तमान में पाश्चात्य सभ्यता का जो प्रभाव भारतीय जन-जीवन पर पड़कर हमको डिस्को डांसर व ट्विस्ट डांसर बना रहा है, और जिस तरह हमारे देश में भाई-भाई, माता-पिता, पति-पत्नी के रिश्तों में जो एक अभारतीय प्रभाव हल्के-हल्के प्रवेश कर रहा है, उसके विरुद्ध एक चेतना का परिचय चौधरी साहब सन् 1941 में बरेली जेल में ही दे चुके थे।

आजादी के बाद चौधरी साहब समय-समय पर पंडित जवाहर लाल नेहरू की प्रशासनिक अक्षमता के बारे में और उसके कारण बताते हुए मुझसे कहते कि "बहुगुणा, जिस आदमी ने सफलता के साथ स्थानीय निकायों का संचालन नहीं किया हो, उससे राष्ट्र के कुशल संचालन की अपेक्षा कैसे की जा सकती है।" उनकी मान्यता थी कि पटे-पदे आदमी मंजता है। उसकी प्रतिभा मुखर भी होती है और निखरती भी जाती है।

चौधरी चरण सिंह की बहुमुखी प्रतिभा से प्रभावित होकर ही पंडित गोविन्द बल्लभ पंत ने सन् 1946 में उन्हें पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी बनाया। उत्तर प्रदेश के राजनैतिक नेताओं में तीन नाम ऐसे हैं जिन्होंने अपना राजनैतिक जीवन पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी से शुरू किया। वह हैं श्री लाल बहादुर शास्त्री, चौधरी चरणसिंह और श्री चन्दभानु गुप्त। वर्तमान में जब मैं देखता हूं कि आज देश के लोग सहसा मंत्री और प्रधानमंत्री बन जाते हैं तो आश्चर्य होता है कि इनको चौधरी साहब और शास्त्री जी का अनुभव कहां से मिलेगा।

यही नहीं, उत्तर प्रदेश के केशव देव मालवीय, अजित प्रसाद जैन रहे हों, या आत्माराम गोविन्द खेर रहे हों, मैं तो बहुत छोटा आदमी हूं, यानी मेरी पीढ़ी में मेरे भी जैसे लोग रहे हों, पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी से ही हम लोगों ने जीवन शुरू किया और धीरे-धीरे आगे बढ़ते गए।

चौधरी साहब बढ़ते गए, बढ़ते गए। वह उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री, प्रदेश के मुख्यमंत्री, केन्द्र में गृहमंत्री, वित्तमंत्री और बाद में प्रधानमंत्री बने। चौधरी चरणसिंह के जीवन की एक लंबी कहानी है संयम और संघर्ष की, एक लम्बी कहानी है देश की असल शक्त समझने की। असली भारत समझने की। असली भारत वह है जो गांव में रहता है। क्योंकि देश के 84 फीसदी लोग गांव में रहते हैं। इसीलिये मैं अक्सर कहता हूं कि देश का कैसा दुर्भाग्य है कि 84 फीसदी लोगों के रहन सहन, खान-पान, पहनावे दुख-दर्द का एक फीसदी भी हमारे शासक, प्रशासक और समूचे राजतंत्र पर कोई असर नहीं है। चौधरी चरणसिंह ने वह जहां कहीं भी रहे, उस प्रभाव को बनाये रखा।

प्रशासक की कुर्सी पर बैठकर, विधानसभा के वातावरण और उपनिवेशवादी तंत्र का साथ होने के बावजूद, वह अपने बुनियादी विश्वासों को भी, चाहे वह उनके व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्धित रहे हों या आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक प्रश्नों से सम्बन्धित रहे हों, इतना सुघड़ बना चुके थे कि उन पर कालिमा नहीं चढ़ पायी।

चौधरी साहब ने सदैव दस्तकारों को प्रोत्साहन दिये जाने पर बल दिया। इस संदर्भ में उन्होंने मुझसे, कई बार कहा कि "अंग्रेजी राज में दस्तकार काश्तकार बना।" आजादी के बाद देश के नेताओं द्वारा भारी उद्योगों को प्रथम स्थान देने की नीति के विरोध में चौधरी साहब गांधी जी के रास्ते के ज्यादा निकट थे। उनका कहना था कि खेती पर लगे लोगों की संख्या घटाओ—दस्तकार बढ़ाओ।

चौधरी साहब के सम्बंध में औद्योगिक नीति और आधुनिकता को लेकर एक वर्ग विशेष द्वारा सुनियोजित षडयंत्र के तहत अक्सर दुष्प्रचार किया जाता रहा है। उन पर यह आरोप भी लगाया जाता है कि वह उद्योगों के खिलाफ रहे। जबकि असलियत यह है कि वह बुनियादी उद्योग, भारी उद्योग, मंझोले उद्योग और ग्राम उद्योग, किसी के खिलाफ नहीं थे। उन्होंने कभी यह नहीं कहा कि लोहा छोटे उद्योग द्वारा बनाया जाए, जबकि चीन में माओत्सेतुंग ने कहा भी था। उनका मानना था कि देश का विकास तभी संभव है जबकि देश का अपने संसाधनों द्वारा नीचे से निर्माण किया जाए। इस विषय में महात्मा गांधी और विनोवा जी का यही मत था।

सच तो यह है कि कल्पना जगत में नहीं वरन् वास्तविक जगत का एक नेता भारत के स्वराज की बेड़ियों को काटने के लिए जीवन की आखिरी सांस तक निरंतर परिश्रम, संघर्ष करता रहा लेकिन इस सबके बावजूद चौधरी साहब पर अक्सर प्रतिक्रिया वादी होने और किसानों का पक्षधर होने का आरोप लगाया जाता है। इस संदर्भ में

मेरा कहना है कि योरोपीय इकोनॉमिक कम्युनिटी में चौधरी चरण सिंह नेता तो नहीं रहे, जापान में उनकी नहीं चलती। फिर, जापान सरकार वहां धान पैदा करने वाले को अन्तर्राष्ट्रीय मूल्यों से तीन गुणा पैसा क्यों दिलाती है ? धान से निकले चावल को सुअर के खाने के लिए जिसका मांस जापानी लोग खाते हैं, आधे दाम पर क्यों बिकवाती है ? योरापियन इकनॉमिक कम्युनिटी का तो यह हाल है कि 1980 में उनका कृषि और पशुधन विकास के ऊपर सबसे नीचे 6 बिलियन डालर खर्च होता था और अब 1986 में यह बढ़ कर 20.6 बिलियन डालर हो गया है। आज इन देशों की स्थिति वैसी नहीं है जैसी कि द्वितीय महायुद्ध में थी, आज वह कृषि तथा पशुधन के मामले में सम्पन्न और समर्थ हैं और वह हर बड़ी से बड़ी समस्या का सामना करने में सक्षम हैं। यह उस हालत में है जबकि बर्तानिया में, फ्रांस में, जर्मनी में, रूस और अमेरिका में कृषि पर लगे लोगों की संख्या नगण्य है।

चौधरी साहब पर महिला, हरिजन और मुस्लिम विरोधी होने का भी आरोप लगाया जाता है। यह आरोप उसी शोषक वर्ग द्वारा लगाये जाते रहे हैं, जो समझता है कि यदि चौधरी चरण सिंह की नीतियां इस देश में लागू हो गयीं तो सभी मोर्चों पर उनका वर्चस्व खत्म हो जायेगा। चौधरी साहब ने समय-समय पर इन आरोपों को गलत साबित किया। उन्होंने हरियाणा में श्रीमती चन्द्रावती को पुरुषों के होते हुए विधान सभा में विरोधी दल की नेता बनाया, उत्तर प्रदेश और बिहार में हरिजनों को विधानसभा में उपसभापति बनाया। उनके इस निर्णय से पार्टी के लोग काफी नाराज भी हुए पर उन्होंने इसकी कोई परवाह नहीं की। सन् 1980 में लोकसभा और विधान सभा चुनावों में मुसलमानों को दिये टिकिटों की संख्या उनके मुस्लिम विरोधी होने के आरोप को झूठा साबित करती है।

राष्ट्र की एकता, अखंडता, भाषा, धर्म, जाति, साम्प्रदायिकता और नीतिगत प्रश्नों पर चौधरी साहब की स्पष्ट मान्यताएं थीं। ऐसी बात नहीं कि इन पर वह बोले नहीं। समय-समय पर उन्होंने इन मुद्दों पर स्पष्ट राय भी व्यक्त की, भले ही उन्हें उसका खामियाजा क्यों न उठाना पड़ा हो। मेरा कहना है कि उनके अनुयायियों ने उन्हें समझने में भूल की है और उनकी नीतियों, विचारों के प्रचार व प्रसार में जो कमी की है, उससे राष्ट्र को बड़ी हानि उठानी पड़ी है।

चौधरी साहब का व्यक्तित्व ऐसा रहा कि उनके मानने वाले लोगों के मन में उनके लिए सदैव सम्मान रहा। इसमें कोई दो राय नहीं कि उन्हें जनता का भरपूर प्यार मिला और वह हमारे सदैव प्रेरणा स्रोत और पथ प्रदर्शक रहेंगे।

30

# समतावादी समाज बनाने की थी उनकी परिकल्पना

राजनारायण*

सरदार पटेल का सा हृदय, गांधी जी की नीति और डाक्टर राममनोहर लोहिया की तार्किक शक्ति पाने वाले तथा आजीवन सादा जीवन और उच्च विचार के पोषक रहे चौधरी चरण सिंह जी ने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया। जातिवाद को उन्होंने समाज के लिए कलंक माना। इसीलिए जाति-तोड़ो के वह सबसे बड़े हिमायती रहे। नकली समाज और बनावट से वह अछूते रहे। गरीब परिवार में जन्म लेने के कारण ग्राम्य जीवन की हरेक समस्याओं से वह भलीभांति परिचित हैं। ममत्व और समत्व का योग उनके व्यक्तित्व की विशिष्टता रही है। यही वजह रही कि जिसका भी चौधरी साहब से एक बार ही सही, वैचारिक सम्बंध हुआ, वह पारिवारिक सम्बंधों से भी गहरा और अटूट हो गया। चौधरी साहब की इसी सादगी, सरलता और भोलेपन का कुछ कुटिल लोगों ने नाजायज फायदा भी उठाया। इस सत्य को नकारा नहीं जा सकता।

चौधरी साहब नेहरू के भोगवादी-युग को कर्मवादी युग में परिवर्तित कर गरीबों के हाथ में सत्ता देना चाहते थे, इसलिए उन्हें नेहरूवादियों के कोप का भाजन भी बनना पड़ा। चौधरी चरण सिंह जी अधिनायकवाद के सर्वथा विरुद्ध रहे हैं। इसलिए वह राजनीतिक और आर्थिक सत्ता का विकेन्द्रीकरण करना चाहते हैं। यह सर्व विदित है कि जनतंत्र के पांच अंग होते है—व्यक्ति, पार्टी, सरकार, समाज और राष्ट्र। इसमें जहां व्यक्ति पार्टी का रूप लेगा या पार्टी सरकार का रूप लेगी, वहीं अधिनायकशाही व्यवस्था आयेगी। इसलिए इस पद्धति का चौधरी साहब सदैव विरोध करते रहे हैं। उनके अनुसार व्यक्ति की गरिमा और उसकी मर्यादा की रक्षा बराबर होनी चाहिए। असीमित-अमर्यादित शक्ति का केन्द्रीयकरण पार्टी में तो होना चाहिए, लेकिन ऐसा सरकार में कदापि न हो। होता यह है कि कभी-कभी सरकारें भी सरकार पर आने

* दिवंगत प्रख्यात समाजवादी नेता एवं भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री

वाले खतरे को राष्ट्र पर खतरा बताकर असीमित शक्ति सम्पन्न होने का प्रयत्न करती हैं और सारी शक्ति अपने हाथ में ले लेती हैं। लेकिन किसी भी जनतंत्र प्रेमी द्वारा इस मनोवृत्ति का विरोध स्वाभाविक है ही।

इसमें दो राय नहीं कि समाज में जो व्यक्ति जितना पिछड़ा है, उसको उतनी ही अधिक सहायता की जरूरत है और वह इसका हकदार भी है। इसलिए चौधरी साहब ने लोकदल के नीति-वक्तव्य में परिगणित जनजातियों (शेड्यूल ट्राइब्स) को सरकारी तथा अर्द्ध-सरकारी नौकरी, कोटा-परमिट सभी में निश्चित बीस प्रतिशित सुरक्षित रखने की बात कही है। शिक्षा-संस्थाओं में अनुदान अंक (ग्रेस-माक) देने की बात की हिमायत की है।

चौधरी साहब कुशल प्रशासक भी हैं। वह चाहे किसी भी पद पर रहे हों, अपनी कार्य-कुशलता के उन्होंने अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। जब वह उत्तर प्रदेश में माल-मंत्री थे, तो उन्होंने शिकमी जोतने वाले या अनधिकृत कब्जा करने वालों को, जिनके अधिकार में भूमिधरों के खेत थे, उन सबके लिए एक विधेयक प्रस्तुत कर सीरदारी का हक दे दिया, इससे हजारों हरिजन भूमि के मालिक हो गये। आज कुछ लोग अपने संकुचित स्वार्थ की पूर्ति के लिए चौधरी साहब को "हरिजन विरोधी" बताने का दुष्प्रयास करते है लेकिन असलियत सामने आते ही उन नकली तथाकथित हरिजन नेताओं का चेहरा बेनकाब हो जायेगा। गांधी जी, डाक्टर लोहिया और संविधान के रचनाकारों में से एक डा. अम्बेडकर के स्वप्न हरिजनों की दयनीय स्थिति में तत्काल सुधार हो; भोजन, वस्त्र, मकान, दवा और पढ़ाई की उनकी पूरी व्यवस्था हो; ऊंच-नीच का भेदभाव मिटे; सब मनुष्य बराबर हों, को साकार करने के लिए चौधरी साहब सदैव प्रयत्नशील रहते हैं और यह कटु सत्य है कि किसी हरिजन की अपेक्षा हरिजन का हित चौधरी साहब ज्यादा करते हैं और हरिजनों के प्रति उदारता में कभी कमी नहीं आने देते। इस सच्चाई को नकारा नहीं जा सकता।

आज चौधरी साहब को मुसलमान-विरोधी सिद्ध करने का दुष्प्रयास किया जाता है। जबकि चौधरी साहब ने अपने मुख्यमंत्रित्वकाल में उत्तर प्रदेश में मुसलमानों के हितों की बराबर रक्षा की है। उन्होंने सरकारी गजट तक का प्रकाशन उर्दू में कराया। चौधरी साहब के प्रयास से 1972 से ही विरोधी दलों को मिलाकर कांग्रेस का एक राष्ट्रीय विकल्प बनाने की कल्पना तीव्र गति से आगे बढ़ने लगी थी। छोटी-छोटी अनेक पार्टियों को मिलाकर 1974 में भारतीय लोकदल की स्थापना हुई। उनके प्रयास से ही आपातकाल में जनता पार्टी का जन्म हुआ, जिसके गठन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका चौधरी चरण सिंह की ही थी। इसमें दो राय नहीं कि उन्होंने सर्वदा मर्यादा की रक्षा की, जनता पार्टी के नेता के चयन के प्रश्न पर लिया उनका निर्णय इसका जीता जागता प्रमाण है।

वह आज के सामाजिक और राजनीतिक वातावरण से खिन्न हैं। वह चाहते हैं

कि समतावादी समाज को बनाने के लिए देश के अस्सी फीसदी गांव के लोग, जो अकिंचनता और अशिक्षा के गर्त में हैं, उनके हाथ में सत्ता हो। "जाके पांव न फटी बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई" की कहावत का अर्थ चौधरी साहब बखूबी समझते हैं। उनका मानना है कि देश की गरीबी, गांव व शहर का अन्तर तथा गरीबी और अमीरी की खाई तभी दूर की जा सकती है, कृषिजन्य पदार्थ और कल-कारखानों से उत्पन्न पदार्थ की कीमतों में न्याययुक्त सन्तुलन लाया जा सकता है, किसानों के लिए सस्ती खाद, पानी, बीज की व्यवस्था हो सकती है, मरीजों को सस्ती दवा मिल सकती है, लेकिन तब जबकि नेतृत्व को गरीबी का एहसास हो और इस सबको करने के लिए इच्छाशक्ति हो। इस तरह के सवालों पर चौधरी साहब सदैव चिंतित रहते हैं। इसीलिए गांधी जी द्वारा बताई गयी राह पर चलकर चौधरी साहब बेकारों को काम देने तथा अशिक्षितों को शिक्षित करने, ऊंच-नीच तथा छूआछूत का भेदभाव मिटाने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहते हैं।

चौधरी साहब दार्शनिक मानवतावादी हैं। सही अर्थों में वे मानव के पुजारी हैं, वह चाहे मुस्लिम हो, हिन्दू हो, सिख हो या ईसाई। वे केवल मानवतावादी नहीं हैं, जैसे जवाहरलाल नेहरू थे। जवाहरलाल जी मानवतावादी तो थे, किन्तु मानव-प्रेमी नहीं। मानव-प्रेमी हमेशा मानव से प्रेम करेगा, घृणा नहीं। चीथड़ों में लिपटा अकिंचन मानव देखकर चौधरी साहब की आंखों में आंसू आ जाते हैं। चौधरी साहब का बराबर कहना है कि आज जरूरत आजादी को बचाये रखने की है लेकिन आज हालात बद से बदतर हैं। उनके अनुसार जो नेतृत्व करोड़पतियों के धन के सहारे राजनीति चलायेगा, वह कभी भी करोड़पतियों के चंगुल से देश को नहीं बचा सकता और न देश की गरीबी का खात्मा कर सकता है। यदि यही हाल रहा तो वह दिन दूर नहीं जब हमारा देश पुनः गुलाम हो जायेगा।

# 31

# आज भी प्रासंगिक हैं चौधरी चरण सिंह

बी. सत्यनारायण रेड्डी*

चौधरी चरण सिंह जी आज उतने ही प्रासंगिक हैं जितने उस वक्त थे जब मैं उनके साथ काम करता था। उन दिनों वे लोकदल के अध्यक्ष थे और मुझे उन्होंने लोकदल का जनरल सेक्रेटरी बनाया था। वह समय राजनीति की दृष्टि से काफी सरगर्मी का था। उत्तर प्रदेश का हमने विस्तृत दौरा किया। इसके अलावा उनके साथ देश के विभिन्न भागों की यात्रायें करने का भी अवसर मिला था। अतः मुझे चौधरी साहब के जीवन और दर्शन दोनों को बहुत नजदीक से देखने-जानने-समझने का अवसर मिला था। उस वक्त मैंने जाना कि चौधरी साहब के चित्त और चिंतन में कौन-से मुद्दे मुख्यतः सदा बने रहते हैं।

चौधरी साहब को सारा देश किसानों और समाज के दुर्बलों के रहनुमा के रूप में जानता है। उन्होंने इनकी दशा सुधारने के लिए 1981 में कहा था—"हमारे लोगों को अपने पुराने तौर-तरीके बदलने होंगे। सड़ी-गली आदतें और दृष्टिकोण बदलना होगा।" इसके लिए उदाहरण देते हुये उन्होंने कहा—"भाग्यवाद से छुटकारा पाना है; वर्ण-व्यवस्था से मुक्ति पानी है; जन्म-नियंत्रण के उपाय करने हैं और पार्लियामेंटरी डेमोक्रेसी को मजबूत करना होगा। इसके साथ शिक्षा व्यवस्था को लोकाभिमुखी बनाना होगा।" चौधरी साहब की ये सारी बातें अब तक अपनी जगह पर पूरी तरह सही हैं और ये पूरे समाज की कायाकल्प करके रख देंगी।

किसानों में प्रमुख समस्या भूमि को लेकर है। कुछ लोग कहते हैं—आर्थिक उन्नति और सामाजिक न्याय की बात एक दूसरे के विरोध में है। परंतु चौधरी साहब ने कृषि भूमि को लेकर कहा कि यह बिल्कुल गलत है। भूमि वितरण में समता आने पर तो कृषि उत्पादन और भी बढ़ेगा। जब वे उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री थे, उस समय उन्होंने किसानों की विभिन्न समस्याओं को प्राथमिकता से निपटाया। भूमिसुधार

* उड़ीसा के राज्यपाल

संबंधी कानूनों को तेजी से लागू कराया। इसी का परिणाम था कि उत्तर प्रदेश कृषि के क्षेत्र में भारतीय मानचित्र में तेजी से उभर कर सामने आया

उन्होंने भारतीय अर्थनीति और अर्थ व्यवस्था का गहराई से अध्ययन किया। वे इस बात को लेकर चिंतित थे कि हमारे गांवों में क्रमशः गरीबी बढ़ रही है। शहरों और गांवों के बीच तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो गांव गरीबी की सीमा रेखा से और नीचे जा रहे हैं। चौधरी साहब के प्राण गांवों के वातावरण में बसते थे। अतः गांवों की गिरती दशा को समझने में उन्हें देर न लगी। उनका दृढ़ विश्वास था कि ग्राम-व्यवस्था को मजबूत किये बिना देश सच्ची उन्नति नहीं कर सकेगा। इसके लिए उन्होंने लघु उद्योगों, कुटीर उद्योगों एवं हस्त कला उद्योगों को उनका उचित स्थान दिलाने पर जोर दिया, जिसमें मानव के व्यक्तित्व को मशीन के ऊपर स्थान दिया गया है। इसी से जन्म लेती है चौधरी चरण सिंह जी की अर्थनीति, समाज नीति। इस ग्रामभित्तिक दृष्टिकोण को लेकर उनका देश के बड़े-बड़े नेताओं से स्पष्ट मतभेद था। परन्तु उन्होंने कभी समझौता नहीं किया। अंत तक अपने विचारों पर वे अटल रहे। वहां व्यक्तिगत स्वार्थ का कोई प्रश्न न था। चौधरी साहब ने समझ लिया कि इसी में देशहित है और देश हित में बड़ी-से-बड़ी कुरबानी देने में वे कभी पीछे नहीं रहे।

देश में बढ़ती हुई बेरोजगारी और असमानता दोनों को उन्होंने समझ लिया था। उनका कहना था भूखे लोग अधिक देर तक सिद्धांतों की प्रतीक्षा नहीं करेंगे। देश ने इस ओर तुरंत ध्यान न दिया तो बहुत बड़ी उथल-पुथल होगी। वे कहते थे, देश की प्रगति का मानदंड इस्पात का उत्पादन, कारों, रेफ्रिजरेटरों और टी. वी. सेटों की संख्या से नहीं लगा सकते। इसके लिए रोटी, कपड़े और मकान की उपलब्धि देखनी होगी। समाज के सबसे बड़े तबके के लिए स्वास्थ्य और शिक्षा सुविधाओं की उपलब्धि देखनी होगी। तभी पूरे समाज की उन्नति को माप सकेंगे। वरना अंदर ही अंदर बढ़ता असंतोष देश की शांति और चैन को मिटा देगा। चौधरी चरण सिंह जी की इस चेतावनी पर हमें ध्यान देना होगा।

चौधरी साहब के कमरे में लगे स्वामी दयानंद और स्वामी विवेकानंद के बड़े चित्र अनायास ध्यान खींच लेते थे। उनके विचार सामाजिक परिवर्तन को लेकर दयानंदजी से बहुत कुछ प्रभावित हैं। वे अंध-विश्वासों पर उतनी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करते। परंतु विधवा विवाह के वे पक्षधर थे। जात-पांत के भेद-भाव को समाज का कलंक मानते थे वह। समाज सुधार की दिशा में उन्होंने कई उल्लेखनीय कदम उठाये थे। देश की एकता के लिए राष्ट्रभाषा के रूप में चौधरी साहब ने हिन्दी का ही प्रयोग किया। संसद और जनता के बीच वे प्रायः हिन्दी में ही बोलते थे।

उनका शांत-सौम्य चेहरा कार्यकर्ताओं में हमेशा उत्साह का संचार करता। जब कोई समस्या आती, वे बहुत कम बोलते, परंतु पूरी तरह विषय पर विचार-विमर्श

करते। फिर अपना मत व्यक्त करते। मार्ग-दर्शन का उनका तरीका अनूठा था। चौधरी साहब कोरे आदर्शवादी न थे, उन्होंने जीवन में आदर्शों के अनुरूप अपनी रोज की प्रणाली बनायी थी। गांधीजी की परंपरा यही तो कहती है—जिन सिद्धांतों को मानते हो, उन पर सबसे पहले तुम स्वयं आचरण करो ! इस दृष्टि से भारतीय परंपरा में चौधरी साहब की पूरी आस्था थी। यह सादगी खान-पान, पहनावे, रहन-सहन हर बात में स्पष्ट दिखाई देती थी। यह भारतीय चिंतन और जीवन शैली उन्हें राजनीतिज्ञों की भीड़ में अलग पहचान देती थी। उन दिनों कुछ लोग साम्यवाद के कट्टर समर्थक थे, तो कुछ अमेरिकी शैली की अर्थव्यवस्था के पक्ष में थे। परंतु चौधरी चरण सिंहजी अपने भारतीय दृष्टिकोण पर डटे रहे। उन्हें प्रधानमंत्री के रूप में कार्य करने का थोड़ा-सा ही समय मिला। परंतु देश को राजनैतिक नेतृत्व लम्बे समय तक दिया। वह जीवन भर अपने कार्यों, लेखन, चिंतन सब में समाज के उपेक्षित ग्रामीण वर्ग की चिंता में ही लगे रहे। शर्त यही कि भारतीय शैली में उनका विकास हो, भारतीय मूल्यों पर आधारित हो।

वास्तव में चौधरी चरण सिंह जी का आदर्श व्यक्तित्व चिर-परिचित है। वे एक निर्भीक स्वतंत्रता सेनानी, कुशल प्रशासक तथा कर्मठ राजनीतिज्ञ ही नहीं, किसानों के प्रबल हितैषी तथा उनकी आकांक्षाओं के प्रतीक थे। राष्ट्र-निर्माण और समाजोत्थान के साथ ही किसानों, खेत मज़दूरों तथा कृषि की उन्नति को वे सदैव सर्वोच्च प्राथमिकता देते थे, क्योंकि उनका यह अमिट विश्वास था कि भारत का समग्र विकास ग्रामीण भारत के उत्थान में ही निहित है। चौधरी चरण सिंह ने भारतीय अर्थ-व्यवस्था को ग्रामोन्मुखी बनाने की ज़रूरत पर सदैव बल दिया। वे भारी उद्योगों को बढ़ावा देने की अपेक्षा घरेलू और छोटे-छोटे उद्योगों की स्थापना को प्राथमिकता देकर देश से ग़रीबी और बेरोज़गारी को बिल्कुल ख़त्म करना चाहते थे। यही कारण है कि सदियों से शोषण और अत्याचार से पीड़ित ग्रामीण जनता के विकास तथा ग्राम्य समाज के जीवन में एक नयी चेतना एवं जागृति पैदा करने के लिए वे जीवन-भर संघर्षरत रहे। वे एक सिद्धान्तवादी व्यक्तित्व के धनी महापुरुष थे। वह एक ऐसे शक्तिशाली भारत की स्थापना के लिए जीवन पर्यन्त समर्पित रहे, जिसमें ऊंच-नीच, गरीबी-अमीरी, अन्याय, अत्याचार और शोषण न हो और समस्त देशवासियों को सुख के साथ जीवन-यापन का पूरा मौका मिल सके। आज जरूरत इस बात की है कि हम उनके सिद्धान्तों पर चलकर समता और समाजवाद पर आधारित एक "आदर्श समाज" की स्थापना के उनके सपने को साकार करने में पूरी शक्ति से जुट जायें। यही हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

चौधरी साहब समाज के सभी वर्गों के लोगों से समभाव से मिलते थे। उनकी समस्याओं को सुनते थे और उनके निवारण हेतु तत्पर रहते थे। चौधरी साहब का देश व समाज, विशेषकर गरीबों और किसानों की उन्नति, एकता एवं भाईचारे की

भावना को मजबूत बनाने जैसे विषयों पर चिन्तन था और वे इन विषयों पर खुले दिल से बातचीत किया करते थे। चौधरी साहब के कार्य करने का ढंग एवं बातचीत करने की शैली इतनी सरल थी जो सभी को प्रभावित करती थी। इसमें दो राय नहीं कि मैंने भी चौधरी साहब के साथ कार्य करके पर्याप्त उर्जा और प्रेरणा ग्रहण की है और उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से मैं आज भी बहुत प्रभावित हूं। चौधरी साहब का गांधी टोपी पहने दृढ़ चेहरा आज भी हमें वही प्रेरणा दे रहा है। उनकी याद हमारे देश की महत्वपूर्ण धरोहर है।

32

# प्रेस की आजादी के पक्षधर

कुलदीप नैय्यर*

चौधरी चरण सिंह से मेरा सम्बंध काफी पुराना था। वे जब उत्तर प्रदेश में मंत्री थे, तब मेरी उनसे भेंट हुई थी और तब से बने सम्बंध धीरे-धीरे घनिष्ठता में बदल गये, जो उनके मृत्यु पर्यन्त बने रहे। मैं उनका बहुत आदर करता था, इसलिए नहीं कि वह बहुत बड़े नेता थे, इसलिए कि वह एक सच्चे और साफ दिल, ईमानदार इंसान थे।

एक वजह और, वह यह कि वे मेरे लेखों को बहुत ध्यान से पढ़ते थे। एक पत्रकार को इससे बड़ा सम्मान क्या मिलेगा कि एक राजनेता उसके लेखों को पढ़ता ही नहीं है बल्कि उन पर मनन भी करता है। यहां यह भी उल्लेख करना आवश्यक समझता हूं कि वह मेरे ही लेखों-कॉलमों को पढ़ते हों, ऐसी भी बात नहीं है, वह हर एक अखबार के सम्पादकीय तथा स्तम्भों के अलावा विषय पर बहस भी करते थे। लेकिन उनसे प्रेस हमेशा नाराज रहा। प्रेस के, उनके प्रति रवैये में, दिल्ली आने के बाद और बढ़ोत्तरी हुई जो उनके गृहमंत्री, वित्तमंत्री, उप-प्रधानमंत्री और प्रधानमंत्री रहने के बाद भी जारी रही। इसके बावजूद वे प्रेस की आजादी के हमेशा पक्षधर रहे। प्रेस के ऐसे रवैये के बाद भी उन्होंने न तो व्यक्तिगत तौर पर और न किसी सार्वजनिक समारोह में, प्रेस के खिलाफ कार्यवाही करने या बंदिश लगाने जैसी कोई बात कही। उनका मानना था कि प्रेस की आजादी के बिना लोकतंत्र स्थायी नहीं रह सकता। इंका सरकारों के काल में तो प्रत्यक्ष, नहीं तो अप्रत्यक्ष रूप से प्रेस पर अनगिनत बंदिशें लगायी जाती रहीं। पिछली सरकारों में प्रेस पर बराबर दबाव बना रहा।

मैंने शास्त्रीजी (देश के दूसरे प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री) के साथ काम किया है, इसलिए मुझे मालूम है कि चौधरी साहब की एक बात शास्त्री जी से बहुत

---

* वरिष्ठ पत्रकार एवं भूतपूर्व राजनयिक

मिलती थी—वह यह कि वे शास्त्री जी की तरह बहुत सादा और दिल के साफ थे। उन्होंने कभी भी किसी से कड़वी बात नहीं की। वे बेईमान नहीं थे। मुझे याद आता है कि जब शास्त्री जी मिनिस्टर नहीं रहे थे, तब उनके घर में मुश्किल से गुजारा होता था। इसी तरह चौधरी साहब के यहां भी बड़ी मुश्किल से गुजर-बसर होती थी। क्योंकि उनके यहां आमदनी का कोई दूसरा जरिया नहीं था। एक बात जो उनकी मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित करती है, वह यह कि वे कभी वादा खिलाफी नहीं करते थे। वह चाहे मानव अधिकार का सवाल हो, लोकतंत्र के स्थायित्व का सवाल हो, चाहे धर्मनिरपेक्षता का या गरीबों की हालत सुधारने का प्रश्न हो, उन्होंने इन सवालों पर अपने उसूलों से कभी समझौता नहीं किया। इन सवालों की खातिर वह बराबर लड़ते रहे। उनका मानना था कि इन सवालों पर कभी समझौता नहीं करना चाहिए और यदि कभी इनको पूरा करने का मौका मिले तो हर हालत में पूरा करना चाहिए। आज के हालात में हमारे लिए चौधरी साहब का यही सबसे बड़ा संदेश है।

जयप्रकाश जी का लोकशक्ति में बहुत बड़ा विश्वास था। चौधरी साहब भी लोकतंत्र के लिए लोकशक्ति या जनशक्ति कहें, उसे आवश्यक मानते थे। उनका मानना था, "एक ऐसी ताकत जो जनता की ताकत हो—यदि सरकार कुछ गलत करे, तो रोक सके, उसे सही काम करने के लिए मजबूर कर सके—का होना बहुत जरूरी है। सही साधनों और तरीकों के बिना मंजिल हासिल नहीं की जा सकती।"

दुख इस बात का है कि आज वह हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनके विचार ही हमारे लिए संदेश हैं, जो सदैव भविष्य में भी कदम-कदम पर हमारा मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे।

33

# चौधरी चरण सिंह : एक अद्वितीय व्यक्तित्व

चन्द्रजीत यादव*

चौधरी साहब से मेरी पहली मुलाकात सन् 1957 में हुई, जब मैं पहली बार उत्तर प्रदेश विधानसभा में आजमगढ़ से चुनकर आया था। उस समय चौधरी साहब उत्तर प्रदेश के राजस्व मंत्री थे। मैं विरोधी दल का सदस्य था। विधानसभा में मेरे एक भाषण के बाद चौधरी साहब से मेरी मुलाकात विधानसभा की लॉबी में हो गयी। उन्होंने मेरी ओर बड़े प्यार और गंभीरता से देखकर कहा, "तुम बहुत अच्छा बोलते हो। चलो मेरे साथ" और मेरी उंगली पकड़ कर वह विधानसभा में अपने कमरे में ले गए। उन्होंने मुझसे कहा, "तुम्हें कांग्रेस में होना चाहिए था, तुम गलत जगह हो।" उनकी इस बात में उनकी स्पष्टवादिता और अपनत्व दोनों झलक रही थी।

1967 तक मैं उत्तर प्रदेश विधानसभा का सदस्य था। इस दौरान अक्सर चौधरी साहब से मेरी मुलाकात और बात होती रहती थी। उन्होंने मुझे एक पुस्तक दी जिसमें उन्होंने भारत की कृषि व्यवस्था और किसानों की स्थिति का बड़ा वास्तविक और सजीव चित्रण किया था। उस समय चौधरी साहब एक विख्यात किसान नेता के रूप में अपनी धाक जमा रहे थे। विशेष रूप से सहकारी खेती के खिलाफ वह अकाट्य तथ्य के साथ अपनी बात कह रहे थे। इस प्रश्न पर वह जवाहर लाल जी से भी टकरा रहे थे। यह वह समय था जब जवाहर लाल जी के खिलाफ किसी भी कांग्रेसजन को क्या, राष्ट्रीय स्तर के कांग्रेस नेता को भी मुंह खोलना बहुत कठिन काम था। लेकिन चूंकि चौधरी साहब अपने विश्वास में दृढ़ थे और उनका विश्वास था कि सहकारी खेती किसानों को गुलाम बना देगी, कृषि पैदावार में वृद्धि नहीं होगी, नौकरशाही के हाथों में जाकर तबाह हो जाएगी, इसलिए वह उसका विरोध कर रहे थे। इसके लिए उन्होंने बड़ा चिंतन और अध्ययन

* सांसद एवं भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री

किया था। किसानों की वास्तविक जिन्दगी और गांव की स्थिति को उनसे बेहतर कम लोग जानते थे।

एक बार एक रूसी विद्वान लखनऊ आये। वह भारत की कृषि व्यवस्था और भूमि सुधार पर अध्ययन कर रहे थे। उनकी बड़ी इच्छा थी कि चौधरी साहब से भेंट हो जाए। समय लेकर मैं उन्हें अपने साथ चौधरी साहब के पास ले गया। लगभग एक घंटे की वार्ता के दौरान चौधरी साहब रूस की सहकारी खेती और राजकीय फार्मों की दुर्गति पर उन सज्जन से बात करते रहे। भारत की कृषि व्यवस्था, किसानों की दयनीय स्थिति और कृषि सुधार तथा भूमि सुधार के बारे में अपने विचारों से भी उन्होंने उन्हें अवगत कराया। जब हम दोनों चौधरी साहब से मिलकर वापस आ रहे थे तो रूसी विद्वान ने मुझसे कहा कि चौधरी साहब की योग्यता और जानकारी का मैं लोहा मान गया हूं। मुझे भारत में यह पहले राजनीतिज्ञ मिले हैं जिन्हें भारत की कृषि व्यवस्था और किसानों की समस्याओं का पूर्ण ज्ञान है। मैं उनसे पूरी तरह चाहे नहीं भी सहमत हूं लेकिन उनकी विद्धता का लोहा अवश्य मानता हूं।

चौधरी साहब से यदाकदा मेरी मुलाकात पिछड़े वर्गों के सम्मेलनों में भी होती रही। एक बार जब वह उत्तर प्रदेश में श्री जयराम वर्मा और श्री रामवचन यादव आदि को साथ लेकर पिछड़ा वर्ग सम्मेलन करने पर पूरे राज्य में निकले थे, तो उत्तर प्रदेश के कांग्रेस के नेतृत्व ने इन सम्मेलनों का जोरदार विरोध किया। उनका कहना था कि यह जातिवादी सम्मेलन हैं। इनसे जातिवाद बढ़ेगा और किसी कांग्रेस नेता को इसमें सम्मिलित नहीं होना चाहिए। इस प्रकार के परिपत्र सभी कांग्रेस कमेटियों को भेज दिए गए थे। यही नहीं सार्वजनिक रूप से भी इसकी घोषणा कर दी गयी थी। मगर चौधरी साहब इसके सामने झुके नहीं और उन्होंने सम्मेलनों को रोका नहीं। अन्ततोगत्त्वा कांग्रेस नेतृत्व को ही झुकना पड़ा। कई सम्मेलनों में मैं उनके साथ सम्मिलित भी हुआ और उनमें बोला भी, यद्यपि हम लोगों की पार्टियां अलग-अलग थीं। परन्तु मंच एक था, विचार और दृष्टिकोण समान था।

कई बार जब मैं चौधरी साहब से अकेले में मिलता था, वह अन्तरजातीय विवाह के ऊपर खूब खुलकर चर्चा करते थे और उसके महत्व पर जोर देते थे। वह अपने बेटे और बेटियों का भी अन्तरजातीय विवाह करने के पक्ष में थे। उनका यह भी ख़्याल था कि सरकार को योजना बनाकर अन्तर्जातीय विवाह कानून को प्रस्तुत करना चाहिए। देश में जातिवाद समाप्त करने का वह उसे एक महत्वपूर्ण आधार मानते थे। किन्तु विडंबना यह है कि ऐसे व्यक्ति जिसके मन में जातिवाद समाप्त करने की इतनी गहरी आकांक्षा थी, उसे निहित स्वार्थी तत्व और उनके समाचार-पत्र उन्हें जातिवादी कहने में भी थके नहीं।

चौधरी साहब जब केन्द्र में आए, गृहमंत्री और बाद में प्रधानमंत्री बने, उस बीच कई बार मैं उनसे मिला और जब भी मैं उनसे मिलता था, उनके घर में, उन्हें अपने कमरे में जमीन पर गद्दे और तकिए के सहारे बैठकर काम करते देखा। वह बात करते हुए भी काम करते रहते थे। अपने पक्ष को देश के सामने रखने और अपने तर्क को शक्तिशाली बनाने के लिए वह आवश्यक आंकड़ों का भी सहारा लेते थे और उसे जुटाते रहते थे। उनके काम करने की पद्धति को एक तरह से हम ग्रामीण पद्धति कह सकते हैं। अपने घर पर काम करते समय कुर्सी, मेज, टाइपराइटर, कम्प्यूटर आदि उनके हथियार नहीं थे, उनकी लेखनी, कागज और आवश्यक पुस्तकें थीं। बात करते-करते वह कई बार भावुक हो उठते थे और उन्हें गुस्सा भी आ जाता था। यह दोनों स्थिति केवल इस बात की द्योतक थीं कि उनके दिल में कितना बड़ा दर्द था, देश के गरीबों और किसानों के लिए।

चौधरी साहब आर्य समाज से प्रभावित थे, इसलिए कई बार उनकी बातें ऐसी होती थीं जिससे लोग उन्हें साम्प्रदायिक समझ बैठते थे। वह साफ-साफ बात करते थे। उन्होंने कभी भी इस बात को नहीं छिपाया कि उनके मन में सरदार वल्लभ भाई पटेल के लिए जवाहर लाल नेहरू से ज्यादा आदर था। उनका कहना था कि यदि सरदार वल्लभ भाई पटेल देश के पहले प्रधानमंत्री बनते, तो देश की यह दुर्गति नहीं होती। वह जवाहर लाल जी का अनादर नहीं करते थे। किन्तु उनकी कई महत्वपूर्ण नीतियों से असहमत थे।

जब वह प्रधानमंत्री थे, उनसे मैं साउथ ब्लाक में मिलने गया था। उन्होंने मेरे ऊपर व्यंग्य करते हुए कहा कि आज मैंने तुम्हारे नेता के ऊपर एक बड़ी सख्त टिप्पणी लिखी है। पहले तो मैं समझ नहीं पाया कि मेरे नेता से उनका क्या तात्पर्य है। उन्होंने अपने एक सहायक से एक कागज मंगवाया। एक पृष्ठ पर उस टिप्पणी को उन्होंने आलेखबद्ध कराया था जिसमें उन्होंने जवाहर लाल जी के बारे में कुछ सख्त बातें लिखी थीं, जिसे वह प्रधानमंत्री की एक महत्वपूर्ण फाइल का हिस्सा बनाना चाहते थे। मैंने उनसे बड़ी नम्रता से कहा कि हमारे देश की यह परम्परा है कि जो व्यक्ति स्वर्गवासी हो चुका होता है, उसके बारे में कोई निन्दा की बात अथवा अप्रिय बात नहीं कही जाती। मेरी बात सुनकर कुछ क्षणों के लिए वह खामोश हो गए और उसके तत्काल बाद उन्होंने कहा कि तुम ठीक कहते हो और मेरे सामने उसे फाड़कर रद्दी की टोकरी में डाल दिया। मैंने इस बात में उनका बड़प्पन भी देखा और उनकी गरिमा भी।

चौधरी साहब से कई प्रश्नों पर मेरा मतभेद हुआ। लेकिन वह मतभेद सैद्धान्तिक था, व्यक्तिगत नहीं। उनका प्रेम मेरे प्रति सदैव बना रहा और मेरे मन में उनके लिए असीम आदर। मेरी मान्यता है कि इस युग में चौधरी साहब से बड़ा और कोई

किसान नेता हमारे देश में नहीं हुआ। मैं यह भी मानता हूं कि वह केवल किसान नेता ही नहीं थे, इस देश के सभी गरीबों के नेता थे। उनके जीवन का लक्ष्य था गांव की और देश की गरीबी मिटाना, देश को सम्पन्न बनाना, मूल्यों पर आधारित एक आदर्श समाज बनाना ताकि भारत विश्व का एक शानदार देश बन सके। ज्यों-ज्यों समय बीतता जाएगा, चौधरी साहब का व्यक्तित्व लोगों के दिलो-दिमाग में निखरता जाएगा।

34

# अक्षुण्ण जिजीविषा के धनी

भगवतीचरण वर्मा*

जीवन के संघर्षों से जूझता हुआ कलकत्ता-बंबई आदि नगरों की धूल फांकता हुआ मैं एक साल पहले बंबई से लखनऊ 'नवजीवन' के प्रधान सम्पादक के रूप में आया था। 'नवजीवन' उन दिनों उत्तर प्रदेश का महत्वपूर्ण हिन्दी दैनिक था। पंडित जवाहरलाल नेहरू के सबसे अधिक विश्वस्त सहयोगी श्री रफी अहमद किदवई के हाथ में—'नवजीवन' की नीति थी और प्रकाशन एसोसिएटेड जर्नल्स के मैनेजिंग डायरेक्टर थे—श्री फिरोज गांधी। राजनीति में अपने स्वार्थों को ध्यान में रखकर न जाने कितने समझौते करने पड़ते हैं, लेकिन एक सृजनात्मक साहित्यकार की हैसियत से समझौता करना मेरी प्रवृत्ति और प्रकृति में था। नौ-दस महीने तक दूसरों की नीतियों को ढोते-ढोते मैं तंग आ गया था। दिसम्बर 1949 में मैंने 'नवजीवन' से त्यागपत्र दे दिया। उसके दो-एक महीने बाद ही मेरठ का वह हिन्दी साहित्य सम्मेलन हुआ था जिसमें मुझे चौधरी चरण सिंह के प्रथम दर्शन हुए थे। मेरठ हिन्दी साहित्य सम्मेलन से सम्बद्ध कवि-सम्मेलन जो देश की भावी गतिविधियों का प्रतीक था, का मैं सभापति था। पण्डाल खचाखच भरा था। हुल्लड़बाजी का जोर था। गाली-गलौज की बौछार थी। लेकिन नितान्त निस्पृह-सा मैं उस सम्मेलन से निपट रहा था। मेरे अन्दर भय अवश्य था कि कहीं मैं उखड़ न जाऊं या वह कवि सम्मेलन न उखड़ जाए और एकाएक मैं चौंक उठा।

लगभग सात-आठ कार्यकर्ताओं के साथ एक व्यक्ति ने पण्डाल में प्रवेश किया, अचानक हुल्लड़बाजी बंद हो गई और वह व्यक्ति अपने साथियों के साथ श्रोताओं की अगली पंक्ति में बैठ गया या बैठा दिया गया। वहीं मुझे बतलाया गया कि वह व्यक्ति उत्तर प्रदेश सरकार के पार्लियामेण्ट्री सेक्रेटरी चौधरी चरण सिंह हैं।

दुबला-पतला आदमी, वैसे ऊपर से व्यक्तित्व-विहीन दिखने वाला, खादी का

* दिवंगत साहित्यिक विभूति एवं भूतपूर्व सांसद

कुर्ता-धोती, सिर पर गांधी-कैप—लेकिन आवाज में एक तरह का तीखापन, व्यवहार में अधिकार की भावना।

नवजीवन से इस्तीफा तो दे दिया था लेकिन भविष्य की गतिविधियों के सम्बन्ध में एक तरह की लापरवाही से भरा अनिश्चय था। वैसे मेरे त्याग-पत्र के बाद उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री पं. गोविन्द बल्लभ पंत ने मुझे बुलाकर आश्वासन दिया था कि मुझे लखनऊ से बाहर वापस न जाने देंगे। अपने निजी सचिव द्वारा प्रदेश के डायरेक्टर ऑफ़ इन्फार्मेशन के पद का भी प्रस्ताव उन्होंने रखवाया था। उस प्रस्ताव को मैंने अस्वीकार कर दिया था। सरकारी नौकरियों की मैं कल्पना ही नहीं कर सकता था। मेरठ से मेरे लखनऊ लौटने के बाद पं. गोविन्द बल्लभ पंत ने मुझे फिर याद किया। उत्तर प्रदेश सरकार ने देश की स्वतन्त्रता के बाद सर्वप्रथम देश के आर्थिक ढांचे में आमूल परिवर्तन करने वाला जमींदारी उन्मूलन बिल हाथ में लिया था। पंत जी ने उसमें मेरा सहयोग चाहा, उस बिल के प्रचार तथा जानकारी देने का भार मेरे कंधों पर डालकर। सहयोग देने वाला पंत जी का प्रस्ताव मैंने स्वीकार कर लिया—उस बिल के प्रचार-विभाग का गैर-सरकारी अध्यक्ष, कार्यकर्ता एवं सब कुछ बनकर छह महीने की अवधि के लिए। और उन्हीं दिनों मैं चौधरी साहब के निकट सम्पर्क में आया।

चौधरी चरण सिंह पार्लियामेण्ट्री सेक्रेटरी थे और पार्लियामेण्ट्री सेक्रेटरी के पद को मैं उपेक्षित समझता था। मैं राजनीतिक एवं प्रशासनिक मामलों में कोरा रहा हूं। मैंने जीवन में साहित्य के सृजनात्मक पक्ष को ही महत्ता दी है, बाकी जो कुछ मेरे सामने आया, वह बड़े औपचारिक ढंग से जीवन के अध्ययन के क्रम में मैंने ग्रहण तो किया है, लेकिन मैं उसमें डूब नहीं सका। चौधरी चरण सिंह की देखभाल में यह प्रचार-व्यवस्था थी। यह प्रचार भार संभालने के दो-दिन बाद मुझे चौधरी चरण सिंह से बातें करने का मौका मिला, यानी उनसे व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित हुआ। उसके बाद जो कुछ हुआ, वह तो बड़े स्वाभाविक रूप से हुआ, यानी हम दोनों के दृष्टिकोण अलग-अलग, कार्य करने के ढंग अलग-अलग। चौधरी चरण सिंह वैसे तो साधारण पार्लियामेण्ट्री सेक्रेटरी थे, लेकिन मुझे यह पता नहीं था कि जमींदारी-उन्मूलन की क्रांतिकारी और मौलिक योजना उनके विभाग की उपज थी या उसमें उनका प्रमुख योगदान था।

स्वाभाविक रूप से उस व्यक्ति के पास एक सबल और न झुकने वाला अहं होना ही चाहिए था। मैं 'चित्रलेखा' एवं 'टेढ़े-मेढ़े रास्ते' उपन्यासों का लेखक, मन ही मन अपने को अमर साहित्यकारों की पंक्ति में समझने वाला व्यक्ति—किसी के आगे झुकना मेरी प्रकृति में ही नहीं था। छह महीने के स्थान पर तीन महीने बाद ही मैंने पंत जी को अपना त्याग-पत्र दे दिया। उनके बहुत आग्रह पर मैंने अपना त्याग-पत्र तो वापस ले लिया लेकिन दफ्तर में औपचारिक रूप से घण्टे-आध-घन्टे के लिए ही जाता था। मेरा काम चौधरी चरण सिंह के जिम्मे पड़ गया।

हम दोनों का वह प्रथम सम्पर्क गलतफहमियों से युक्त था। चौधरी साहब को साहित्य और कला में कोई विशेष रुचि नहीं थी। इसलिए यदि वह मुझे उतना बड़ा आदमी नहीं समझ सके, जितना बड़ा आदमी मैं अपने को समझा जाना चाहता था, तो उसमें चौधरी साहब का कोई दोष नहीं था; और मुझे राजनीतिक एवं प्रशासनिक मामलों में दिलचस्पी नहीं थी, इसलिए मैं उन्हें उतना महत्वपूर्ण राजनीतिज्ञ या प्रशासक नहीं समझ सका, तो इसमें मेरा भी दोष नहीं था। बहरहाल, इतना तय है कि इस तरह अलग होने के बाद मेरे अन्दर चौधरी चरण सिंह के प्रति न सौहार्द का भाव था, न आदर का। चौधरी साहब के मन की बात तो मैं नहीं कह सकता, लेकिन इस संबंध में वह शायद मुझसे अधिक उदार थे, इसका पता मुझे कुछ महीनों बाद ही लग गया।

जमींदारी उन्मूलन बिल के पास होने के बाद ही चौधरी चरण सिंह पार्लियामेण्ट्री सेक्रेटरी के पद से उठकर मंत्रिमंडल में ले लिये गए और वित्तमंत्री बन गए। जमींदारियां तेजी के साथ गायब होने लगीं। ताल्लुकेदारी और जमींदारी परम्परा का महत्वपूर्ण सरकारी विभाग, कोर्ट ऑफ वार्ड्स, खत्म कर दिया गया। कोर्ट ऑफ वार्ड्स के मैनेजरों की नौकरियां खत्म हो गईं। मेरे चचाजात छोटे भाई, दिवंगत श्री परमात्माशरण वर्मा भी कोर्ट ऑफ वार्ड्स के मैनेजर थे—बड़े शानदार आदमी, सरकारी दबदबे में ताल्लुकेदारों का कान काटने वाले। वह एक दिन घबराये हुए मेरे यहां आए। चेहरे पर हवाइयां उड़ रहीं थीं। उन्होंने मुझे बताया कि कोर्ट ऑफ वार्ड्स के मैनेजरों को पी. सी. एस. का पद देकर कलेक्शन आफिसर बनाने की योजना चौधरी चरण सिंह ने बनाई है, लेकिन उन्होंने जिन मैनेजरों को इण्टरव्यू में बैठने की अनुमति दी है, उनमें उनका नाम नहीं है। बदनाम और बेईमान समझे जाने वाले लोगों को अनुमति नहीं मिली है। मेरे भाई के खिलाफ यह गंभीर आरोप था।

मुझे आशा तो नहीं थी कि इसमें मैं अपने छोटे भाई की कुछ सहायता कर पाऊंगा, लेकिन मैंने तत्काल चौधरी साहब को फोन मिलाकर उनसे मिलने का समय मांगा। उन्होंने मुझे शाम का समय दिया। मैं शाम के समय चौधरी साहब के बंगले पर पहुंचा। बड़ी आत्मीयता के साथ वह मुझे मिले। फिर उन्होंने मुझसे पूछा—"कैसे कष्ट किया वर्मा जी !" मैंने केवल इतना कहा—"मैं अपने छोटे भाई परमात्माशरण वर्मा···" और इसके पहले कि मैं अपनी बात पूरी करूं, वह बोल उठे—"वह कोर्ट ऑफ वार्ड्स का मैनेजर। निहायत बेईमान और भ्रष्ट आदमी है। मैंने उसे भले अफसरों की सूची में नहीं रखा है।" जैसे हरेक आदमी का नाम, उसकी योग्यता और अयोग्यता उन्हें हिफ्ज हो।

मैं भड़क उठा—"तो फिर आप उस पर बेईमानी और भ्रष्टाचार का मुकदमा चलाकर उसे जेल भेज दीजिए—मुझे प्रसन्नता होगी। लेकिन बिना सबूत के किसी आदमी की आजीविका छीनने का दण्ड देना तो मेरी समझ में आता नहीं। वैसे आप

मिनिस्टर हैं। "चौधरी साहब कुछ सकपकाये, फिर कुछ बल लगाकर कहा—"सबूत तो किसी के खिलाफ कुछ नहीं है, लेकिन फलां डिप्टी मिनिस्टर ने मुझसे शिकायत की है।" मैंने तमक कर कहा—"फलां मिनिस्टर और उनके अगुवा फलां मिनिस्टर, दोनों ही निहायत बेईमान आदमी हैं। उनकी बात आप सही समझते हैं, और मैं आपसे कहूं कि मेरा छोटा भाई बेईमान हो ही नहीं सकता, तो आप मेरी बात पर विश्वास नहीं करोगे।" चौधरी साहब कुछ सकपकाये, फिर उठते हुए उन्होंने कहा—"अच्छी बात है, आप जाइये, मैं इस पर विचार करूंगा।" मैं चला आया। तीसरे दिन मेरे भाई ने खबर दी कि उसे इण्टरव्यू में सम्मिलित होने का सरकारी आर्डर मिल गया। यह खबर पाकर एकाएक चौधरी चरण सिंह मेरी नजर में बहुत ऊपर उठ गए।

हरेक आदमी का सत्ता के प्रति मोह रहता है—इस मोह के भटकाव से मैं भी नहीं बचा हूं। सन् 1950 में जब दिल्ली कान्स्टीटुएण्ट असेम्बली का काम समाप्त हो गया, तब फिर से पार्लियामेण्ट का काम आरम्भ हुआ। प्रादेशिक विधान सभाओं से सदस्य कान्स्टीटुएण्ट असेम्बली में भेजे गए थे, वे वापस आ गए और उनके स्थान पर अन्य नामों के चुनाव का प्रश्न सामने आया। मैंने अपना नाम भी प्रत्याशी के तौर पर भेज दिया था। उत्तर प्रदेश की राजनीति में 'नवजीवन' के प्रधान सम्पादक की हैसियत से मेरा नाम आ चुका था। उत्तर प्रदेश से शायद सैंतीस या अड़तीस आदमी भेजे जाने वाले थे—दो-ढाई सौ आदमी प्रत्याशी थे। उनके चुनाव का प्रश्न पार्लियामेण्ट्री बोर्ड के सामने आया। पार्लियामेण्ट्री कमेटी ने प्रत्याशियों की छंटनी आरंभ की, पैंतालीस नामों की तालिका तक पहुंचते-पहुंचते तो मेरा नाम था। फिर इसके बाद उन पैंतालीस नामों में चुनाव का क्रम आया। पार्लियामेण्ट्री बोर्ड के प्रत्येक सदस्य ने अपने-अपने अनुयायी चुन लिये। मैं किसी का अनुयायी था ही नहीं, मेरा नाम गायब हो गया। उसके बाद एक अजीब कटुता और विद्रोह का दौर आया मेरे ऊपर, जिसकी अलग कहानी है।

सत्ता का मोह मुझसे छूटा नहीं। सन् 1952 के आम चुनाव के लिए, प्रत्याशी के रूप में, मैंने फिर कांग्रेस पार्लियामेण्ट्री बोर्ड के सामने अपना आवेदन-पत्र भेज दिया—हमीरपुर सीट के लिए। वहां मैंने कुछ समय तक वकालत की थी, वहीं मैंने 'चित्रलेखा' लिखना आरम्भ किया था। बोर्ड के किसी सदस्य से मैं मिला नहीं, किसी से कुछ कहा नहीं। कौन-कौन बोर्ड का सदस्य है, इसकी जानकारी हासिल करने की भी मैंने जरूरत नहीं समझी। और एक दिन मुझे चौधरी चरण सिंह का फोन मिला। मैं उनके यहां गया। उन्होंने मुझे बताया कि सब स्थानों के नाम चुन लिये गए है—एक चुनाव क्षेत्र बचा है, मथुरा-आगरा तथा किसी एक और जिले के भागों का सम्मिलित चुनाव-क्षेत्र। अगर मैं चाहूं तो उस क्षेत्र का टिकट ले लूं। वैसे अगर उस समय वह टिकट मैंने ले लिया होता, तो चुन लिया गया होता, लेकिन राजनीति से अलग का

आदमी होने के कारण मैंने वह टिकट लेना अस्वीकार कर दिया—चौधरी साहब को बहुत-बहुत धन्यवाद देते हुए। उनसे बात करने पर मुझे यह आभास हुआ कि उन्होंने व्यक्तिगत रूप से हमीरपुर क्षेत्र से मेरे नाम का पूरा समर्थन किया था लेकिन जनतांत्रिक परम्पराओं से विवश वह मेरा नाम स्वीकृत नहीं करा पाये थे।

आज जब सोचता हूं तो लगता है कि शायद अन्दर ही अन्दर चौधरी चरण सिंह में एक तरह की सद्भावना आ गई थी मेरे प्रति, या फिर उनमें न्याय के प्रति एक प्रबल भावना थी। चौधरी चरण सिंह के प्रति मुझमें एक तरह का आदर भाव जाग पड़ा—इस घटना के बाद। लेकिन फिर भी मैं चौधरी साहब से दूर ही रहा। कारण शायद यह था कि मेरे अन्दर अहं का एक पागलपन हमेशा से रहा है और नियति के हिलकोरों में डूबता-उतराता बड़े विवश ढंग से बह रहा था। 1953 में मुझे आकाशवाणी दिल्ली जाना पड़ा। वहां दो-चार बार इस्तीफे दिए और वापस लिये। सन् 1956 में फिर लखनऊ लौटा और सन् 1957 में आकाशवाणी से त्याग-पत्र देकर मैं सृजनात्मक साहित्य में लग गया।

मैं चौधरी चरण सिंह से घनिष्ठता का सम्बंध कभी स्थापित नहीं कर सका। हम दोनों के क्षेत्र एक-दूसरे से नितान्त अलग, कहीं भी दोनों के स्वार्थों में सामंजस्य नहीं, न टकराहट का प्रश्न। एक-आध बार को छोड़कर मैं कभी उनके घर नहीं गया—मैंने कभी न उनसे कुछ मांगा, न चाहा। लेकिन वैसे मैंने हमेशा उन्हें अपना निकटस्थ समझा। इसका यह कारण है, मैंने यह अनुभव किया कि मेरी ही भांति उनमें भी अहं का एक पागलपन है, और सच बात यह है कि अहं का यह पागलपन मुझे बड़ा प्यारा लगता है।

मुझे याद है भारत के उस समय के प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू से चौधरी चरण सिंह के मतभेद की बात। श्री जवाहरलाल नेहरू पर समाजवाद का गहरा रंग था और वह देश में को-ऑपरेटिव फार्मिंग पर जोर दे रहे थे। चौधरी चरण सिंह स्वयं किसान वंश के आदमी थे। उन्हें इस सामूहिक खेती पर सिद्धांततः विश्वास न था। मतभेद अधिक उभरा—पत्रों में इस मतभेद की बातें बढ़ा-चढ़ाकर छपीं। ऐसा लगता था कि चौधरी चरण सिंह कांग्रेस से अलग हो जायेंगे—कांग्रेस पर पंडित जवाहरलाल नेहरू का एकछत्र प्रभुत्व था। लेकिन ऐसा कुछ न हुआ। भारतीय वातावरण में यह सामूहिक खेती की परिकल्पना ही असंभव थी। मुझे आश्चर्य तो इस बात पर था कि चौधरी चरण सिंह को कांग्रेस के अन्दर रहकर जवाहरलाल का खुल्लम-खुल्ला विरोध करने का साहस कैसे पड़ा, अन्य कांग्रेसी नेता तो गुलामी के बंधनों में जकड़े हुए थे। लेकिन चौधरी चरण सिंह का यह विरोध उनके लिए कांग्रेस में उन्नति करने के मार्ग में कुछ समय के लिये अवरोध ही रहा।

अपने ऊपर असीम विश्वास से युक्त, स्वभाव से शांत और संयत लेकिन न झुकने, न दबने वाली प्रवृत्ति से ग्रस्त, पंडित गोविन्द बल्लभ पंत के उत्तर प्रदेश से

केन्द्र में गृहमंत्री बन जाने के बाद चौधरी साहब ने राजनीतिक संघर्षों के क्षेत्र में प्रवेश किया। पंत जी के बाद डा. सम्पूर्णानंद प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। डा. सम्पूर्णानंद एक सबल अहम् से युक्त थे। स्वभावतः चौधरी चरण सिंह से उनकी नहीं बनी। सम्पूर्णानंद के मुख्यमंत्रित्व काल में उनसे मतभेदों के कारण चौधरी चरण सिंह ने प्रदेश के मंत्रिमंडल से त्याग-पत्र दे दिया। उस त्यागपत्र की बात मैं केवल चौधरी साहब के दिलचस्प पहलू को प्रस्तुत करने के लिए लिख रहा हूं।

मेरे एक मित्र हैं, पंडित बलभद्र प्रसाद मिश्र, जो किसी समय इलाहाबाद के दैनिक 'भारत' के प्रधान सम्पादक थे। लेकिन बाद में सूचना विभाग में डायरेक्टर के पद पर आ गए थे। पंडित बलभद्र प्रसाद का एक पहलू था—गो-पालन एवं गो-सेवा। एक दिन कुछ प्रफुल्लित, कुछ उत्तेजित से वह मुझसे मिले और उन्होंने मुझे सूचना दी कि उन्हें एक अच्छी दुधारू गाय मुफ्त में मिल गई है। उन्होंने बताया कि चौधरी चरण सिंह ने मंत्रिपद से त्यागपत्र देने के बाद उन्हें बुलाया। मिश्र जी से उन्होंने कहा, "मिश्र जी, मैंने मंत्रिपद से त्याग-पत्र दे दिया है। बंगला गया, नौकर-चाकर गए, मेरी गाय की देखभाल कौन करेगा। हमारे यहां गाय बेची नहीं जाती। इसलिए आप यह गाय ले जाइए, आप सुपात्र हैं।"

मैं पंडित बलभद्र प्रसाद मिश्र की बात सुनकर दंग रह गया। इतने लंबे काल तक उत्तर प्रदेश सरकार के विभिन्न विभागों में मंत्री रह कर भी वह अपने को गाय रखने में असमर्थ पा रहे थे। दूसरों से अपने लिये लेना जैसे उनकी प्रकृति में न था। चौधरी चरण सिंह मेरी नज़रों में बहुत ऊंचे उठ गए। इतना ईमानदार आदमी मैंने कभी न देखा था।

राजनीति में वह आर्थिक मामलों में बेईमानी कभी भी बर्दाशत नहीं कर सके। परिस्थितिवश समय-समय पर उन्हें इस तरह के आदमियों से समझौता करना पड़ा। उन्होंने अपनी पार्टियां बनाईं—अनेक घनिष्ठ सहयोगी उन्होंने बनाए लेकिन उनकी बेईमानियां जाहिर होते ही अपने सहयोगियों से वह हट गए। पार्टियों के लोगों ने उनका साथ छोड़ दिया।

गजब की प्राण-शक्ति मिली है उस आदमी को—जैसे अपने अहम् पर तथा अपनी योग्यता पर उसे असीम और अटूट विश्वास हो।

# 35

# वह ग्रामीण जनता के हितों के जागरूक प्रहरी थे

वीरेन्द्र वर्मा*

चौधरी चरण सिंह से मेरी प्रथम भेंट सन् 1945, मेरठ में उस समय हुई थी, जब मैं उनसे बी. ए., एल. एल. बी. करने के पश्चात् सक्रिय राजनीति में आने के विषय में परामर्श हेतु मिला था। उन्होंने राजनीति में पदार्पण के लिए प्रोत्साहित करते हुए मुझे सलाह दी थी कि "राजनीति में कभी भी कुर्सी के पीछे मत भागना।" निस्वार्थ सेवा के इस मंत्र को मैंने अपने सार्वजनिक जीवन में धारण कर सदैव उनके शब्दों का पालन करने का हृदय से प्रयास किया है। यह समय ऐसा था जब ग्रामीण क्षेत्रों का संसद व विधानसभा में प्रतिनिधित्व नगण्य सा था। हम जैसे किसान घरों के कार्यकर्ताओं में बेजबान किसान मजदूर की आवाज बनकर कार्य करने के भाव उत्पन्न होने लगे थे। तब चौधरी चरण सिंह का व्यक्तित्व प्रेरणादायक एवं अपने पक्ष में सबल स्तम्भ का कार्य करता था।

चौधरी साहब आर्य समाजी संस्कारों से प्रेरित थे। सौभाग्यवश मेरा तो जन्म ही आर्य परिवार में हुआ था। अतः वैचारिक रूप में चौधरी साहब का व्यक्तिगत, धार्मिक व राजनैतिक कार्यक्रम व आस्था मुझे अपने विचारों के अनुरूप लगती थी। किसानों व ग्रामीणों के मुद्दे हमारे साझे कार्यक्रम के आधार व मूल थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश में जमींदारी प्रथा की समाप्ति का अभियान चलाया गया। चौधरी चरण सिंह उस समय उत्तर प्रदेश के राजस्व मंत्री थे। उन्होंने जमींदारी उन्मूलन कार्यक्रम को अत्यंत प्रभावी व यथार्थ का मूर्त रूप देने का भागीरथ प्रयास किया। उन्हीं की दूरदर्शिता एवं प्रशासनिक क्षमता का परिणाम है कि अन्य प्रदेशों की अपेक्षा उत्तर प्रदेश में सही अर्थों में जमींदारी प्रथा समाप्त होकर किसानों को भू-स्वामित्व प्राप्त हुआ। जनपद मुज़फ्फरनगर ने चौधरी साहब के इस महान् कार्य में अग्रणीय भूमिका निभाते हुये, प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त करने का गौरव प्राप्त किया।

चौधरी साहब को सर्वश्री गोविन्द वल्लभ पंत, डा. सम्पूर्णानन्द, चन्द्रभानु गुप्त,

---

* भूतपूर्व राज्यपाल

कमलापति त्रिपाठी, हेमवती नन्दन बहुगुणा एवं नारायणदत्त तिवारी के मुख्यमंत्रित्व कालों में, उनके सहयोगी अथवा विरोधी पक्ष की भूमिका निभाते मैंने निकट से देखा था। उनकी कुशल व्यक्तता एवं निष्कपट व्यवहार का सभी पर प्रभाव था। राजनीति में हम दोनों कई बार अलग-अलग दलों में रहे किन्तु किसान व ग्रामीण अर्थव्यवस्था के प्रति झुकाव होने के कारण वैचारिक एकता सदैव निर्बाध रूप से स्थापित रही। अक्टूबर 1967 में इंदौर में भारतीय क्रान्ति दल की स्थापना के समय मैं उनका सहयोगी था। जनपद मुजफ्फरनगर से प्रदेश में होने वाले आगामी विधानसभा चुनावों के लिए उन्हें 10 लाख रुपये की राशि भेंट कर, सभी आठों विधानसभा सीटें हमने जीती थीं। चौधरी साहब उस समय प्रायः कहा करते थे कि "इस विशाल प्रदेश के कायाकल्प का मेरा स्वप्न पूरा हो सकता है यदि वीरेन्द्र वर्मा जैसे चार सहयोगी मुझे प्राप्त हो जायें।"

चौधरी चरण सिंह प्रदेश व देश की ग्रामीण जनता के हितों की रक्षा के प्रति सदैव जागरूक प्रहरी की भूमिका निभाते रहे। इसके लिए उन्होंने राजनैतिक खतरों को उठाते हुए, कांग्रेस से विमुख होकर जन कांग्रेस, भारतीय क्रान्ति दल, भारतीय लोकदल, जनता पार्टी, जनता पार्टी (एस), दलित मजदूर किसान पार्टी, लोकदल जैसे संगठन खड़े करने का प्रयास किया। यह उनके अदम्य साहस, आत्मविश्वास एवं संघर्ष शक्ति का द्योतक है। सन् 1984 में मुझे उन्होंने लोकदल से राज्यसभा के लिए निर्वाचित करवाया, तत्पश्चात् उनके अंतिम समय तक निकट सम्पर्क बना रहने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। वे अपनी आर्थिक नीतियों व कार्यक्रमों पर अन्तिम सांस तक डटे रहे। समृद्धि व विकास तब तक अधूरा रहेगा जब तक कि गांव में खुशहाली नहीं आती, उनकी यह विचारधारा आज भी हमें आन्दोलित करती है।

जब अतीत पर दृष्टि जाती है तो श्वेत वस्त्रों में किसान नेता चौधरी चरण सिंह की प्रतिमूर्ति आंखों के समक्ष सहज ही उभर आती है। वे गौरवपूर्ण लम्हे पुनर्जीवित हो उठते हैं, जब जातिविहीन, साम्प्रदायिकतामुक्त, शिक्षित समाज एव प्रदेश के चहुंमुखी विकास का स्वप्न देखने वाले नेताओं का उत्तरप्रदेश में वर्चस्व था। वास्तव में चौधरी साहब एक ईमानदार किसान नेता, चरित्रवान, ग्रामीण अर्थव्यवस्था के पक्षधर, निर्भीक व जागरूक संगठनकर्ता तथा स्वच्छ कुशल प्रशासन के प्रति समर्पित रहने वाले प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व के रूप में प्रतिष्ठित होकर अमर हुये हैं। उनका आर्थिक दर्शन एवं कृषि नीति, राजनीतिक कार्यकर्ताओं के लिए लम्बे समय तक पथ-प्रदर्शन करते रहेंगे। चौधरी साहब जैसे सर्वतोमुखी प्रतिभा सम्पन्न नेताओं का आज देश में अकाल-सा है। उनकी कृषि नीति पर गहन अध्ययन कर, समयानुकूल कार्यक्रम बनाने की भी आवश्यकता है। चौधरी चरण सिंह जी के विचार व आदर्श युवा पीढ़ी को प्रेरित करते रहेंगे। उनके जीवन की सादगी व उनके चरित्र से प्रेरणा पाकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सुधार के लिए, पुनः समर्पण भाव, सामाजिक व राजनीतिक नेताओं और कार्यकर्ताओं में उत्पन्न हो सके, ऐसी मेरी कामना है।

36

# राजनीतिज्ञ, समाज सुधारक व अर्थशास्त्री का समन्वित स्वरूप

नाथूराम मिर्धा*

भारत की राजनीति में शामिल होने का मेरा और चौधरी चरण सिंह साहब का रास्ता, उद्धेश्य और परिवेश एक था। वह भी गरीब किसान के घर पैदा हुए थे और मेरे गांव में गरीबी का दानव पूरे जोरों पर था। चौधरी साहब ने भी कांग्रेस के राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल होकर किसान की दरिद्रता मिटाने का स्वप्न देखा था और मेरे सामने भी इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं था। हम दोनों का परिवेश गरीबी का था और दोनों का उद्देश्य भी ग्रामीण क्षेत्र की गरीबी को दूर करना था। इसके लिए हम दोनों ने कांग्रेस का रास्ता अपनाया। हम दोनों में यह समानता थी, पर दोनों के परिवेश में बड़ा अंतर भी था। उत्तर प्रदेश के किसानों ने शोषण की वह भयंकरता नहीं देखी थी, जो राजपूताना का किसान देख रहा था। दूसरे उत्तर प्रदेश का वातावरण अधिक जागरूक और शिक्षित था, लेकिन हमारे यहां यह बात नहीं थी। अतः हमको अपने किसानों को निर्भीक तथा साहसी भी बनाना था और उनकी बहबूदी के लिए कानून भी।

चौधरी साहब ने सन् 1939 तथा 1945 में किसानों की स्थिति और उनके सुधार की दिशा पर लेख लिख कर हमारा ही नहीं, अन्य प्रान्तों के किसानों व उनके नेताओं का रास्ता साफ किया था। इस प्रकार, हम सभी लोग उनको किसान-हितों का सबसे बड़ा रक्षक मानने लगे थे। हम दोनों के कार्य-क्षेत्र दूर थे, विचार की बड़ी भारी एकता थी। किसानों की आर्थिक बहबूदी के लिए चौधरी साहब ने जो फार्मूला पेश किया था, उससे पंजाब में चौधरी छोटूराम जी ने लाभ उठाया और मैंने राजस्थान

* सांसद, उपनेता, कांग्रेस संसदीय दल (लोकसभा)

में। हम जान गये थे कि जमीदारों के पंजे से किसानों को छुड़ाये बिना किसानों की तरक्की नहीं हो सकती। इसलिए श्री चरण सिंह साहब ने कांग्रेस मंत्रिमंडल में रहकर जमींदारी-उन्मूलन कानून बनाया और पास किया। मैंने भी, सबसे पहले, जोधपुर राज्य में मंत्री की हैसियत से, कानून बनाकर किसानों को भूमिधर बनाया और उनको लगान का दस-गुणा भी न देना पड़ा। बाद में यही कानून पूरे राजस्थान राज्य में लागू हो गया। चौधरी साहब ने किसानों को रिश्वतखोर पटवारियों और सरकारी अधिकारियों के शोषण से छुटकारा दिलाने में पहल की और साहस का परिचय दिया। इससे चौधरी साहब का कद बहुत ऊंचा हुआ और भारत की राजनीति में किसान एक अहम् भूमिका निभाने गणतंत्र भारत की संसद में चौधरी चरण सिंह के रूप में पहुंच गया।

मैंने राजस्थान में किसानों को जागीरदारों के डाकुओं से मुक्ति दिलाने, उनके आंतक को समाप्त करके किसानों को सहज जीवन दिलाने, उनको कृषि-विषयक साधनों से सम्पन्न करने, उनके मवेशियों के लिए चरागाह सुरक्षित कराने, उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार लाने और उनको स्वतंत्र भारत का स्वतंत्र नागरिक महसूस कराने के अवसर उपलब्ध कराये।

श्री चरण सिंह साहब को ऐसा महसूस होने लगा था कि कांग्रेस का एक वर्ग किसानों की अपेक्षा उद्योगपतियों के अधिक नज़दीक है। इसी दौरान पंडित जवाहर लाल नेहरू जी ने, कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में सहकारी खेती की बात उठा दी। चौधरी साहब की मान्यता थी कि इससे किसान बरबाद हो जायेगा। अतः आपने भरे अधिवेशन में पंडित जी के प्रस्ताव का सउदाहरण विरोध किया। नागपुर कांग्रेस अधिवेशन से ही पंडितजी को किसान मसीहा चौधरी चरण सिंह के बारे में पूरा ज्ञान हुआ। (इस अधिवेशन में जब चौधरी साहब सहकारिता के बारे में विरोध में बोले, तभी पंडितजी ने पूछा कि ये कौन है, तभी बताया गया कि ये उत्तर प्रदेश से कांग्रेस नेता चौधरी चरण सिंह हैं)। इससे उनके लिए कांग्रेस का द्वार तो अवश्य संकरा होने लगा था, पर देश में, विशेषतः उत्तर प्रदेश में चौधरी साहब किसानों के सबसे बड़े हितैषी बनकर उभरे। इसी के बल पर वह उत्तर प्रदेश में संविद सरकार का गठन करके कई पिछड़ी जातियों के प्रतिनिधियों को मंत्रिमंडल में शामिल होने का अवसर प्रदान कर सके। यह भारत के राजनीतिक जीवन में नई शुरूआत थी। इसका प्रभाव आगे चलकर केन्द्र पर भी पड़ा।

मैंने "राष्ट्रीय कृषि आयोग" के अध्यक्ष के रूप में एक बड़ी रपट केन्द्रीय सरकार के सामने पेश की। यदि उसको भारत सरकार ईमानदारी के साथ लागू करती तो भारत के किसानों का बड़ा भारी हित होता।

श्री चरण सिंह साहब साहसी, नीति-कुशल, त्वरित-निर्णय लेने की शक्ति, अपने जीवन तथा विचारों में पवित्र और देश के बहु-संख्यक वर्ग के प्रबल हितैषी थे। मैंने

उनको गृह मंत्री तथा प्रधान मंत्री के रूप में देखा है। वे अपने सहभागियों के विचारों को धैर्य के साथ सुनते थे। वे अनेक उन कमजोरियों से मुक्त थे, जो प्रायः राजनीतिक कार्यकर्ताओं में मिलती है। रिश्वतखोरों और ब्लैकमेल करने वालों से तो वह दूर रहते ही थे, पैसे वालों के दुष्प्रभाव को भी उन्होंने अपने पास फटकने नहीं दिया। इसी कारण चौधरी साहब के जीवन की लोग "सफेद चद्दर" से तुलना करते हैं।

चौधरी चरण सिंह साहब एक व्यक्ति नहीं विचार थे। जिनकी आर्थिक नीति पर यदि ईमानदारी से अमल किया जाए तो किसान-मजदूर ही खुशहाल नहीं होंगे, बल्कि सम्पूर्ण देश खुशहाल हो सकता है। जो जमीन से उठकर सत्ता के उच्चतम शिखर पर पहुंचा, जिसने करोड़ों बेजुबान शोषित-पीड़ितों की आवाज को सत्ता के उच्च गलियारे में पहुंचाया और जिसकी वजह से ही आज हिन्दुस्तान की कोई भी पार्टी चाहे वामपंथी विचारधारा वाली हो या दक्षिणपंथी, सभी किसान और उनकी समस्याओं का राग अलाप रही हैं। वह चौधरी चरण सिंह जी इंसानों में हीरा थे। उनसे मेरा सम्बंध देश आजाद होने से पहले आजादी की लड़ाई के दौरान से रहा है।

मेरठ जिले के साधारण किसान परिवार में जन्मे चौधरी साहब सच्चे अर्थों में गांधीवादी नेता थे। गांधी जी की तरह ही वे कुटीर व लघु उद्योगों के विकास के हामी रहे। चौधरी साहब ने अपने राजनैतिक जीवन की शुरूआत में ही गरीब और किसान पर हो रहे शोषण, अत्याचार तथा भ्रष्टाचार को देखा और उसके खिलाफ उन्होंने जो लड़ाई छेड़ी, उसके लिए वह जीवन पर्यन्त लड़ते रहे।

चौधरी साहब ने कभी सिद्धांतों से समझौता नहीं किया। सिद्धांतों की खातिर ही आपने प्रधानमंत्री के पद पर रहते हुए भी लोकसभा भंग करने की सिफारिश की थी। यदि वह श्रीमती इंदिरा गांधी से घर जाकर या फिर टेलीफोन पर वार्ता करके उन्हें समर्थन के लिए धन्यवाद दे देते तथा प्रमुख इंकाइयों पर चल रहे मुकदमे वापस ले लेते तो लोकसभा में उन्हें इंका का समर्थन भी मिल जाता और प्रधानमंत्री पद पर बने भी रह सकते थे। किन्तु चौधरी साहब ने इस सम्बंध में श्रीमती गांधी से बात करना भी सिद्धान्तों के खिलाफ समझा। जिसका परिणाम यह हुआ कि चुनाव कराना अपरिहार्य हो गया, जिसमें लोकदल को पराजय का मुंह देखना पड़ा।

चौधरी चरण सिंह साहब एक राजनीतिज्ञ के साथ-साथ समाज सुधारक और अर्थशास्त्री भी थे। उनकी स्पष्ट मान्यता रही कि जब तक देश में जातिवाद रहेगा, तब तक देश विकास नहीं कर सकता और पिछड़ा ही रहेगा। इसी बात को ध्यान में रखकर आपने आज से करीब 4 दशक पहले अन्तर्जातीय विवाह करने वालों को सरकारी सेवाओं में आरक्षण देने की बावत नेहरू जी को पत्र भी लिखा। यदि उस समय चौधरी साहब की इस सलाह पर गौर कर लिया जाता तो आज देश के सामने जातीयता एवं क्षेत्रीयता की समस्या नहीं होती।

चौधरी साहब सदैव ही स्पष्टवादी रहे। वोट की खातिर व्यावहारिकता को छिपा कर नाटकीयता का प्रदर्शन उन्होंने कभी नहीं किया। चाहे पंजाब समस्या हो या फिर ईसाई मिशनरीज का सवाल हो, उनके विचार स्पष्ट और दो टूक रहे। यह अलग बात है कि उन पर सत्ताधारियों ने गौर नहीं किया।

चौधरी साहब का जीवन आडम्बरों तथा सुख-सुविधाओं से हटकर सादगीपूर्ण एवं कुछ मान्यताओं पर आधारित रहा। यही कारण है कि गांव के गरीब मजदूर-किसान सभी ने उन्हें अपने अधिकारों का रक्षक और मसीहा माना।

उदात्त मानवीय मूल्य और लोकहित के साथ जुड़ी उनकी राजनीति ने मुझे उनकी ओर आकर्षित किया था। भारत की कृषि, किसान और गरीबों से सम्बंधित उनकी नीति आज भी प्रासंगिक है। सौभाग्यवश मुझे उनके प्रधानमंत्री काल में उनके मंत्रिमंडल में सिंचाई राज्य मंत्री के रूप में तथा वित्त राज्य मंत्री के रूप में कुछ महीने कार्य करने का मौका मिला। मैंने भी श्री चरण सिंह साहब के सिद्धांतों को आधार मानकर, अपने राजनीतिक जीवन में कृषि और कृषि उद्योगों पर निर्भर करने वाली देश की बहुसंख्यक जनता का हित करने व उसको सुखी और समृद्धि की दिशा में आगे बढ़ाने का संकल्प कर रखा है, पूरा करना ईश्वराधीन है।

दरअसल भारत मां के महान सपूत, देशभक्त, स्वतंत्रता सेनानी और सर्वहारा के मसीहा चौधरी चरण सिंह जी इस देश की अमिट थाती थे, कोटि-कोटि जन के प्रेरणा स्रोत थे। जीवन में सौम्यता, सादगी, दीप्तीमान मुखमण्डल, कुशल राजनीतिज्ञ तथा ओजस्वी विचारों से ओत-प्रोत क्रान्तिकारी युग पुरुष चौधरी चरण सिंह साहब का यह व्यक्तित्व आज हमारा व आने वाली पीढ़ियों का पथ प्रदर्शक है। आज के परिवेश में चौधरी साहब की प्रासंगिकता और अधिक महत्वपूर्ण हो गई हैं

चौधरी साहब को गांवों, किसानों व गरीबों की उपेक्षा असहनीय थी। देश के विकास में खेती और खेतीहरों के महत्व को उन्होंने समझा था और उनकी कठिनाईयों का उनको पूरा अहसास था। यही कारण था कि अपने राजनैतिक जीवन में कृषि की विकास योजनाओं को सरकारी दस्तावेजों के हाशिए से बाहर निकाल, उन्हें मूर्त रूप देने और किसानों/ निर्धनों में उनके अधिकारों की चेतना जागृत करने में चौधरी साहब का योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकता। गांधीवादी दर्शन से प्रभावित चौधरी साहब का स्वप्न था कि गांवों में खुशहाली हो, गरीबी और अशिक्षा की दासता से देहात के लोग स्वतंत्र हों, गांव के खेत खलिहान, कुटीर उद्योग धन्धे और हस्तशिल्प इस देश के विकास की प्रथम सीढ़ी हों। उनका मानना था कि हमारे देश की 80 प्रतिशत जनता गांवों में निवास करती है जो इस देश की नींव है और यदि वो ही मज़बूत नहीं होगी तो देश मज़बूत कैसे हो सकता है। इसीलिए इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने जीवन पर्यन्त संघर्ष किया, सत्ता से बाहर और सत्ता में रह कर भी। सत्ता के विकेन्द्रीकरण के लिए और लालफीताशाही के खिलाफ जो आवाज़ चौधरी

साहब ने बुलन्द की थी, वह आज समाज परिवर्तन व ग्राम्य विकास का पर्याय बन गई है। देहातों में आयी चेतना व जागृति की लहर और विकास एवं प्रगति की यह बदली आज इसका जीता जागता उदाहरण है। पंचायती राज्य की स्थापना, विकास खर्च का गांवों की ओर रुख, आज की आवश्यकता बन गई है और सरकार की नीति निर्धारण में चौधरी चरण सिंह साहब की प्रासंगिकता स्वतः ही जुड़ गई है।

आज चौधरी साहब के लिए सच्चे श्रद्धा सुमन यहीं होंगे कि हम सब मिलकर देश की एकता और ग्राम विकास के उत्थान का संकल्प लें, अपनी परम्पराओं, संस्कारों व मूल्यों को जीवन में साकार करें और धरती मां को अपने लहू से सींचने वाले किसानों, मज़दूरों और हस्तशिल्पियों के उत्थान के लिए अपना जीवन उत्सर्ग करें ताकि विकास और प्रगति की महक गांव की माटी में समा जाए।